

विज्ञापि

हम यह दिनांक अर्थात् मंगलवार १५८२ ई. १५८२ ई. को पुस्तकें बेचने के दिनांक के रूप में चुने हैं। हमें यह दिनांक चुनने का कारण है कि यह दिनांक अत्यंत ही सुखद है और इसका अर्थ है कि यह दिनांक अत्यंत ही सुखद है। हमें यह दिनांक चुनने का कारण है कि यह दिनांक अत्यंत ही सुखद है। हमें यह दिनांक चुनने का कारण है कि यह दिनांक अत्यंत ही सुखद है।

नामकितान्त	नामकितान्त	नामकितान्त	नामकितान्त
भाषा (इतिहास)	१ वन पर्व	नयेतसदीह	काव्य
महाभारत	२ विराटपर्व	तथाभये शेषक	गुरुसाहा
१ हिस्सा में आदिपर्व	३ उद्योगपर्व	रत्नायता नुलसी कृत	कृष्णलामार
राजापर्व, वनपर्व,	४ भीष्मपर्व	कसाती कारण्ड	विश्रामसागर
२ हिस्सा में विराटपर्व	५ द्रोणपर्व	१ बालकारण्ड	प्रमसागर
उद्योगपर्व, भीष्मपर्व	६ कर्णपर्व	२ अयोध्याकारण्ड	कृष्णशिवी
द्रोणपर्व,	७ शल्यपर्व-गहाध	३ आनरावकारण्ड	विजयशुक्लावली
३ हिस्सा में कर्णपर्व	८ भीष्मपर्व-वयसी-	४ किष्किन्धाकारण्ड	मनेकाय
शल्यपर्व, गहाध	९ शिकद्विशीकपर्वी	५ सुन्दरकारण्ड	सुन्दरीव पिगल
भीष्मपर्व, द्रोणपर्व	१० शांतिपर्व	६ लकाकारण्ड	कविकुलकल्पतरु
४ हिस्सा में शांतिपर्व	११ धर्मवशापदधर्मव	७ उत्तरकारण्ड	रत्नराज
शांतिपर्व, गहाध	मोक्षधर्मवदानधर्म	रामायणशब्दार्थकोष	सत्सई सदीक
५ हिस्सा में शांतिपर्व	१२ अश्वमेध	रामायणका इतिहास	सत्सई
दानधर्म, अश्वमेध,	वासक मुशलपर्व	रामायणकवितावली	समाविलास
आश्रमवासकपर्व	महाप्रस्थानन्यासोद्हन	रामायणगीतावली	नूलसी शब्दार्थ
मोक्षपर्व व महाप्र-	१३ हरिवंशपर्व	रामायणगीतावलीस	भजनावली
स्थानस्वरासोद्हनपर्व	रामायणरत्नविलास	विनयपत्रिका वा-सो	प्रेमरत्न
व हरिवंशपर्व,	रामायणनूलसीकृत	विनयपत्रिका वा-शि	युगुलाविलास
महाभारतपर्वपर्व	रामायणसदीकमयस	पुराण	चित्रचन्द्रिका
अश्वमेधवासी	नलशैपिकाकोशआदि	देवी भागवत	बाह्यभासावत्सवप्र
१ आदिपर्व	नक्षत्रधर्मरापीरसदीक	वेदान्त	तनोहरलहरी
२ अश्वमेध	नद्याविल्लद्वंधी	योगशास्त्र	गंगालहरी
	नद्यासोदधरसोकी-	प्रबोधचंद्रावमनादक	यसुनालहरी
			जगद्विनी

॥ हरिहरसगुणनिर्गुणपदावली ॥

—00—

श्रीसच्चिदानन्द स्वरूप विश्वरूप स्वामी कृत

पदावली लिख्यते ॥

कवित्त ॥ सिंदुर सुभाल सोहै बालचन्द लोक मोहै कोहै जग जासु
नाम बिना यश पायो है । सोहै बेदगाथ हाथ मोदक परशुबर अभिसु
योति अंगअंग महं कायो है । योग यज्ञ जप तप यतन अनेक करै प्रथम
गणेश पूजि अछै फलपायो है । विश्वरूप विश्वके अधार करतार एक उमा
के उदार वार चित्तमें सोहायो है ॥ १ ॥ सोहैत अखण्ड चंड कोटिन्ह दिनेश
अंग विघन प्रचंड खंडखंड करि डारो है । शंभुके सुवन गज बदन भुवन
माह विदित अनादि गति मतिकी अधारी है । कबिबर बुद्धि बुद्धि कुमुद
सुचंद्र योति होत है भलक बेद मत जतसारो है ॥ बिश्व रूप भाकी सो
भलक हिय मांझ होत योति घन सुंड फेरि शोच घन टारो है ॥ २ ॥
राग भैरो ॥ एक दन्त गज बदन दयानिधि सिद्धि सदन जन सुखकारी ॥
शोक निकंदन शंकर नन्दन भुज विशाल सोहैत चारी ॥ कंज मंजु पुस्तक
बर सुंदर अभय दानि मोदक धारी ॥ १ ॥ सिद्धि बुद्धि छवि खानि सोहा-
वनि सोहैति संग परम प्यारी ॥ विश्व रूप गुण सिंधु दया निधि वाहन
मूखक भयहारी ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ ज्ञान सिंधु गज बदन मदन मद मर्दन
सुत जन हितकारी ॥ विघन हरण जन शरण दानि प्रभु कृपा सिंधु भव
भय हारी ॥ गौरी सुवन भुवन यश तेरो विदित बेद गावत चारी ॥ १ ॥
बिद्या बुद्धि दानि सुख सागर कोटि दिनेश योति धारी ॥ विश्वरूप प्रभु
शरण परो है हरहु कुमति ममता भारी ॥ २ ॥ राग भैरो ॥ गणपति शंभु
सुवन छवि न्यारे जो छवि वरनि न सकत सहस जखि सारद नारदमुनि
जन हारे ॥ चन्द्रमाल छवि द्युति बिशाल अति सूर्प कर्ण गजबदन उदारो
॥ २ ॥ कोटिन्ह भानु योति छवि सोहै मुकुट किरीट योति उजियारे ॥
विश्व रूप जेहि हेरत दगते छटत वेगि विघन दखभारे ॥ ३ ॥ राग भैरो

॥ गणपति वदन हरण दुख भारो शोक सिंधु गण कुंभज केवल विघन
 हरण प्रण नाथ तुम्हारो ॥ १ ॥ प्रथम पुञ्ज श्रुति लोक विदित चहुं
 तेज पुंजगुण ज्ञान अंगारो ॥ जासु नाम जयि सकल सुरामुर होत काठिन
 संकठ ते पारो ॥ २ ॥ विश्व रूप प्रभु कस्या चागर शंकर सुवन जगत हित
 कारो ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ गणनायक ज्ञान अनारो ॥ करिवर वदन मदनरिपु
 बालक हारक मोह विकारो ॥ १ ॥ गिरिजा प्रीति कुमुद रुचि कर अति
 भालचन्द उजियारो ॥ हसत लसत दुति रदन सोहावन वसन मनोहर
 धारो ॥ २ ॥ विद्यानिधि गुणनिधि सुखनिधि प्रभु सिद्धी नाथ उदारो ॥
 नयन कोर जेहिअर निहारत सो न लहत दुख भारो ॥ ३ ॥ कुहूनिशा जडता
 अति मतिको विघ्न प्रचंड पहारो ॥ कोटि दिवाकर वज्र अमित सम पवन
 गवन करि टारो ॥ ४ ॥ मंगल मूल अमंगल हारक दायक बुद्धि विचारो ॥
 विश्वरूप जग जाल कालते लखि निज शरण उवारो ॥ ५ ॥ रागभैरो ॥ गुरु
 मोहि राम रूप मन भावै ॥ सबके तारन कारन सबके ज्ञान सरूप सोहावै ॥ १ ॥
 समरथ शील दयागुण सागर भानु अमित दुति छावै ॥ सब तीरथ मय
 चरण कमल जल पीवत मोह नसावै ॥ २ ॥ जाके पद पंजज की मोहिमा
 सुरनर मुनि यश नावै ॥ जाको पार वेद नहि पावत लघुमति कवि किमि
 पावै ॥ ३ ॥ नहिदाता चाता कोठ गुरु सम अस निश्चै उरआवै ॥ विश्व
 रूप प्रभुकृपा करत जेहि पलमे अलख लखावै ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ अचल श-
 रण गुरु की हम पायो ॥ छूटे ताप त्रिविध अति दारुण प्रेम प्रीति उरछायो
 ॥ १ ॥ सुतवित वनिता अहिगण नाशकगारुड मंच लखायो ॥ छायो सहज
 परम मुख केवल सकल सोच दिनसायो ॥ २ ॥ छूटो द्वैत जगत भ्रम
 नाना सहज स्वरूप सोहायो ॥ विश्वरूप जल थल चहुं पूरण ब्रह्म रूप
 दरथायो ॥ ३ ॥ भजन भैरो ॥ वन्दौ श्रीगुरु देवचरण को ॥ भव दुख
 उदधि पार नहि सूक्त पायो सहजै तरयि तरावो ॥ १ ॥ जेहि पदपंज
 बसत सुर सरिता चारि पदारथ दानि शरणको ॥ कस्या सिंधु बुद्धिगुण
 दायक काठिन दुखह भय जनम सरावो ॥ २ ॥ श्री गुरु तारक ब्रह्ममहा
 प्रभु विश्व रूप गुरु भजु चरणन को ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ देखो वन भरत आ-
 नन्द ज्ञान ॥ गुरु चरण रज कृतु सोहावन घटा समता ध्यान ॥ गुरु
 स्वरूप अनूप नुन्दर मेघ सजल सुजान ॥ १ ॥ आठ याम अखंड वरपे
 घूरि द्वैतन भन ॥ विश्वरूप प्रताप गुरुको अचल अजल ठेकान ॥ २ ॥
 भजनतुमरी ॥ मन कब राम नाम रट लैहो ॥ छन छन छीनहोत इन्द्रनील

कब हरिके गुणगोहो ॥ १ ॥ नीच कर्म तरुलाइ लोभ जलसींचि अमिय फल
 कैसेपैहो ॥ पर अपकार पहार शोसधरि भव जल कोहि बिधि पारसिधइहो ॥ २ ॥
 जगत गहन बन दावचहुं दिशि कहु कोहि मगुते वाहरजइहो ॥ विश्वरूप
 अवसरके चूके सिंरधुनि धुनि पुनि पुनि यक्षितइहो ॥ २ ॥ बिहाग भजन ॥
 मनरे भूले बिरानेदेश ॥ इत अपने हित दीशतनाहीं जोहि बससहत कलेश
 ॥ १ ॥ जेहितन कहं पालत निशि वासर करि बहु पाप हमेस ॥ सोतन गोध
 श्वान मुख जइहै वारिहै कि अनल प्रवेश ॥ २ ॥ नयन अंधभये भवन सुनत
 नहि पगन चलत बहु तेस ॥ जर्जर भये दशन सब टूटे सेत भये सबकेस
 ॥ ३ ॥ अल्प धनिकाकी कौनचलावे जइहै अवशि धनेश ॥ काल गालतें नहि
 कोउ वांचत सुर नर असुर सुरेश ॥ ४ ॥ जेहि पद सेइ अचल पद पायेना-
 रदादि मुनिशेस ॥ विश्व रूप दृढ़ अवशि गहो सोइ अवर सकल चल भेस
 ॥ ५ ॥ भजन ॥ मनरे हरि बिनु सकल बिराने ॥ अहित होत सब समय
 पाय के जाकहं हित करि जाने ॥ १ ॥ यदपि दिवाकर सचि करकर लाह
 कमल तुरित विग सोने ॥ सोइ रंवि कर गन पाइ वारि बिनु वारिजतुरित
 सुखाने ॥ २ ॥ सकन शस्य पालक वारिद है पालत सबहि समाने ॥ बर्षत
 बिपुल उपल कवहुंके बिनसत ग्रीहि विताने ॥ ३ ॥ वनिता भोग राज मुख
 चाहत मूढ़ विना पहिचाने ॥ इतदुख मूल नरक दायक उत करि तेहि प्रीति
 भुलाने ॥ ४ ॥ जेहि डरते यम राज डरत नित निशिदिन कालसकाने ॥
 विश्वरूप सिय नाथ भजे जो सो जन परम सयाने ॥ ५ ॥ भजन ॥ मनरे समुक्ति
 वृक्ति अब देखो ॥ तेरो तन तेरे संग ना जइहै अयर करो कालेखो ॥ १ ॥
 कूच नगारा वाजि गयोहै ठोकेउ यम गन मेखो ॥ काल कर्म को धार बड़ोहै
 सो नहि मूढ़ निरेखो ॥ २ ॥ घ्यावो मन करुणा निधि रघुवर जलधर वर
 सचिबेखो ॥ विश्व रूप जग सुख सपनेके अजनि नैनन्ह पेखो ॥ ३ ॥ भजन ॥
 रेमन तू न भयो अपना ॥ कोटि सिखावों नेकु न मानत देत दुसह तपना ॥
 १ ॥ तेरि बस परि सहेउं बहुत दुख चौरासी भ्रमना ॥ जंघ नीच घरबास
 घनेरो मातु गरभ दहना ॥ २ ॥ जानि दिवाकर कर शीतल जल साहस करत
 घना ॥ निक्कटहि आतम रसहित कारक पियत न एक छना ॥ ३ ॥ कोतिक
 युग बीते भरमत तोहि निज हित समुक्तना ॥ विश्व रूप निज बोध हेतु
 करि जानु जगत सपना ॥ ४ ॥ भजन ॥ समुक्ति न परत अलख गति तेरो ॥
 सब जग कारन आपु अकारण निर्गुण सगुण घनेरो ॥ १ ॥ मायातें बहु खेल
 कियोहै रचेउ भुवन चहुं फेरो ॥ बिबिधि सुभाव भेदतें जहं तहं बहु बिधि

जीव बखेरो ॥ २ ॥ चहु दिशि विषय दियो फैलाई जीव कहत तेहि मेरो ॥
 काम क्रोध की आट परीहै सुधि नहि कर्ता केरो ॥ ३ ॥ जब यह जाल दया
 करि खंखहु नयन कोर हरि हेरो ॥ विश्व रूप जग भूठ सांच मति सह-
 जहि होत निवेरो ॥ ४ ॥ बिहाग भजन ॥ भजारे मन सब गुण निधि भगव-
 न्त ॥ दीनबंधु कल्या के सागर अकाल अनीह अनन्त ॥ जीव चराधर रमेउ
 दयानिधि केवल कमला कन्त ॥ १ ॥ निज समान अपनो है साहेब कोठ
 प्रटतर नलहंत ॥ अति अगाध महिमा है जाको कहि हारे श्रुति संत ॥ २ ॥ सब
 विभूति प्रभु को जग छाये तेज वंत गुण वंत ॥ विश्व रूप जैसे प्रभु हेरो
 क्या हेरसि धनवंत ॥ ३ ॥ भजन ॥ मनरे भटकत हरि बिनु जाने ॥ धर्मधर्म
 विचार करत नहि लोभचीक दृगताने ॥ १ ॥ अवरन कह समुभावत बहु विधि
 अपनी राह हेराने ॥ जगत सधन बनभूलि गयो है नहिकरतब पहिचाने ॥ २ ॥
 वडो गुनी सब महं कह वा वत ह्रम उत्तम उरआने ॥ खानपान तन पालन
 रतनित पर धनहरण सयाने ॥ ३ ॥ करत कुकर्म दिवस सबकीते अजहुंन
 मूठ अघाने ॥ विश्वरूप अब चेत सवेरे भूठे जनम नसाने ॥ ४ ॥ बिहाग ॥
 मनरे विषय कारण बहु नाचो ॥ जो जग दीश ताहि बिसरायो घर घर
 निसि दिन यांचो ॥ १ ॥ गुरु उपदेश नही टहरत उर जैसे जल घट कांचो ॥
 विषय बयन सुनि तुरित ढरत शठ जिमि पावक घृत आंचो ॥ २ ॥ अंध भये
 मयि नाम न देखत बरखस कांचुहि रांचो ॥ बरखस चलत कुमारग निशिदिन
 वेद पुराणहि बांचो ॥ ३ ॥ भूठ पसार सार करि मानत गहत न हरिपद
 सांचो ॥ विश्व रूप अवसर के नुके यम गण देत तमाचो ॥ ४ ॥ भैरो में
 भजन ॥ भजुमन शंभु शरण सुखदाई ॥ जासु शरणते लहै परम पद बहु-
 रि न भव जल आई ॥ १ ॥ जेहि यांचे ते होत अयांचक दारिद सकल
 नसाई ॥ सकल भूति कर तूति सोहावन निशिदिन करतले छाई ॥ २ ॥
 अति दयाल समरथ सुख दायक मूठ ताहि बिसराई ॥ कामी कुटिलविषय
 रस बसे नित गहत न जेहि शरणाई ॥ ३ ॥ तजि चिंता मयि सब सुख
 दायक गहत कांचु हटि धाई ॥ सुर तरु सकल मनोरथ दायक परि हरि
 आक लगआई ॥ ४ ॥ विद्यु शेपर हर चरण प्रीति करु जो चाहसि कुशलाई ॥
 विश्व रूप भव अगम तरण कहं दूसर नाहि उपाई ॥ ५ ॥ धनाश्री ॥ अजहुं
 समुझ मन होत अवेरो ॥ नाहकहीं सब दिवस वितायो कबहुं न हरि पद
 हेरो ॥ १ ॥ बालक पन बीते अजान मह असन शयन रुचि ठेरो ॥ करत
 चपलता इत उत धावत नहि सुधि साधन केरो ॥ २ ॥ तरुण भये

सुधि सकल भुलाने तरुण तिमर मव घेरो ॥ मतमहिप वृष राज सरिस
 सठ भये कामिनि कर घेरो ॥ ३ ॥ कृषी वणिज व्यवहार करत बहु धन
 मह प्रीति घनेरो ॥ नीति अनोति विचार करत नहि संगति कुपथिन केरो ॥ ४
 कंपत गात बात नहि पुछत जेह पर ममता तेरो ॥ विश्व रूप भजु
 जनक मुता वर काल किये बिर डेरो ॥ ५ ॥ भजन ॥ मन बसहु सरोवर
 जाई ॥ घाट विचार सुचारु शमाटिक छवि से पानसोहाई ॥ १ ॥ निर्मल
 ज्ञान वारि परि पूरण सुखद मनोहर ताई ॥ निज स्वरूप सुख रूप
 सुमेती जुगत प्रीति बढाई ॥ २ ॥ नहिंतहं करदम भेदजनित दुख अमित
 वासना काई ॥ शोक गुपम चतुं तापन लागत शीतलता अति छाई ॥ ३ ॥
 कामी कुटिल नीच अभिमानी काक गोध विपुलाई ॥ पर अपकार विषयरस
 निशि दिन रोहितल वासन पाई ॥ ४ ॥ मुनि जन धीर मराल मगन होय
 करत निवास सदाई ॥ विश्वरूप घर अचल करोतहं आवा गवन नसाई ॥
 ५ ॥ भजन ॥ ज्ञान कृपान गहो मन मेरो ॥ अति हुसियार रहो निशिबासर
 रिपु घेरोड बहुकेरो ॥ १ ॥ मोह मान मदमार प्रवल रिपु इन्ह संग फउज
 घनेरो ॥ करत उजारि भवन सबहीके भरन परो इन केरो ॥ २ ॥ शर्म दम
 योग विराग यतन बहु पाहरो कवच अछेरो ॥ होइ अभय मारी रिपु
 दल को दयबहु दुसह दरेरो ॥ ३ ॥ आतम रूपराज अविचल पद
 बैठो सब तजि घेरो ॥ विश्वरूप सुख सिंधु मगन रहु दशहु दिशा
 जय तेरो ॥ ४ ॥ भजन ॥ यह तनके ममता दुखटाई ॥ कहुं पूजेते गगन
 करतुहे कहुं परिभवते देख बढाई ॥ जबतक हृदय शंथि नहि छूटे तब तक
 मिटत न मनमालिनाई ॥ १ ॥ भ्रम बस कर्म करत बहु भातिन जन्मत मरत
 बहुत दुख पाई ॥ यह भव उदधि अपार धार है हठकरि परेठ बोचतेहि
 जाई ॥ २ ॥ काम क्रीध जहं जंतु घनेरे प्रास करत सब कहं बरिआई ॥
 विश्वरूप गहु राम नाम दृढ़ सकल चाहत मनकी विसराई ॥ ३ ॥ खेमटा ॥
 झूठे जगत भुलानो मै कैसे सुख पावो ॥ ऐकौ छन हरि भजन करत नहि
 राजस गति चित लावो ॥ काम क्रीध जल भरत रैनदिन अजहुं भवननहिं
 छावो ॥ १ ॥ हरि जनहरि से प्रीति बिसारेड सुत वनिता गुण गावो ॥ नि
 कटाहि व्यापक प्रभु सुख सागर देश बिदेशहि धावो ॥ २ ॥ करि पखंड
 प्रभुता चित चाहो अति सारग विसरावो ॥ विश्वरूप अस दिन कब है है
 राम शरण महं आवो ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ संतलिया लाल मै तोहि जानो ॥
 विनति करौ जनि लाव नजरिया छटासे मोरे नैना लोभानी ॥ १ ॥ विश्व

रूप चिम चोर कन्हैया तुमरे हाथमैनाहि विक्रानी ॥ २ ॥ खेमटा ॥ मुरलिया
 लालदे मोहि आनि ॥ चांद सुरभकरि योति मुरलिया बजाई हरै जियरा
 विरानि ॥ १ ॥ विश्वरूप हंसि हेरि नजरिया लगादे प्यारे नैना निसानि ॥ २ ॥
 खेमटा ॥ धनुहियां हाथ सों लेइतानि ॥ कर गहि बाण सुजान संवलिया
 चलाई कीन्हो दशमुख हानि ॥ १ ॥ विश्वरूप करि अभय धरनियां छुड़ाइ
 दीन्हो जगकी गलानि ॥ २ ॥ खेमटा ॥ नजरिया हेरिदे मोहिदानि ॥ कमल
 कौस छवि हरनि नजरिया छुड़ादे मेरो ममता गलानि ॥ १ ॥ विश्व-
 रूप रघुवर वरदानिया कहां लो तेरो महिमा बखानि ॥ २ ॥ खेमटा
 राघो तेरो छवि यां नजरो मह लैयो हो ॥ सरयु सोहावनि बिहरण
 नीको छन छन नेहिया बढ़ावत रहियो हो ॥ १ ॥ वचन माधुरि मनहि
 वसै हो सुख घन रसिया कबो ना बिसरैयो हो ॥ विश्व रूप लालन दश
 रथके पदरज मलिया लगावत तरियोहो ॥ २ ॥ खेमटा ॥ राघो तेरो सुधिय
 कवन विधि पैयोहो ॥ रोदन करति परत धरणी महं कहत कौशिल्या प्रा
 णही देयोहो ॥ जनक दुनारी प्यारी प्राणहूं ते मेरो कवन यतन तेरि सिया
 सुधि ले योहो ॥ २ ॥ छिन छिन कोटिन युगतें कठिन भयो केहिबिधि
 रतियां अगम बितै योहो ॥ विश्व रूप बिधि बिपति भवन दियो दुखकी
 समैया अब कासों सुनैयोहो ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ कौने मद भूलिबिगारे सब कमवां
 जगकर सपना भोग लखतना जोरत रहत लाख को जमवां ॥ १ ॥ जरत
 गरभको सोच करत ना कियोरे कठल जपिहों हरि नमवां ॥ २ ॥ पुरजन
 वनिता संग रहत ना जीवन चपल लखे हरदमवां ॥ ३ ॥ विश्व रूप गुरु
 चरण गहतना करतव नीच चहत सुख घमवां ॥ ४ ॥ खेमटा ॥ लागे दिन
 रैन हमारे मन रमवां ॥ कुटिल करम को आश करवना चरण कमल जपि
 हो सुख घमवां ॥ १ ॥ कठिन जगत को बंधन सहिहों बहुरि नपैहों गरभ
 जनमवां ॥ २ ॥ भरम भवन में ब्रास न लहिहों तजिहों कुटिल कुमति मद
 कमवां ॥ ३ ॥ विश्व रूप मोहि अवरन भावे हारिल की लकड़ी घन समवां
 ॥ ४ ॥ ध्रुवपद ॥ साखि राजको समाज साज सोहत रघुनाथ जीको कांति
 सदन मदन कोटिपटतर नहि पावैरी ॥ १ ॥ भूपन की पांति पांति सुरपति
 सुमुनि सोहाति गान करति देव बधू भुवन को रिखावैरी ॥ २ ॥ ज्वलित
 वरण तरण योति भूषण पट योति होति शीस मुकुट भणि गण छवि दू-
 गन को चुरावैरी ॥ ३ ॥ महाराज भूप न को भूप विश्व रूप राम यैसो
 प्रभु छोड़ि आस दीनसो लगावैरी ॥ ४ ॥ ध्रुव पदविलावल ॥ मोहन कुंजन

ब्रज जन प्यारे ॥ कुंज विहरन चित हरन श्याम श्याम राम संग सिधा-
 रे ॥ १ ॥ कुंजन प्रति कुंज कुंज गुंजत चहुं भृंगथोर कुसुमित तरु ललित मोर
 सोर सो पुकारे ॥ २ ॥ लीन्हे संग ग्वालवाल खेलत ब्रज लाल खेल निरखत चित
 भरत मोद कुसुम हरपि डारे ॥ ३ ॥ विश्व रूप व्यापक जोहि नेति नेति गावै
 श्रुति भाग्य पुंज पुंजन संग विहरत निसवारे ॥ ४ ॥ ध्रुवपद ॥ आलीरी सा-
 वन आयो घनमन भावन भनन घनन अंजार चपल दो दृग भंपन ॥ १ ॥
 वनवारी बल राम सुनाम गये वन सोचति मोहत विश्व रूप सखिरी उर
 छाये मोहि कंपन ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भ्रमवंश तें भव जालमें भटकी ॥ यतन
 करत सुखहेतु अनेकन कामिनि कोप विषय चित अटकी ॥ १ ॥ आश
 पिशाच विवश भयो निश दिन बाहर धावत सुधि न निकटकी ॥ २ ॥
 विश्व रूप रघुवीर शरण गहु हरण द्वंद जग फन्द विकटकी ॥ ३ ॥ ध्रुव-
 पद सामकल्यान ॥ येआजु पावन कीन्ही सुख घन छवि निधि भवन भुवन
 संभोग रण योग जन पावन ॥ १ ॥ बहु रंगो पट रंग सुरंग सुभूषण सोहत
 मोहत विश्व रूप सखीरी श्याम सोहावन ॥ २ ॥ ध्रुवपद सामकल्यान ॥
 बिरहत मोहन ग्वाला गोपी साथ लेई ॥ सघन वाटिका कुसुमु घनेरो नाना
 गन्ध फूले हैं चंबेली मुख धृत वंशी शोहन ॥ १ ॥ मंजरी माल मणि माल
 भीनी सजे हैं अंबर छवि न्यारे ॥ विश्व रूप वंशी धुनि सुनि सुरनि किलकि
 हा हा देई देई ये लागत सुर मुनि जोहन ॥ २ ॥ ध्रुपद ॥ निर्तत मोहन श्यामा
 वंशी हाथ गहें ॥ चपल सोहावनि बैन सोहाई भुक्तिभुक्ति आवत दूर पराई
 सुखघन बिहरे मोहन ॥ १ ॥ मधुवन विहरत श्याम कन्हाई बालन्हकेसंग
 केलि मचाई ॥ विश्व रूप निर्तत यदुनन्दन थेई थेई तता थेई तंतं
 गगन मुरली वाजत सोहन ॥ २ ॥ ध्रुवपद ॥ आयो घन घोर मोर नाचत
 चहुं औरहेरि कीन्ही प्रिय सोर भोर भई दशा तन की ॥ ऐसे ब्रज ग्वाल बाल
 हेरे नन्दलाल और फेरे नहि नेकु नैन चिचलिखो मनकी १ ॥ भूषण सुअंग
 अंग मोरत अनंग कोटि रंग रंग पीत यीति चपला ज्यो घन की ॥ ऐसे मोहन
 अनूपहेरे दृग विश्वरूप नैन बैन भेद कियो खाटे बिधि जनकी ॥ २ ॥ ध्रु-
 पद ॥ जीतारी जबही ऐसे कामकामिनी को माया जाल पै हो तबही तूं श्यामा
 प्यारे ब्रज चन्द जी ॥ जीवन अलख जानो पथिकसे संग मानो चपला मोचित
 लायो भूलेमति मंद जी ॥ १ ॥ सपना को राज पायो उरमें आनंद छाये जागे
 पछ तायो ऐसे जानो जग फन्द जी ॥ विश्वरूप भजो नाम जीवन सुखद
 श्याम मोहन मुकुंद मायो प्यारे सुख कन्दजी ॥ २ ॥ राग ठुमरी ॥ मन मेरो

रघुवीर सां अटकी ॥ मुर नर नाग अचय सुख चाहत सां तजि भवन छांह
 तरु बटकी ॥ १ ॥ नृप किरीट पद परत जाहिके तापस वेपसां वन वन
 भटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप कहै भरतसां पुर जन विधि रहे मुकुट जटा सिर
 लटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ खगपति अहि जिमि कंसको भटकी ॥ गहि कर केश
 नरेश बीच में श्याम घुमाय भूमितल पटकी ॥ १ ॥ धायो रि कंस सहोदर
 रिपुगण छिन में हते उ खेलि कियो नटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप जासां काल डरतु
 है गिनती कवन असुरदल भटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जिनके धन गेहसां
 अटकी ॥ छांडेरिसुपथ वृथा भयो जीवनरविकर बारि तृषा कहुं हटकी ॥ १ ॥
 होत विफल जप योग कांच जैसे बहत सकल जल रहत न घटकी ॥ २ ॥
 विश्वरूप गुरु चरण सरोरुह वेगिगहो तजि चीक कपटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥
 सखि सबके चित श्याम सां अटकी ॥ ढरत नयन जल नीद न आवत
 कोटि न युगशत होत पलककी ॥ १ ॥ विसरत नहि सखि मोहन कीकवि
 यमुना नीर रुचिर छवि तटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप मधुपुर गये मोहन मोहि
 सुधि रहत न भूपन पटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन जवते हरि और से हटकी ॥
 तब तेरे भव जल पावत दुख धन आवत जात अमित युग भटकी ॥ १ ॥
 विश्वरूप अति मगनहि हेरत सुत वित नेह गेह सुख अटकी ॥ २ ॥ ठुमरी ॥
 भूपन जां धनन योति सां भलकी ॥ उर बनमाल भाल सोहै चन्दन मृकुटी
 ललित हास मन ललकी ॥ १ ॥ मव गुणअयन बैन मन मोहन लटक जलज
 मुखछवि अलि टलकी ॥ २ ॥ विश्वरूप मन मोहन कीनी विसरत नहि
 छवि नयन चपलकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ बिन समुझेहिये सोच सां भटकी ॥ राज
 विभव सुख वंधु सहोदर आस छनिक तृणजल जिमि लटकी ॥ १ ॥ रति
 सपन सुख गंगन कुसुम सम मानस चित चपल चित अटकी ॥ २ ॥ विश्व-
 रूप गुरु पद रज अंजन गंजन दृग दुख दोष कपटकी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ मन
 जिनको निज बोधसां अटकी ॥ बिहरत अभय सबहि मह पूरण भय न
 होत उर रिपुगण खटकी ॥ १ ॥ बाहर नामरूप दृग गोचर पुतरी ललित
 रचित जिमि पटकी ॥ २ ॥ विश्वरूप सुख अमल सोहावन योति भलक
 जिमि रविगन ठटकी ॥ ३ ॥ रागभैरवी ॥ बतबो मोहि श्याम गये केहि
 और ॥ श्याम श्याम रटि थकित भई अति नहि मिले नन्द कियोर ॥ १ ॥
 कचते कुसुम भरत चहुंदिशते टूटी गललर जौर ॥ विकल भई सुधि सकल
 भुलानी मन अटकी चित चौर ॥ ३ ॥ मुरलीटेर करत मुरली धर आइ गये
 तेहि और ॥ विश्वरूप सखि निरखि मगन भई जैसे चन्द चकोर ॥ ३ ॥

रागभैरवी ॥ माधव माया सबहि नंचावै ॥ योगी जंगम नप संन्यासी पारं
 कोठ नहि पावै ॥ १ ॥ जाकी चास वास मुनि जन सब बंनमें जाय लगावै ॥
 मानस बेग प्रबल नानासर हठि तहं तुरित पठावै ॥ २ ॥ कहुं तिय सुत
 धन रूप भईहै नाना भेपदेखावै ॥ कहुं परिवार बंधुहित अपनो बहुबिधि
 जाल बढावै ॥ ३ ॥ हें पंडित ज्ञानी सर्वात्म अहंमिति उर अंधिकावै ॥ सो
 नहि संभुक्त मूढ मोह वस हठि निज शीस कटावै ॥ ४ ॥ काहंकाहें करुणा के
 सागर कछु उपाइ नहि आवै ॥ विश्वरूप रघुनाथ शरंगेतवं दृढ भरोस मन
 भावै ॥ ५ ॥ रागभैरवी ॥ माधव मन जीतव कठिनाई ॥ मुनि जन यतन
 करत बहुहारे नेकु थाह नहिं पाई ॥ १ ॥ मूल सहित गिरिवर उखारि बर
 करतेलेइ उठाई ॥ सब सागर एक बार सिमिटिवर भंजुलि मांह समाई ॥ २ ॥
 पावक प्रबल प्रचंड असन करै बर शीतलता छाई ॥ नभकहं सिमिटि धरनि
 महं मेले वर विप दुसह पचाई ॥ ३ ॥ स्वर्ग नरक दुख सुख बहु भाति
 न यहं मन कृत समुदाई ॥ चौरासी मह भ्रमत दिवस निशि नहिं पावत
 थिर ताई ॥ ४ ॥ जापर दया करहु करुणा निधि माया पति रघुराई ॥
 विश्वरूप वसि हेत ताहि मन विनु प्रयास सुख पाई ॥ ५ ॥ रागभैरवी ॥
 मेरो मन हरत कपाली वन मालिया ॥ मुख मुरली डमरू छवि सोहै कर
 धनु वान चिशूल छटालिया ॥ १ ॥ शीस मुकुट मणि जटित सोहावन शंकर
 केसरि सोहत जटालिया ॥ २ ॥ विश्वरूप करपूर गौर हरश्याम वरन मन
 मोहत घटालिया ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ काहे रघुवर कूप भकावत हो ॥ श्रुति
 मत विदित सकल अंतर गति जाननि हार लखावति हो ॥ १ ॥ विश्वरूप
 जगदीश दीन प्रभु नाम की लाजन आवत हो ॥ २ ॥ भैरवी ॥ सखि मोहन
 मोकंह भावतरी ॥ श्याम अलक मुख भलक सुर सेां कोटि मदन छवि छा
 वतरी ॥ १ ॥ विश्वरूप दृग कमल चपल सेां श्याम सनेह लगावतरी ॥
 २ ॥ भैरवी ॥ तोरि राम धनुष जगत यश छाये है ॥ छवि रुचि कारि
 सोहै देखि त्रिभुवन मोहै एकटक नर नारि पलकन लाये है ॥ १ ॥ रवि
 दुति उजियारी जगमग ज्योति सारी भूप जान खान देखिउर सकुचाये है
 ॥ २ ॥ जनक को पन पाले खल नृप मद घाले साधु नृप उर माह अति
 सुखमाये है ॥ ३ ॥ भृगुपति मद तोरे मुनि जन करजोरे जानि प्रभु शीस
 नवाई बनको सिधाये है ॥ ४ ॥ रुचिर समाज सोहै गिरा बिधि शेष जोहै
 उपमा न पाये ताते अनुपम गाये है ॥ ५ ॥ विश्वरूप प्रभु राम जनहित
 सुखधाम जानकी समेत रथ चढ़ि गृह आये है ॥ ६ ॥ भैरवी जोरे कर भरत

जी अरज सुनायोहै ॥ चलहु भवन न छ अवध करी सनथ कल्या विधान
 तुमै लेन कह आयो है ॥ १ ॥ सुनिधे भिनय वली रङ्गशि सुखदानि स-
 मुझ पिताको पन उर सकुचायोहै ॥ २ ॥ भरत नेह भरी सकत न रामटारी
 प्रेम के विनश भये दूग जल छायोहै ॥ ३ ॥ विश्व रूप रघुराज समुभायो
 सुर काज चिचकूट तें भरत कह फलट येहे ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ श्यामा मेरे
 चित को चुराय लई भवन भोग लेई ॥ मैती ॥ सुन्दर गति छवि
 ललित मोहन की ब्रज पुरचन को लुका लई ॥ ५ ॥ विश्व रूप मुरली
 मोहनकी सुर नर नाग मोहाय लई ॥ श्यामा ॥ शैली शैली तरे संगमें छपाय
 रही ज्ञान नैन खे हियं लखिहीं प्यारे ॥ अंतर्द्वार रहतं भेहदी की घंत
 जैसे क्षीर में छ यरही ॥ १ ॥ विश्व रूप यज्ञ जो अरेखे मिलनेकि और
 उपाय नहीं ॥ २ ॥ राग भैरवी ॥ श्यामा ॥ शैली तरे नसाय दई रामसें
 नेह हिय छरिहीं अब ॥ घेर करतं चहुं नय सुखारि सतपथसें बिललाय
 दई ॥ विश्वरूप निललोच्य ब्रह्म सुख उरयल तें चुराय दई ॥ २ ॥ भैरवी ॥
 काया तेरे संदमें न जाय कही जान ही ॥ दायुं यही प्यारे ॥ सुख घन
 ब्रह्म सक्य भलक चहुं केवल मनको रचय गी ॥ विश्वरूप अवसर दिन
 दशमी अबतोहि काल फसाय चही ॥ १ ॥ भैरवी ॥ रघुवर जबतक प्रीति
 न तोसे ॥ काह भये बनजंतु बेटारे खन पान दहु पोसे ॥ काह भये मृग
 छाल बिछये सकुक्त ना गुण देखे ॥ काह भयेरि जटा बढाये मनलागे
 घनकोसे ॥ १ ॥ अखर बीज सारिख करतब सब विमि अनीश कृत जोसे ॥
 विश्वरूप जगदीश नापद जो पद रति नहिं देखे ॥ २ ॥ हेरीकीताल ॥
 मैती अन मोहन को रटती रही ॥ ज्योति दूगम सें घटती रही ॥ कुवरी
 संग प्रीति हरि कीन्हों कवन कलासें चटती रही ॥ इत आवन नहिदेति
 श्याम को विरह विचखों रटती रही ॥ २ ॥ मधुपुर नवल सनेह श्याम
 सें सखि दुवला से पटती रही ॥ विश्वरूप ब्रज हरि नहिं कैहै प्रीति
 इहां सें रटती रही ॥ ३ ॥ तालहेरी ॥ मैती दुख सागर सें तरती नहीं
 चरख शरख जों धरतां नहीं ॥ १ ॥ गुरु पदनाव अचल कृत चौकी क्षीर
 पवन सें डरती नहीं ॥ भइहों अशंश पार भव जलतें योग यतन कोकरती
 नहीं ॥ २ ॥ अचल असन सुख घन हिय छाये द्वैत फन्देको मरती नहीं ॥
 विश्वरूप शंशिर उदय भये ज्योतिपलकसें टरती नहीं ॥ ३ ॥ हेरीकीताल ॥
 सेसे रघुमदन सें चहती रही चरण युगल को चहती रही ॥ चन्द्र चूड़
 रिपु आइ चहुं छाये शोच अनल सें दहती रही ॥ रैन दिवस दूग नींद

न आवै दुसह दपट को देखी रही ॥ १ ॥ सरखा सिंधु बुजलि खगपति
 सों नेह अचल को गहती रही ॥ दिखलुप कुलि गम्य शरदों वैतो छन
 छन रहती रही ॥ २ ॥ हेरी को जती ॥ प्यारी नट नागर सों करती नहीं ॥
 कमल नयन सों डरती नही ॥ श्याम पित्रय जंग सुख बाहुं दैरे चितइन
 सों री भरती नही ॥ लहरे ह वरु शिरो मेहन साख कुवंगा सों
 बनती रही ॥ १ ॥ जनतह विरह भोवन की धीरो इयसों गरती
 नही ॥ विरह रूप तब हरि धर जती वैतो प्रजन एती नही ॥ २ ॥
 ताल हेरी की ॥ वैतो जन मार रो डरती रंही ॥ विच सुख घन से
 टरती नही ॥ अथे न री ॥ उरु ह देवदे दीप रसत वैररती नहीं ॥
 कोजग जगमे वार देहर को ॥ वैतो सों भरती नही ॥ २ ॥ अथे बिन रूप
 निज पयो हुंको ॥ वैतो सों भरती नही ॥ विरह रूप सुखाख लालोचपल
 चरख सों डरती रही ॥ ३ ॥ ॥ शरीर धीरो दुजे शोचनिसों भरतीरही ॥
 अजब भवन को पराग रंही ॥ अत ॥ विरह रूप रा चयो सुखो हृदय
 सों गरती रही ॥ हरि अ ल ग ॥ अत विरह रूप देहरि न देों डरती
 रही ॥ १ ॥ सीचे तब फल फूल को ॥ वैतो विरह पर फरती रही ॥ विरह रूप
 पावक विनु रवि अथे विरह रति री तो परती रही ॥ २ ॥ रोजग ॥ गहो
 अब रामको प्यारे सुख ली ल न डरती ॥ अत ॥ विरह रूप तरे छरे कछू
 नहि हाथ आकरे ॥ अथे ॥ वैतो ॥ अत ॥ वैतो पाठ को फन्द गल डारे
 लखी जग झूठ मतकारे ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ १ ॥ रोजत ॥ विनय
 महावीर जी येरो दयाकरि दुगन सों वैतो ॥ अजब रवि बोदि लन सोहै
 निरख शिर छच मलकोहै ॥ सदा वै चरख को रोरो भरिसां रंफहै तेरो ॥
 १ ॥ सोहै भूषण सुभंगनसे बदनरंगे सुरंगनसे ॥ सिनिटि रवि चन्दवहुतेरी
 सोहै माला मदिन देरो ॥ २ ॥ अत ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥
 छवि सोहै ॥ अथे संजता सुप्रति तेरो तुंही दानी चहुं फेरो ॥ ३ ॥ जलधि
 गोपाद सो कीन्हो खेहेसो राम को दीनो ॥ करों ॥ भु नाम को टेरी शरन
 है विश्व को तेरो ॥ ४ ॥ अत ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥
 समाज सुखे सुरेश ॥ नित नूतन घर घर मह उद्याह दाहूको उर नहि
 चिबिध दाह ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥ वैतो ॥
 ॥ १ ॥ देवनि करनिज सिधे समेत नवत स्वररुधि ताल देत ॥ गह गह
 धुनि चहुंविश्व रूप होत मगन जैसे रंक्रमुप ॥ २ ॥ राम रागवसंत ॥ खे-
 लत वसंत श्री महावीर बलसागर रवि सम तेजधीर ॥ श्री अंगाध्र मास्त

कुमार मजराज पापके हरि उदार ॥ प्रभुविश्वरूप रघुवर अक्षर वरदान देहु
 करुणा अंगार ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ श्याम रूप जबसों दृगहेरे ॥ विकल होत
 मनकल न परेरे ॥ कहे जेवैन मधुर रुचि कर अति मुरली टेर फेर चितदेरे ॥
 हंसनि चातुरी चकृत चपलता नहि पटतर हेरेडं बहुतेरे ॥ ५ ॥ गौवनके
 संगवालन लीन्ही कर कर जोरि डगर चहुंधेरे ॥ विश्वरूप लीलाधर मोहन
 रैन दिवस सखि चितमो वसेरे ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ भल तेरो श्याम जबानी
 निरखत नैन अघानी ॥ रचि रचि विरवा पान सवारे दशन अधर छवि
 खानी ॥ तिरछे नैन हरत हरिजीको लसत ललित मुसुकानी ॥ १ ॥ पीत
 वसन छविचितको हरत है भूषण भूति निशानी ॥ विश्वरूप मोहनछछवि
 तेरो लखि अनंग सकुचानी ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ देखो देखी रे श्याम की रचि-
 राई ॥ कुंडल चपल करण महाराजै मुखमुरली छविछाई ॥ १ ॥ पीत वसनदुति
 अधिक विराजे लखि टामिनि सकुचाई ॥ २ ॥ मणिगण हार सुखवि उर
 शोभित मानहुं सिमिटि सुरशशि आई ॥ ३ ॥ विश्वरूप मनमोहन मोहन
 हरत फन्द दृगकी चपलाई ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ राधिका संग श्याम सिधारे ॥
 हम सजते कछु वात कहत नही कपट करत मुरलीधर प्यारे ॥ १ ॥ कहां
 गये मन मोहत मोहन अलिहम खोजति कुंजलतारे ॥ चंचल ग्रीति करत
 हरि हमसन कहा कहे सखि मोहन कारे ॥ २ ॥ विश्वरूप हरि विरह
 विकल भई जोहत सब सखि यमुना किनारे ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ भला नारे
 मोहन प्यारे सांवलिया नन्दलालारे ॥ नयन लगीचितको ठगी लागी काम
 कामान ॥ वनवन सुधि कहुना मिली गये कहांरी कान ॥ १ ॥ सुंदर छैलसंग
 राधिका करती बहुत गुमान ॥ विश्वरूप धुनि वांसुरी लगी विरह कोवान ॥
 ॥ २ ॥ भैरवी ॥ मिलनारे मुरलिया वाले सांवलिया मोहि प्याररे ॥ पीत
 वसन काछे भली वन माला छविखान । चितवान दृगमो रसभरी निरखत
 हरिले प्रन ॥ १ ॥ तिलक भाल शोभा भली भलक कोटिसत भान । विश्व-
 रूप मनमो वसीकिये सरसजो गान ॥ २ ॥ खेमटा ॥ वितत सबदिनवां नाह-
 करे ॥ नहिहरि भजन शरण नहिगुरुके होइहै यमगण गांहकरे ॥ १ ॥ कु-
 मति कुसंग सनेह बढाये मोहभार सिरवांह करे ॥ विश्वरूप पुनिपुनि पछितै
 हो पैहो दुख उर दाहकरे ॥ २ ॥ खेमटा ॥ सुरतिया पनि हारिनि भईमेर ॥
 विनाकूप विन डोर भरत जल पिवत मगन नितरहै चहुञ्चोर ॥ १ ॥ चिक्कटि
 भवनवां रहति मौनवां कौनहु समय न लावति भोर ॥ २ ॥ विनु टीपक घत
 वाति अनल विनु ज्योति वरत नित रहत अञ्जोर ॥ ३ ॥ काम क्रीध जहं

सलस नही है विषय वायु नहिं करत भुकोर ॥ ४ ॥ नूर जहूर भरत है भला
 भल नहिं तहं आसवास जगधोर ॥ विश्वरूप गुरु गम्य अगम है लखे मिटै
 मायाकृत घोर ॥ ५ ॥ खेमटा ॥ सुरतिया लागि रही हरि ओर ॥ विषयवि
 वस जनिलावो भोर ॥ ५ ॥ सुरति निरत केपान करतु है टूटि जात मनकर
 सब जेर ॥ २ ॥ ज्ञानध्यान यह महा रतन है ताहि हरत नहिं कबहुं चोर ॥
 विश्वरूप हिय भगन भयो है मेदि गयउ सब जगकी खोर ॥ ३ ॥ भैरवी ॥
 वेद वेदराम चन्द्र हरे प्रभो गहो मन ॥ मांघो केशो बंशीधर हरि गोसुर
 नन्दन पीतांबरधर ॥ चापपाणि भव मोचन सियवर ॥ १ ॥ सिद्ध महीधर
 केसि निसूदन गोप बाल सर्वेश्वर श्रीपति शोक निरन्दन जग जीवन कर
 ॥ २ ॥ श्रीश गदाधर जग बंदन प्रभु पारब्रह्म अखिलेश्वर निधिपति
 फन्दनि कन्दन मुकुन्द मुरदर ॥ ३ ॥ भवभय भंजन तेज रासि बर अविनाशी
 अण परशुराम मधु सूदन जनमन मोहहत भय हर ॥ ४ ॥ बुद्धि सुखा कर
 परम पुरातन लोक नाथ विश्वेश्वर वसु यति काली मर्दन नासयण नर
 ॥ ५ ॥ सत्य दया निधि अकल समीरण हंस बंशईनेश्वर सत्ता पत्तिकर्दम
 नन्दन विश्वरूप पर ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ नन्द सुवन भुवन विदित शोक को
 हरैया ॥ चलत चाल अति रसाल राजित छवि दृग विशाल बाल केलि
 करत हरत जन मन सुखइ टैमा ॥ १ ॥ सजल अमल कमल चार सरिसु
 बदन छवि अपार राजित रद शोभा पर अधर अरुन छैया ॥ २ ॥ शरद
 चन्द मन्द हास फन्द उदधि घटज राशि बोलत बरबैन ऐन साथ उर
 बसैया ॥ ३ ॥ माता सुधि विसरि गई निरखित दृग ताहि टरी सुख अगार
 अटके मन चित्त सम रहैया ॥ ४ ॥ करत केलि प्रभु अपार मुनि जन मन
 वन विहार धरणि भार हरण शरण दीन दुख हरैया ॥ ५ ॥ शंकर अज
 देव नाथ आवत नित अमर साथ गावत प्रभु गाथ हाथ जोरु परे प्रैया ॥
 ६ ॥ ब्रज जन भये अति अशोक जैसे रवि निरखि लोक कमठ जेड सरिस
 नन्द लाल उर सुहैया ॥ ७ ॥ विश्वरूप मन सुचार राजित ब्रज वर वि
 हार बिहरो निशि बार काम कन्स को नसैया ॥ ८ ॥ राग परज ॥ मन रे
 अब चिन्त रूप निहारो ॥ जेहि देखे जग होत सपन सम मानु निकार उ
 जियासे ॥ ९ ॥ अगम अविद्या रजनि नसानी ज्ञान विचार अपारो ॥ त्रिग
 से सरोज भये मुकुलित अति मुकुन्द दुसह दुख भासे ॥ २ ॥ चक्रई बुद्धि
 मिलत प्रिय प्रिय से छुटो हे वियोग बिकारी ॥ विश्वरूप पूरण जग माहीं
 चार खानि विस्तारन हारो ॥ ३ ॥ राग परज ॥ गहु मन अजहुं शरण रघु

वरकी ॥ दीन बंधु प्रभु जगहित कारक जीवन धन अति निशि दिन हरकी ॥
 ॥ १ ॥ ठर गई जिमि नीर ठरंतु है तैसे अंतर्धन जन ठरकी ॥ यह
 तन की कछु अर्थाय न दीखत नदी-बूझ जिमि गति तरुवर की ॥ २ ॥
 दामिनि दमन चमक जिमि थिर नहि अथला छरखी भोग अमर की ॥
 तामह हेतु करत निशि वासर सुधि नहि काल कराल कुसरकी ॥ ३ ॥
 सोधन को अवसर भल पायो दुर्लभ साज लहेउ नर तनकी ॥ विश्वरूप
 जगद श हेतु कर छेहु तुरित मनअंश अपरकी ॥ ४ ॥ राग परज ॥ क-
 हत पधिका रघुवरह निहारी ॥ श्याम वरख छवि अति अतुलाई विधि
 निज करतें सवारी ॥ १ ॥ अति सुकुसारी संग वर नारी शोभाअति रुचि-
 कारी ॥ शर चन्द्रिका रजि चन्द्रके सरिस बदन उजियारी ॥ २ ॥ गौर
 वरख मन हरख निरखि छवि नैन पलक द्विये टारी ॥ सुनि अद्भुत छवि
 देखन आये याम नगर नर नारी ॥ ३ ॥ कंटक सुखवन धरखि विकट अति
 कैसे के दरग मगु धारी ॥ विश्व रूप सब कहत परसपर धन्य जनक अरु
 धनि मइतारी ॥ ४ ॥ परज ॥ अवलो भुलानो अतना भुलैहो ॥ गुरु प्रसाद
 ते निशि दिन अनुछन हरि-महं प्रीति लगेहो ॥ १ ॥ चाह दाह उर मांह
 घनेरो वरि विचार वृतेहो ॥ मोह चाल परिवार अनेकन्ह करि प्रभु
 सुरति नसैहो ॥ २ ॥ जग वन टाव अनल चहुं दिशि अति तामह पगु
 नहि दैहो ॥ मोर तोर दुख सागर परि हरि चिखुटी भवन बनेहो ॥ ३ ॥
 पाप पुन्य करिके हरि गण दोउ तांके बीच न जैहो ॥ अमृत रस करि
 पान निरंतर लहि सुख मोद बढैहो ॥ ४ ॥ सब अति चपल फिरत जहं
 तहं नित ताको वेग बढैहो ॥ विश्व रूप निज रूप अजायव पूरख एक
 समैहो ॥ ५ ॥ परज ॥ विनु रघुवीर न करजि नसाई ॥ यह जग जाल क-
 राल दुखद अति कूट न अवर उसाई ॥ १ ॥ ध्रुव प्रह्लाद अचर्यपि नारद
 सनकादिक समुदाई ॥ राम नामरस अमिय पान करि विहरत शोक विहाई
 ॥ २ ॥ वाल्मीकि घट संभव मुनिवर जपेउ नाम मन लाई ॥ ज्ञान भवन
 सुख रूप भयो है चहुं दिशि कीरति छाई ॥ ३ ॥ अजहूं मानु जानु हित
 अपनो छोडो आस पराई ॥ विश्वरूप सुख सिंधु दानि हरि केवल गहु श-
 रनाई ॥ ४ ॥ राग खेवटा ॥ रघुवर केहि अपराध विसारे ॥ जो प्रभु धर्म
 शील कहं तारत ऐसी वनि तुमारे ॥ तो कत वेद पतित पावन प्रभु ऐसी
 विरद उचारे ॥ १ ॥ गीय कवन समदम व्रत कीन्ही गनिका का तपधारे ॥
 अजामील द्विज बंधु कुमगु रत ऐसी अधमन्ह तारे ॥ २ ॥ निर्बल केवल

आपु दयानिधि निरर्धन धन हित कारे ॥ आरत सहि न सकतः जन की
 प्रभु हर गिरि तैं अति भारे ॥ ३ ॥ केवन नाथ भरोस तुमारो तजि जग
 द्वन्द अगारे ॥ विश्व रूप प्रभु वेगि दया करि हरो मोह मद मारे ॥ ४ ॥
 खेमटा ॥ करम गति कहि नहिं जाई ॥ करम डोरि बंधन अनादि के फं-
 सेठ भुवन समुदाई ॥ १ ॥ तेज पुंज भुग्या खानि दिवाकर शशि छवि खानि
 सोहाई ॥ अमित कल्प वीति भरमत नभ अजहुं न नेकु थिराई ॥ २ ॥ य-
 दापि शेष सर्वेश सनातन महिमा बल बिपुलाई ॥ धरणी भार धरत शिर
 पर नित एकत न फन्द छोडाई ॥ ३ ॥ नयन कोर जो जग लय कर हर
 विदित अमित प्रभुताई ॥ भिजाएन कपाल कर डोलत भवन ममान बनाई
 ॥ ४ ॥ जो बामन जगदीश तोनि पद कीन्हे भुवन निकाई ॥ विश्व रूप
 बलि द्वारे ठाढ़े गहन करम तैं बंधाई ॥ ५ ॥ परज ॥ पढ़ि वेद स्तित बन
 हारे ॥ बांची वेद गही नहिं सांची चरत कुसगु निशिबारे ॥ १ ॥ फूलोहै
 फूल फल लागत नार्ही समुझि होत दुख भरे ॥ मन पतंग बसि काम पवन
 के धावत विषय बिकारे ॥ २ ॥ निरखत भोग जगत के मृग जलजल जल
 बाढ़ि करारे ॥ विश्व रूप तेहि नेह लगायो तजि हरि नाम पियारे ॥ ३ ॥
 परज ॥ अब की वार कहेों हित हेरी ॥ सुत बित गेह सनेह सजन की
 जैसे जल गति पुरइनि केरी ॥ १ ॥ करम गहन बन घेर दहन कि पैहो
 दुसह दास्य दुख फेरी ॥ विश्व रूप गहु गुरु पद सुख निधि बचिहोन
 आन उपाय घनेरी ॥ २ ॥ परज ॥ जय जय दीन बंधु रघुराई ॥ ब्रह्मादिक
 सुरगण मुनि जेते अस्तुति करत पार नहिं पाई ॥ १ ॥ धन जन रूपतें
 नाहिं मिलत हरि एक भक्ति तैं होत रुहाई ॥ २ ॥ ग. को विभव कहु
 नहिं आहि आरत जानि कर प्राण बनाई ॥ ३ ॥ सब गुण युत द्विज भक्ति
 विमुख होयतेहि तजि भक्त स्वपचते मित्ताई ॥ ४ ॥ है व्यापक अज निर्विकार
 हरि निज जन हेतु रूप प्रगटाई ॥ विश्व रूप रघुबर कृपाल प्रभु वेगि ह-
 रो मन की कुटिलई ॥ ५ ॥ राज परज ॥ देखो रे हरि बिनु जीव दुखारे ॥
 ॥ परे ओट मति खोट भुलाने नाना भेद बिकारे ॥ निज स्वरूप सुखरूप
 सनातन सत् चित् वेद पुकारे ॥ ताहि न गहत बहत माया बस कामी
 काम कंधारे ॥ १ ॥ यह तन क्षणिक नित्य करि मानत अहमिति रथ
 पगु ठारे ॥ नेकु थिरात न भ्रमत दिवस निशि झूठे बिषय पसारे ॥ २ ॥
 सुत प्रिय वचन सुनत हरेषे उर तीय सो प्रीति अपारे ॥ धन संचत बहु
 भांति यतन करि अंत होत सब न्यारे ॥ ३ ॥ कसयासिंधु वसत घट भो-

तिर अजहूँ चित गजोरे ॥ विश्वरूप अंतहु यद्यतेहो जव जेहो यम द्वारे
 ॥ ४ ॥ भैरो ॥ चलत अंगनवां रघुवर चाल ॥ दयि आदन मुख मिल
 पठाये चितवत तिरिछे नैन विशाल ॥ १ ॥ बोलत श्याम मनोहर वानी
 सुनत समै जन होत निहाल ॥ २ ॥ लपन भरत संग सोहत शत्रुहन
 पैजनियो प्रगु देत है ताल ॥ विश्वरूप पितु मातु मगन भये लूटत रक
 घनद जिमि मालि ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ पुरि कर्महै जग में तासु ॥ अरण्य
 कय रसपान करत नित जीह निरंतर नाम प्रगासु ॥ १ ॥ नैननते हरि रूप
 निहारे शीस नवावे हृदय हुजासु ॥ करजोरे नित वंदन करई प्रेम प्रीति
 कवहूँ न अयासु ॥ विश्वरूप सतगुरु बलिहारी राम चरण महं जेहि नित
 वास ॥ २ ॥ भैरो ॥ नाथ अजहुँ मोहि करहु उवार ॥ नाथ मान करु नाथदया
 करो अनथन हे प्रभु अरन तुम्हार ॥ १ ॥ वनजनयन होवनजहित राजित
 वदन वनज रिपुसत रचिकार ॥ २ ॥ लक्ष्मी पति लक्ष्मी सागर प्रभु सब
 लक्षण गुण कर अंगार ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु देखु दया करि कोहि अपराध
 न सुनत पुकार ॥ ४ ॥ भैरो ॥ हरि इच्छा को मेटनिहार साहेब यक अहै
 करतार ॥ १ ॥ जो इच्छा सें करत दयानिधि दीनबंधु प्रभु परम उदार ॥
 २ ॥ जो सिरजत पालत सबही को हरत समै प्रभु कृपा अंगार ॥ ३ ॥ जि-
 नके जस मति देत कृपानिधि तिनके उर तस वसत विचार ॥ ४ ॥ सकल
 कर्म फल दाता रघुवर हय निर्लेप जगत आधार ॥ ५ ॥ भक्त हेतु प्रभु व-
 युधरि प्रगटन लीला करत सकल सुखसार ॥ ६ ॥ प्रथत पाल प्रणतारत मो-
 चन गावत वेद लहत नहिं पार ॥ विश्वरूप शरणागत आये पाहि पुकारत
 तुमरे द्वार ॥ ८ ॥ राग परज ॥ आनन्द रस पियो मनुवां हमारे येहिमें म-
 गन रहो निशिबारे ॥ १ ॥ जो रसपान किये सनकादिक मेटेउ सकल जगत
 को भारे ॥ विचरत सदा सकल लोकन में नहिं कछु गहत है हर्ष विकारे ॥
 २ ॥ पिय शुक्रदेव लहेउ मुख सागर मेटेउ हानि लाभ टकसारे ॥ यह रस
 को महिमा जानतु है शंकर शिवा पिये यकतारे ॥ ३ ॥ काग रोज पीयउ
 अन लई जीतेउ माया कान क्यारे ॥ जो पीवे सो युग युग जीवे निज सु-
 खते गावत श्रुति चारे ॥ विश्वरूप यह रस हिय आवे जव रघुवर पद करै
 अंगारे ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥ नहिं वनयोग अहै रघुवीर सुनत मवन वन समै
 अघोर ॥ १ ॥ भयेउ अचधपुर महं पछितावा लागेउ कठिन हृदय तिमितीर ।
 नर अशु चारि सकल पुरवासी भूख नोट नहिं कछुक शरीर ॥ २ ॥ विना
 खरि सब जहां तहां डोलत जैसे चलदल पत्र समीर ॥ हा विधि तोकहं

अस न चाहिये राम वियोग देत दुख पीर ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु बिना
 विकल भये यथा फणिक मणि बिनु नहिंथीर ॥ ४ ॥ भैरो ॥ चिकुटि भवन
 वां पियाचसे मेर ॥ बिना सूर शशि अनल अंजोर ॥ १ ॥ नहिं उपजै नहिं
 विनसै कबहुं आवत जात न कवनिहु और ॥ रात दिवस तहं होत कबहुं
 नहिं संध्या नहीं होतहै भोर ॥ २ ॥ आनन्द भरत एकरस निशि दिन सु-
 रति करै जिमि चन्द चकोर ॥ निरखि स्वरूप मगनभये मनमहं सहजै मिटै
 सकल भ्रमदोर ॥ ३ ॥ विश्वरूप धनि सोई सोहागिनि त्यागि सकल पिय
 चरण निहोर ॥ ४ ॥ भैरो ॥ ज्ञान खड्ग लेइ निशिदिन जागो वीर भावरस
 मनुवां पागो ॥ १ ॥ समदम फौज करो तैयारी धीर धरो रनते नहिंभागो ॥
 काम क्रोध दोउ रिपुको मारो करिले राज सकल भय त्यागो ॥ २ ॥ सुभग
 विचार प्रजाके बसावो छोडु सकल चित कलिमल दागो ॥ रामको नाम सुधा-
 रस पीयो तेरो बेगि जगत को धागो ॥ ३ ॥ विश्वरूप जनि गाफिल धरि-
 ये रामचरण करो दृढ़ अनुरागो ॥ ४ ॥ राग भैरवी ॥ कन्हैया मे.से होत न
 राचीरे ॥ चहुं दिशि डुंढत नहि कहुं पायो मधुवन भाजीरे ॥ १ ॥ चलहु
 मनावन सखि सब हरिको भूषण साजीरे ॥ विश्वरूप मुरली मोहन की सखि
 कहुं वाजीरे ॥ २ ॥ रागभैरवी ॥ भोरहिं श्याम न आवतरे ॥ श्याम मिलन
 को चितमैं चहतिहो इत सखि मोहिन भावतरे ॥ २ ॥ अबतो प्रीति कियो
 राधे सो कुंजन केलि रचावत रे ॥ विश्वरूप यशुमति लालन को चित-
 वनि चितहि चुरावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ मधुवन श्याम बुलावत रे ॥ लाल
 अधर मोहन के चहतिहो कित मगु कौन बतावतरे ॥ १ ॥ वंसीराग रुचिर
 मे हनको वरवस मनहि नचावतरे ॥ विश्वरूप बहु यतन करतिहो धीर-
 ज नेकु न आवतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ कन्हैया तेरो छबि दृग लांगीरे ॥ कुसुम
 कमान वान तें वेधे बिरहते पागीरे ॥ १ ॥ जलज नयन छबि अयन हरत
 मन सब निशि जागीरे ॥ विश्वरूप हरि कुंजन विहरो यह बर मांगी रे ॥
 २ ॥ भैरवी ॥ कन्हैया मोहि दोन्ह बिसारीरे ॥ गये परगेह सनेह बढायो
 सुधि न हमारीरे ॥ १ ॥ जेहगिरि वन महं केलि कियो है श्रीबनवारी रे ॥
 विश्वरूप सो थल निरखे तें दुख उरभारीरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ भोगहि योग न
 भावतरे ॥ गंग यमुनको धार दुरायो जलकन सोसपिवावतरे ॥ १ ॥ नित नइ
 नेह करत कुजरी सो रचि रचि योग पठावतरे ॥ विश्वरूप असमति मो-
 हन को सखि अब कौन छडावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ सो कहि योग दुरावत रे ॥
 इगल पिंगल सुख मन घर सो छन छन बोध जगावत रे ॥ १ ॥ जाइ

गगन विच भवन-बनावों जेहि थल काल न आवतरे ॥ विश्व रूप धुनि
 होत गगन में निशि दिन मनहि बसावतरे ॥ २ ॥ भैरवी ॥ जोकाहिं श्याम
 निहारतरे ॥ श्याम हरत मन तुरित ताहि को वरवस जादुहि डारतरे ॥
 १ ॥ काह कहैंसखि छवि आनन को विधि उर शोच पसारतरे ॥ विश्वरूप
 भूषण मोहन को छवि रवि कोटिन्ह धारत रे ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ गति
 यालखि नहिजाई तेरो हे श्यामा दृग चपलाइ रहत मन आइ खेरी ॥ सजल
 पयोढ सरिस तन राजे अंग अंग कसनीय कांति मनोहर निरखि मनोभव
 सकुचि सकुचि रहे हीय उपमा में किन कों गाइ ॥ १ ॥ गौ चरायन जात
 वृन्दावन ग्वाल बाल संग लीय जैसे मीन बिना जल प्यासे तराफि तराफि
 तजेजीय तुमने मोहि जादु लाइ ॥ २ ॥ विश्वरूप मोहन बनमाली जीवन
 धन ब्रज तीय ॥ बदन कंज मकरंद मधुप मन हरपि हरपि सोइ पीय ॥
 अवरना मोहि सोहाइ ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ उपमा कहि नाहि जाइ तेरो हे
 रामा छवि हचिराइ सुखद चित छाइ तेरो ॥ लखन सहित विहरत कसमा
 निधि नट बर साज करीय ॥ दितवनि मन भावनि अति सोहै पुलकिपुलकि
 उठेहीय ॥ सरसिज नयन सेहाइ ॥ १ ॥ सधन सोहावन बन विहरत हरि
 करशर धनुष धरीय ॥ बनचर जाति निरखि छवि हरिके भुक्ति भुक्ति चरण
 परीय ॥ दृगन तें पलक दुराइ ॥ २ ॥ विश्वरूप सुखरूप सनातन जनम न
 कंज अलीय ॥ करि हरि कृपा दरश मोहि दोजे बालि दुख देप दलीय ॥
 अबिचलि तेरो प्रभुताई ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ सुखमा अति अतुनाइ तेरो हे
 शंभो ॥ छवि ललचाइ रहत मन जाई तेरो ॥ कुंद कपूर सरिस तन राजे
 गल माला अहिकीय ॥ कर डमरू धुनि रुचि कर सोहे सुनत सुनत सुख
 हीय ॥ दुख दर्शन तें नसाइ ॥ १ ॥ वाम अंग गिरजा रुद्रंगी शोभा अति
 रमणीय ॥ शोसगंग रुचि चन्द मनोहर भालपट ल छविदीय ॥ भसम सुअंग
 सोहाइ ॥ २ ॥ विश्वरूप जगदीश निरंजन जनहित रूप धरीय ॥ बेगि द्रवो
 करुणा गुणसिंधौ तारेउ विपुल अधीय ॥ मेरो सुधि क्यो बिसराइ ॥ ३ ॥ राग
 भैरवी ॥ कन्हैया संगयारी नालै होरी ॥ यावंशी मेरो सरवस खोयो जादू
 कियो गिरधारी ॥ १ ॥ तबसों सुधिवुधि सब हरि लीन्हो नहि सोहात घर
 वरी ॥ २ ॥ विश्व रूप ब्रज लाल सांवरो हंसि हरि मोहि निहारी
 ॥ ३ ॥ राग भैरवी ॥ कडल दियो टारी नरे हेरे ॥ अंत समैया हरि
 विदुरायो पाछिल नेह बिसारी ॥ १ ॥ अब तो कन्हैया सुखसों सोयो राज
 काज भयो भारी ॥ २ ॥ विश्व रूप बिधि सब सुख खोयो पर बस

भयो वनवारी ॥ ३ ॥ राग ठुमरी ॥ हमारे मन साथे लई चितवनि ऐसी
छबियां ॥ अमल अभंग बाल रविकेछवि कुंडल भलक नई ॥ बोल अमोल
कलोल केलिवर मनसिज कोटिजई ॥ १ ॥ अचल प्रतोप राज सब दिशिभये
कीरति तेज मई ॥ दशरथ लाल कृपाल नृपति भये सब दुख दूरिगई ॥ २ ॥
बहूत निहारि निहारि नारि सब विधि सुख अवधि दई ॥ विश्वरूप सुख
धाम मिलो हरि जीवन सुफल भई ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ हमारे ब्रज वाते नई
सुनि आई सब सखियां ॥ नवल किशोर श्याम छवि छाये पटरत विधि
न दई ॥ कमल कुरंग मनोज लजित भये कोठ सनमुख न भई ॥ १ ॥
रैनि व्याज रविजाय छपित भये शशि तन छीनभई ॥ बाल तमाल सघन
वनमह गये तवि घन सघन रई ॥ २ ॥ कलमद त्यागि मीन भये कोकिल
जल निधि धार मई ॥ विश्वरूप यदुलालन के सम कविगण बचनगई ॥ ३ ॥
ठुमरी ॥ निहारी मन आपमई छांडि कपट मतियां ॥ अपने आपु आपुमह
मिलि गये पुरण रूप भई ॥ सब जल सिंधु सिंधु सब जल भये मिज पर
भेद मई ॥ १ ॥ जग मग ज्योति अगम उर छाये छन छन पुलक नई ॥
विश्वरूप पूरण सुखपायो गुरु पद अलख दई ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ विचारै बिनु
संचिभई देखो खोलि अब अखियां ॥ बांभ किशोर चापशर करलिये विहर-
न विपिन गई ॥ करि मृगया मन मोद बढाये गर्भ न जन्म लई ॥ १ ॥
धाइ बचन बाल सुनि विहारे मन अनुगम दई ॥ विश्वरूप जग अंध बंध
वस मनक्रियो विषय मई ॥ २ ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ का करव सांस्वंहुसंगिया ॥
ना सुने कंडल हमारि सखि रे ॥ मंद हसनि मन रोच नीरे शोभा अति
सुचिकारि ॥ कर मुरली मुखमें दियोरे अपना वसकरिडारि ॥ १ ॥ चन्दकि-
रनि मन मोहनोरे सोहे उर उजियारि ॥ विश्वरूप जलना भरव हो यमुना
हरि रखवारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ ना सुभत रघुवर बिनु अखियां ॥ को सहे
विरह कटारि सखि रे ॥ श्याम वरण मन मोहनो रे जैसे घन युतवारि ॥
मुख की शोभा जो कहै रे मदनामित छविधारि ॥ १ ॥ व्याज जिपिन सुख
मेचनी रे कीन्हो विधि वन चारि ॥ विश्वरूप अब ना जियेव हो बिकुरे
प्रण्य हमारि ॥ २ ॥ ठुमरी ॥ ना उरत छन छन मन रंगिया ॥ का कहो
बहुत पुकारि हरिहो ॥ काम कपट पटमोहनोरे ओढे रंग सवारि ॥ विषय
भवन बसि बोहरे हो सखियां संग सुधारि ॥ १ ॥ प्रीति चरण भयमेचनी
हो दीजे उर रखवारि ॥ विश्वरूप प्रभु ना बचव हो शरण भरोस बिसारि ॥ २ ॥
ठुमरी ॥ लखत रहहिं सख करे छवि अखियां ॥ नाटरे सुरति हमारी हर

हो ॥ चन्द्र भरल शुभ सोहनी रे गंग जटा दुखहारि ॥ अहि भूषण डमरू
 लियो हे गिरिजा वाम पियारि ॥ १ ॥ कुन्द वरण मन मोहनी रे कोटिन
 रवि उजियारि ॥ विश्वरूप उरमे ब्रसे अदशक हरणचिपुरारि ॥ २ ॥ ४ ॥
 ठुमरी ॥ भजे हरिहो काम कोटारी ॥ हृदय नयन उधारि देखो जगत दुख
 कारी ॥ ताहि मांह सनेह लाये विषय रुचि भारी ॥ १ ॥ शुभ अशुभ
 जंजीर तेरो वैठु घरहारी ॥ अलखरूप अनूप निरखो मोहमदजारी ॥ २ ॥
 विश्वरूप बिचार देखो विदित दशचारी । बिना राम दिनेश तेरो उर न
 उजियारी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ लखी छवि हो रामको न्यारी । टृग विशाल कु-
 पाल प्रभु के कंज रुचि धारी ॥ १ ॥ अरण्य कुंडल चपल राजे कुटिल कच
 कोरी । तिलक भाल भूपाल मणि के भानु उजियारी ॥ २ ॥ रुचिर वसन
 अमोल सोहे वाम सियप्यारी ॥ विश्वरूप सरूप हरिको ध्यान भयहारी ॥ ३ ॥
 ठुमरी ॥ चलो सखिहो श्यामके वारी ॥ शीत मन्द सुगन्ध सोहे छायोपवन
 गति न्यारी ॥ कुंज कुंज अनूप सोहे कुसुम रुचि कारी ॥ १ ॥ देखि छवि
 सुर रांज मोहै चकित चितभारी ॥ करत केलि मनोज मदके मथन वन-
 वारी ॥ २ ॥ रुचिर बोल अमोल सखिरे बिबस करिडारी ॥ विश्वरूप हमेस
 मनको हरत गिरधारी ॥ ३ ॥ ठुमरी ॥ लखी गतिहो ज्ञानको न्यारी । सुरति
 देत बिसारि तनके दशा मतवारी ॥ निज सरूप असंग विहरे जलज जिमि
 वारी ॥ १ ॥ ज्ञानके हरि भपटि छन में लपटि नख डारी ॥ लोभ मोह
 मनोजगज को अमित टल डारी ॥ २ ॥ विषम भेद कुभाष जगको कुमति
 मति टारी ॥ विश्वरूप अंदेश छूटो अभय वनचारी ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ यशो-
 मति वारो देखो रावरो कन्हैया मटुकि पटकि पट छीन लियोहै ॥ देतहै
 गारी कहा माने न हमारी कछु वरजेवनेकी परत हो पैयां ॥ १ ॥ आलिके
 वचन सुनि यशोमति मन गुनि बिहंसि मवने कछु उतर न दैया ॥ २ ॥
 विश्वरूप लखि भइहै मगन सखि ॥ भरोहै पुलक जल नयनन छैया ॥ ३ ॥
 ठुमरी ॥ हरी मन मेरो प्यारी सांवरो कन्हैया लटकि भवर मुख कंज
 दियोहै ॥ दूगसो निहारि हंसिमोहि वनवारी सखि ॥ तवसों ठगोरोघर न
 सोहैया ॥ १ ॥ शशिको निहारी जैसे तरु को पुलक भारी रविसों जलज
 पुलकावाल छैया ॥ २ ॥ विश्व रूप ऐसे छवि पट तर कैसे ॥ विधि
 मति छीन लियो ब्रज के वसैया ॥ ३ ॥ २ ॥ राग टोड़ी ॥ अंग छवि
 छाये घन नन्द के किशोर है ॥ मधुपुर नर नारी नयन पलक टारी ॥ हृदय
 निहारि बोलै कैसे चित चोर है ॥ १ ॥ कोटि कोटि सुर सोहै निरख मनोज

मोहै व्रज को सुभग ऐसे विधि से निहार है ॥ कमल नयन श्याम संग
 मोहै बलराम आये धनुमख जहां नृप को बटोर है ॥ १ ॥ मल्ल को पछारि
 मारे खल नृप नास डारे खंड खंड धनु तोरे जैसे तृन कोर है ॥ कन्स को
 भ्रष्टि मारे धरणि को भार टारे विश्व रूप छाये यस ऐसे शिर मोर है
 ॥ ३ ॥ राग टोड़ी ॥ संग दोउ आये वन मुनि के किशोर है ॥ एक संग
 सोहै नारी मुख छवि अति भारी मोहनो मनोज नारी रवि से अंजार है
 ॥ १ ॥ सुनि के पुलक छाये मिलने को मुनि आये नयन सनेह जैसे चन्द
 से चकोर है ॥ चित्र कूट के निवासी मुनिवर तपरासी भयो है मगन देखि
 जैसे घन मोरहै ॥ २ ॥ पुर जो पथिक ग्राम लखि प्रभु छवि घाम करत
 अंदेसो कैसे जनक कटोर है ॥ विश्व रूप सुरनाथ कहै पगु धरि माथ
 रघुवीर वेगि हरी भार चहुं ओर है ॥ ३ ॥ २ ॥ राग बहार ॥ श्याम हमारा
 भावरी ॥ सुख दाहरी वसन्त सुंहावनो ॥ फुलवा फूले वन भवरा लोभैले
 ठौर ठौर गुन गावरी ॥ १ ॥ सचि सह कार बहारि मौरिलो कुसुमा कर छवि
 छावरी ॥ २ ॥ विश्व रूप व्रज वंसिया वजायो सुनत भई हम वावरी ॥ ३ ॥
 बहार ॥ राम पियारा आवरी सुख दाहरी वसन्त पंचमी ॥ बगिया फूले घन
 वनवां फूलैलो मधुप मधुर धुनि छावरी ॥ १ ॥ मोतिया घने घन घनवां
 लुटायो अवध प्रेम वसवावरी ॥ २ ॥ विश्व रूप दशरथ के छवीलो हांसि
 हेरै करि भावरी ॥ ३ ॥ २ ॥ राग होरी ॥ आजु की वारी मानि क्यों लेरे
 कान्हा ॥ बिनति करी मैं पायन करि के जनि करु मोते रारी ॥ यदुनन्दन
 वरजो लरिकन्ह को राखहु लाज हमारी ॥ १ ॥ जिन डारो रंग मोहन मोपर
 भिजजैहै रंग सारी ॥ हमतो जैहैं अपने भवन को छोडु डगरं गिरिधारी
 ॥ २ ॥ सुनत सखी कर बचन मनोहर तिरछे नैन निहारी ॥ विश्व रूप
 वरजो नहि माने श्याम दियो रंग डारी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ हाल की
 सारी फारि काहे दीन्ही कान्हा ॥ फागुन मस्त बाल संग परिके वाउर बो-
 लतुहारी ॥ लाज न सहिहों तोरे संग बसि के होइहै हांस हमारी ॥ १ ॥
 तजदे कुवाद बाद अब मोहन छोडु घाटर वारी ॥ हमतो यमुन जल जैहैं
 भरन को जिन रीको गिरिधारी ॥ २ ॥ नन्द नगर कोइ नृप ना वसेरे जो-
 करो नेति विचारी ॥ विश्व रूप हरि हेरि नयन सों हांसि दीन्ही वनवारी
 ॥ ३ ॥ होरी ताल जलद ॥ कान्हा खोरि में करत रंग बोरिरे ॥ जात रही
 हम कुंज भवन महं जहां रहत पिय मोरिरे ॥ बीचहि महं अस हाल
 कियो सखि यदुनन्दन वर जोरिरे ॥ १ ॥ मुख में दियो है गुलाल लगाइ

रतन हार लियो छोरिरे ॥ काह कहों में नन्द नगरमहं होत धूमधहुं
 ओरिरे ॥ २ ॥ अति उत पात करत ब्रज बालक कर गहि देत मरोरिरे ॥
 विश्व रूप मोहन मंतवारें रंग मच्चवे ब्रज होरिरे ॥ ३ ॥ होरी ताल
 जलद ॥ कान्हो चोरि से हरेत पठ मोरिरे ॥ जाय सबी हरि यमुन पु-
 लिन में नागर बाल बटोरिरे ॥ सब ग्वालिन पट छीनि लियो हरि गर
 मूषण दियो तोरिरे ॥ १ ॥ जल में कियो है कलोल कन्हई संग सोहत
 बल जोरिरे ॥ काह कहों में नट नागर सखि धूम रचो हरि होरिरे ॥ २ ॥
 कवहुं कदम चठि जात कन्हई जल बिच परत भकोरिरे ॥ विश्व रूप सखि
 यशुमति बारे हंसि हंसि हाथ मरोरिरे ॥ ३ ॥ होरी काफ़ी ॥ वृन्दावन
 पावन श्याम लोभाये ॥ चहुं दिशि गुंजन पुंज भवर को सुख सागर धुनि
 मोद चढ़ाये ॥ १ ॥ कर पिचुकारी अवरि कुम कुमा भरि कानिन रंग नभ चहुं
 छाये ॥ विश्व रूप के प्रभु हंसि हेरत बसत बाग होरि कान्ह मचाये ॥ २ ॥
 होरी काफ़ी ॥ वृन्दावन लालन फागु मचाये ॥ चलो सखि देखन नन्द
 कुवर को छवि सागर शत काम लजाये ॥ १ ॥ उड़त अरगजा गुलाल
 कुम कुमा मन भावन सुख अमित सोहाये ॥ विश्व रूप के प्रभु मन मोहन
 चहत साथ मोहि नाय बोलाये ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥ काहे को नेह लगाइ
 रे माई नन्द के बाला ॥ नेह लगाई मोहनी डारे कान्ह कान्ह चित छई
 ॥ १ ॥ नेह बढाई सांवरो मोहि विश्व रूप बिसराई ॥ २ ॥ होरी जंगला ॥
 काहे को प्रेम बढाई रे माई नन्द के बाला ॥ प्रेम बढाई द्वारिका बैठे श्याम
 वाम अरुभाई ॥ १ ॥ घर न सोहाई वावरी कीन्हो विश्व रूप सुखदाई ॥
 २ ॥ होरी ॥ लाल कुचाल न धारो ॥ अब बोलो न निलज देहां गारी फोरि
 देहां घट भारो ॥ नन्द वारो न नजरि लैहां तोसे लूटि लैहां धन प्यारो ॥
 १ ॥ रंग वारो न विगारि जैहै सारी छूटि जैहै रंग सारो ॥ विश्व रूप प्रभु
 पैयां गहतहें चंचल दुगन निहारो ॥ २ ॥ होरी ॥ लाल कुचाल न प्यारो ॥
 संग जेरो न बिकारि जैहो मोसे छेड़ि देहो मंतवारो ॥ रंग डारो न नजरि ला
 वो मोसे खेई देहो पटसारी ॥ १ ॥ हंसि बोसो न विगारि जैहो माधो मोहि
 देहो दुख भारो ॥ विश्व रूप प्रभु अरज करतहो मोहन हंसि न निहारो ॥
 २ ॥ होरीधी माता ॥ होरि खेले रि मोहन धाय धाय ॥ खेलत रंगसंग ग्वाल-
 न लै ब्रजवासिन सो जाय जाय ॥ १ ॥ डारे अवीर तोर यमुना के पिचुका-
 रिन रंग लाय लाय ॥ छीनत विश्व रूप भाजन को दधि ग्वालिन के खाय
 खाय ॥ २ ॥ होरीधी माता ॥ प्यारि अवेरि मोहन पांय पांय ॥ हेरत श्याम

वाम नयनिनकी, वनमालन को लाय लाय ॥ १ ॥ डारत रंगसंग, सखियन्ह के
घने वृन्दन से, छाये छाये ॥ हेरत विश्वरूप लालन को, सखि रागन-को
गाय गाय ॥ २ ॥ हेरी ताल जलद ॥ कान्हा तोरि भारि नजरिया कवन-बिधि
टारो ॥ तोरि नजरिया अंग में लगेरि मोरिहाल निहारो ॥ १ ॥ नन्द किन-
गरिया रंग से भरोरि मेरी काह पियारो ॥ विश्वरूप प्रभु संग में वसेरी
चेरीश्याम तुम्हरो ॥ २ ॥ हेरी ताल जलद ॥ कान्हातेसे हाकी नगरिया
कठिन नन्द वारो ॥ तजव नगरिया अवन वसेरि घेरी राह हमारो ॥ १ ॥
चटक चुन्दरिया रंग से भिजोई मेरी साज बिगारो ॥ विश्वरूप प्रभु हंसि
के मिलोरी दे दृग श्याम निहारो ॥ २ ॥ हेरी जंगला ॥ आजु नारंग लालरे मै
तो छाडिं गि अबिर गुलाल सैयां ॥ पिय तेरे वैन सोहावन लागेचाहै चित
निशवार ॥ जारो काम मिलि हेरी खेली राखे नाथ करार ॥ १ ॥ अपने भवन
सोहावन लागे ज्योतिन्ह की उजियार ॥ विश्वरूप हरि हेरिमचायो छूटी
साज हमार ॥ २ ॥ हेरी जंगला ॥ छाडि दे जंगल रेजे पेचाहो रि लालगुलाल
सैयां ॥ आवो भवन प्रिया फागुन आयो हेरीके दिन चार ॥ डारो रंग संग
हेरिखेलो लागी आस हमार ॥ १ ॥ केस सवारि सिंगार बनायोलाखों की गल
हार ॥ विश्वरूप प्रभु मिलिरंग खेली लागे फागु बहार ॥ २ ॥ राग हेरी जंग-
ला ॥ नाहकरे मोहि रंग से भिजोई ॥ आवन सुनिके श्याम डगरिया हो छाडि
मिलेहिय गाहकरे ॥ १ ॥ आजु चलै हो श्याम नजरिया हो देहो नयनाजिय
डाहकरे ॥ २ ॥ विश्वरूप प्रभु न जेहों संगियातु अलिनिचित चाहकरे ॥ ३ ॥
राग हेरी जंगला ॥ सावन रे मोरिअखियां लगेई ॥ मोहन चितवो हंसि
के नजरिया हो कियो जियराके बावतरे ॥ १ ॥ बैरिन घरमें मोरिनन्दिया हो
करि देहे जगमें रावलरे ॥ २ ॥ विश्वरूप तेरो दृगधर छबिया हो हम सबस
घन पावलरे ॥ ३ ॥ राग हेरी जंगला ॥ हेरिखेलत रंगिली श्यामसंग छबि सद-
न सोहावन वदनरंग ॥ मोहित सकल निरखि ब्रजबासी सुनत राग मोहनि
उमंग ॥ १ ॥ खेलत रंग रुचिर कुंकुम सोरीरी भालरमनी सुअंग ॥ २ ॥ गावत
श्याम ललित गत छाये वजत वीन सुरलीमृदंग ॥ ३ ॥ विश्वरूप सुख घन
अबिनाशी तरनि कोटि दुति छबिअनंग ॥ ४ ॥ हेरी जंगला ॥ हेरि खेलत
रंगिली रास संग ॥ रवि सुभग सिंगार बिहार रंग ॥ १ ॥ डारतरंग लपन
पिचुकारी सजत रंग जलनिधि तरंग ॥ २ ॥ बालक वृन्द अवध नर नारी
खेलत संग जिमि रति अनंग ॥ ३ ॥ गावत रागसकल मनहारी वाजत डफ
डोलक मृदंग ॥ विश्वरूप त्रिभुवन पति प्यारी सजलमेध दामिनि सुअंग ॥

४ ॥ होरी काफ़ी ॥ मोहि भावै संवलिया कि चालरी कैसि सोहै छवि रीरी
 भाल ॥ वांकेभौंह नयन रतनारे पंच रंग सोहै वन मालरी ॥ १ ॥ भरि भरि
 रंग कनक पिचुकालै भुकि डालै नन्द लालरी ॥ अंवर लालगुलाल बटन भरे
 संग लीन्ह ब्रज बाल री ॥ ३ ॥ विश्वरूप मोहन विनुदेखें जलविनु मीन कि
 हालरी ॥ ४ ॥ होरी काफ़ी ॥ मोहिलागी संवलियाकी चालरी ॥ अत्र न जियो
 मैं नन्दलाल ॥ भूपन भार भवन नहिभावै नौद नयन नहि आवरी ॥ १ ॥
 मोहन मधुपुर जाय लोभाने शोच अधिक उर छावरी ॥ २ ॥ फ़ागुन राग रंग
 नहि भावै शोक विरह उर दावरी ॥ ३ ॥ विश्वरूप मोहन नहि माने नाहक
 नेह लगावरी ॥ ४ ॥ होरी तालजलद ॥ हम नही खेलब तोसे होरि पुरज-
 नकसंग ब्रज खोरी ॥ बरजोरि कहत गहत कर यदुवर वे सर मचले मगु
 छोरी ॥ पांय परी श्याम तोरिसंग न खेलोगी होरि चुन्दरि विगारि गइमोरी ॥
 १ ॥ मुखमोरि हंसत बसतलरिक्कन्ह संग वेदरद खेलेरंग होरी ॥ छांडो ब्रज
 विश्वरूप कैसे कै बसोगी सझ मुंदरि छिनत बरजोरी ॥ २ ॥ होरी तालजलद ॥
 तुम दई विरह मोके होरि सबछन कि हाल नइतेरि ॥ संग जोरि करत
 हरत सब करमन वे चलनचलै चहुं औरि ॥ भावे करो सोइ सोई मान न
 करो रिहोई गुजरि मलतमुख रोरी ॥ १ ॥ दधि मोरि हरत उरत नहि नट-
 वर वे कहल सुने नहि मोरि ॥ छाड़े वनै और संग विश्वरूप होरिरंग कुवर
 करत बरजोरि ॥ २ ॥ होरी ॥ छयल गही करमोरी हो होरी ॥ मैजो सुनी
 मोहन गये वनको लरिक्कन्ह संग लियोरी ॥ चपलन चारि करि नेह लगायो
 छवि छायो सो हियोरी ॥ हरिये कंज नयन मोहि मगुमें मिलोरि मैं लखि
 के भई मोरी होहोरी ॥ १ ॥ कुंडलभलक अधर रतनारे केशर तिल कियोरी ॥
 ॥ अपने हार मोहि पहिरियो चित भायो सो दियोरी ॥ हरिये नन्द छ
 यल मोहि मन मैं बसोरि मैं इनके संग जोरी हो होरी ॥ २ ॥ कर पिचुकारी
 कंचन केरी छवि अपने लवनोरी ॥ विश्व रूप मन सों छवि भायो पायो
 सो जियोरी ॥ हरिये मन्द हसनि मोहि उर में लगेरी मैं घर कोदई छोरी
 हो होरी ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ होरी खेलत श्रीअवधेश ॥ देवन्ह संग लिये ॥
 चतुरानन लावत मुखरोरी डारे गुलाल गणेशरे ॥ देवन्ह सं० ॥ १ ॥ गिरिजा
 नाथ लिये पिचुकारी ॥ भोरि अवीर सुरेश ॥ देव० ॥ २ ॥ गावत नाचत किन्नर
 गय सब छिरकत रंग जलेशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ विश्व रूप प्रभु जनक किशोरी
 रघुवर शरण हमेशरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ होरी काफ़ी ॥ घर कैसे कजैहों बीच खड़े
 अवधेशरे ॥ नयन शयन करि भेजत लरिक्कन्ह घेरि लैत चहं देशरे ॥ १ ॥

जिमि दामिनि घन ललित विराजे कोटि काम रुचिबेशरे ॥ २ ॥ विश्वरूप
लखि जनक वंदन कृति मोद सिधुपरवेशरे ॥ ३ ॥ होरी जंगला ॥ यमुना
कैसे कैहो भुक्ति डारत हरि रंगरे ॥ फोरत गागरि भूषण तोरत राखिलेत
निज संगरे ॥ १ ॥ हंसि हंसिरारि मचावत मोहन गारा देत वडवंगरे ॥ २ ॥
ग्वाल सखा सबचौहट ठाढ़े विश्वरूप भरेरंगरे ॥ ३ ॥ होरीजंगला ॥ होरी
कैसे मचैहो राग द्वेष दोउ संगरे ॥ फागु साज सब छीनलियो है फौज घ-
नेरो जंगरे ॥ १ ॥ क्रिये पैसार नगर महं बलते ममता मोह अनंगरे ॥ २ ॥
सब कह भयो है अगम दुख सागर, नेक नहोत उमंगरे ॥ ३ ॥ विश्व रूप
यह अवसर नोके नहिं मन होत उमंगरे ॥ ४ ॥ होरी काफो ॥ सोहतआजु
नई श्यामा श्याम को जोरि ॥ कुंज भवन में माघो आये राघे संग लई ॥
करत कौल भरे प्रेम रंग दोउ रस बस मगन भई ॥ १ ॥ गावत ग्वालउ-
मंग छाव उर वाजत बोन रई ॥ विश्वरूप ब्रज श्याम सिधारे गोपन्ह मोद
दई ॥ २ ॥ होरी काफो ॥ होरी कुंजन आजु भई श्यामा श्यामसो ॥ बाल
यूथसंगमोहन लोन्ही करिकरि साज नई ॥ ग्वलिनियूथ सिंगार राजिके राघे
साथ लई ॥ १ ॥ नाचत श्याम नचावति राघे हंसिहंसि तालदई ॥ विश्व-
रूपकृति हेरत हरिके सबसखिश्याम भई ॥ २ ॥ होरी काफो ॥ खेलतलछमन
रामफांगरी ॥ आय सुरेश सहितसुरमुनिवर कृबिनिरखतमनिअमिय पागरी ॥ १ ॥
छायो उमंग अवध पुरजन कह हेतसरस घुनिसुमंग रांगरी ॥ २ ॥ सरयू
गंभीर तीर कृबि घन अति रंग रुचिर भानो बहन लागरी ॥ विश्वरूप
कृबि निरखत पुरजनरंक घनट जिमि अमित भागरी ॥ ३ ॥ होरी काफो ॥
तूमेरे श्याम लियोरी ॥ कुंजन फागखेलत सखिहरि सो देखत करक हि-
योरी ॥ १ ॥ सब को भाग अघर मोहन के छीनि अकेलि पियोरी ॥ २ ॥
चंपल अमल दृग टोनालाई निज बस प्रभुहिं कियोरी ॥ मिलति राधिका
हंसि मोहन सो दृग मुखचन्द्र दियोरी ॥ २ ॥ विश्वरूप भइ मगन बारि
जिमि तलफत मोन जियोरी ॥ ३ ॥ होरी टुमरी ॥ नृपति सुतन बरल-
गायो प्रेरि और ॥ सकुचानी जानी हरिभेटे होरि खेलेवर जोर ॥ १ ॥ वि-
श्वरूप रघुवर रंग डारत भई चू दर सर वोर ॥ २ ॥ भैरो ॥ होरी खेलत
जनक नन्दनी रघुवर और निहारी ॥ केसर आविर् गुलाल उडावती छिरके
कनक पिचुकारी ॥ १ ॥ देव बधू सबनाचत गावति सुरगतिताल संवारी ॥ २ ॥ होत
उमंग रंग खोरिन्ह मह रुचि वही चिबिध वयोरी ॥ विश्वरूप भयो फागु सु-
फल अब तन मन प्रभु पद वारी ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ नन्दकुवर बलराम श्याम

टोड खेलत ब्रजमें होरी ॥ अपना अपना यूथ बांधि केसखि सब खेलरचोरी ॥
 कोड गावत कोड राग सराहति कोड नाचति चिन तोरी ॥ १ ॥ कोड मो-
 हन कहं पान खवावति कोड चूमति सुख मोरी ॥ कोड वसन भेवति पि-
 चुकारिन्ह चहुं दिशि रंग चुवोरी ॥ २ ॥ कोड कहै हरि जाने न पावै घेरि
 लेहु चहुं खोरी ॥ विश्वरूप मोहन छवि सुन्दरराधे नयन लगेरी ॥ ३ ॥ राग
 भैने ॥ काशी पुरि गिरिराज किशोरी सहित खेलत हरि होरी ॥ विघन
 हरण गण-पति गुण सागर रुचि कर साज कियोरी ॥ डंफ बजावत नाचत
 गावत प्राण-पति तल लियोरी ॥ १ ॥ करि शृंगार अमर तिय निरखत
 हर मुख नयन लगेरी ॥ गावत रुचिर सुनत सुख टायक सब उर ठमग
 बढोरी ॥ २ ॥ डोलक बोन बजावत तुंगुर वरुण रंग छिर कोरी ॥ अवरि गु-
 लाल उडावत धन पति सुरपति हरण भरोरी ॥ ३ ॥ चतुरानन बोलत धुनि
 जय जय हरि लावत मुख रोरी ॥ विश्वरूप विश्वेश नगर की उपमा
 काझे करोरी ॥ ४ ॥ होरी ॥ सब जाडरे आजु सेई सजि आभरण छाये
 मन में बाँठ सुनि सुनि के धावत पगु डारि भुंकि भुंकि ॥ १ ॥ जोइ आवे
 नेहि संगहि जोरे यूथिया बटोरे बाल नारि जत जावै मुक्ति मुक्ति ॥ १ ॥
 आये तुरंत जनकजा कंत के देखि रही दुग डारी रुकि रुकि ॥ राम सिया
 अस खेलरचो है बाट न सूभै बाजि रही धुधुकारी धुकि धुकि ॥ छाये उ-
 मंग सवन के अंग में डारि देत पिचुकारि टुकि टुकि ॥ ग्वाल बाल सब
 संग सखा लिये विश्वरूप गारी गावै लुकि लुकि ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥
 तन में ब्रज आई वनोरी इन्द्रिय गण सब सखिय वनो हेसम भूषण पहि-
 रोरी ॥ रुचिर बिचार पहिरि अंबर शुचि जग मग ज्योति जगोरि काम मद
 सकल भगेरी ॥ १ ॥ विमल विराग वनो विन्द्रावन यमुना सुरति बढोरी ॥
 ज्ञान सुरंग प्रीति पिचुकारी सब सखि मिलि छिरकोरी खेला आतम संग
 होरी ॥ २ ॥ अनहद शब्द उठत निशि वासर बहु विध धुनि गरजोरी ॥
 विश्वरूप खेला अस होरी आनन्द रंग मचोरी प्रीति प्रीतम सेां करोरोरी
 ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ ब्रज में जिन आजु वसोरी ॥ ग्वाल सखा सब संग
 लियो है टूटत फिरत मुरारी ॥ जेहि पावत तेहि रंगहीमे वीरत बहियां
 पकर भक भोरी खोल-दृग उतचित्त ओरी ॥ १ ॥ घेरि लियो हरि सब
 सखियन मिलि राधा मलत मुख रोरी ॥ विश्व रूप छवि देखि श्याम की
 अति आनन्द बढोरी भलो यह खेल सचोरी ॥ २ ॥ होरी काफी ली ॥ ब्रज में
 हरि पागु मचाई ॥ करि शृंगार राधिका बहु बिधि गज गामिनि रुचि

राई ॥ गूथगूथ सखि संग आपनी लइ यदुपति पहं आई ॥ जलट टामिनिछवि
 छाई ॥ १ ॥ भूषण बसन विविध पहिरे सखि वरण अनेक सोहाई ॥ सकल
 भुवन की सकल संपटा प्रति प्रति अंग लगाई ॥ धनद लखि बहुत लजई ॥
 २ ॥ उड़त अबीर भरी नभ माहि चहुं दिशि भइ अरुणाई ॥ मोहन पर
 छिरकत पिचुकारी रोरी वदन लगाई ॥ श्याम मुख निरखि लोभाई ॥ ३ ॥
 वीन सितार ताल डफ बाजे सुनत उमग अधिकाई ॥ विश्वरूप राधे
 मोहन दोठ होरी खेलै हरपाई ॥ सिंधु जिमि सरित समाई ॥ ४ ॥ काफ़ी
 की होरी ॥ हरि होरी अवध में मचाई ॥ महा राज शिरनाज भूप मणि
 दशरथ सुत सुखदाई ॥ राम लपन अरु भरत शबुहन जोरी अतुल सोहाई ॥
 अमित रति पति छवि छाई ॥ १ ॥ डारत रंग राम पर लछमन रोरी भर-
 रत लगाई ॥ रिपु सूदन हाटक पिचुकारी भरि भरि रंग चनाई ॥ पीते पट
 हरि के भिजाई ॥ २ ॥ मास्त नन्दन वीन वजावत भालर लिये कपिदाई ॥
 ठोलक रुचिर वजावत अंगद सुनि मन हरत लोभाई ॥ पांथक कह लेत
 बोलाई ॥ ३ ॥ कपि दल करि सब सज मनोहर गावत आविर उड़ाई ॥
 विश्वरूप रघुनाथ सखा सव आनन्द दधि न समाई ॥ रंक जिमि सब निधि
 पाई ॥ ४ ॥ होरी काफ़ी की ॥ नित हे रि खेलो हरपाय प्रभु पहं जाइके ॥
 सुरति निरति पिचुकारि करो यह ज्ञान को रंग बनाइ छिरिकु चित लाय
 के ॥ शम दम तोष अबीर उड़ावो टसहुं दिशा में छाई ॥ काम क्रोध मट
 लाज छोड़ि के मिलु निज रूपहि धाई ॥ कपट विसराई के ॥ २ ॥ अहमित
 भेद लगे निशि वासर प्रेम प्रीति उरलाई ॥ विश्वरूप गुरु जन फगु-
 गहु आत्रागवन नसाई ॥ भुलो बत आई के ॥ ३ ॥ होरी ॥ सैयां हमरे वि-
 देश सिधारे कासे में खेलोगी होरी ॥ समु नन्द दुख देति है दास्य
 सवति करै वरजोरी ॥ दुख को मूल परोस मलो है कैसे मैं बासवसोरी ॥
 ॥ १ ॥ खान पान मोहि कछु न सोहाई भूषण भार लगेरी ॥ चिन्ता अनन
 दहत निशि वासर नैनन नार बहोरी ॥ २ ॥ नहिं अ.ए नहिं पति पठाये
 केहि विधि धीर धरोरी ॥ फागुन मास विते ऐसे मखि कवन उपाय करोरी
 ॥ ३ ॥ गुरु के वचन सोहावन मगु वरतू धनि बेगि चलोरी ॥ विश्वरूप
 सहजहिं पिय पैछे मन करहिरिसि टरोरी ॥ ४ ॥ होरी काफ़ी ॥ मैं न
 खेलौ तोसे होरीरे ॥ नाहक मोसे करत वरजोरी ॥ १ ॥ लरिकन साथ हाथ
 पिचकारी भिजइ चुनरि सवमोरीरे । घाट वाठ मंह रोकत टीकत वरवम-
 हाथ मरोरीरे ॥ २ ॥ नन्दवबा जिसें जायकहोगी, ऐसे हालकियोरी ॥ विश्व-

रूप ब्रज राज निराखि छवि विहंसि सखी मुख मोरी ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥
 रघुवर जर्नल किशोरीरे यूय यूय मिलि खेलत होरी ॥ बढो है उमंग तरंग
 भरोहै रंग अघधि की खोरीरे ॥ जिमि वरदेष परम रुचिकर धरि रति मन
 सिख सोहै जेःरीरे ॥ १ ॥ सब तिय चढ़ि चढ़ि निरखै अटारिन सुरतिय
 सरिस बनोरी ॥ विश्व रूप महाराज राम के भाल तिनक सोहै रोरीरे ॥ २ ॥
 होरी काफी ॥ अंखियां लगे बनवारि सखिरे ॥ कल न परे विनु देखे सुरा-
 रिरे ॥ १ ॥ चपल नयन चित बनि अति सोहै हास मनोहर कारीरे ॥ चाल
 खेहावन श्वाल ह्याल संग कोटि काम छवि धारीरे ॥ २ ॥ भूपन पट धारे
 रुचि कारे मनहुं ताडित उजियारीरे ॥ विश्वरूप प्रभु नट नागर संग
 होरी खेलो रंग डारीरे ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ अब न कान्ह संग मति कोइ
 जारे यमुना नागरि सोरि छीन लियेरे ॥ अये अचानक चीर हरत हैं मानेन
 सखि सशोमति के वारे ॥ विश्व रूप येरि नन्द छवीलो मनसोहन सब पर
 रंग डारे ॥ २ ॥ होरी काफी की ॥ यदुवर संग खेलोगि होरी ॥ कोमल वा
 लु पुलिन यमुना के छवि रमनीय बनोरी ॥ अमित काम सम श्याम मनो-
 हर नै सखि संग चलोरी वेगि जानि बिलम करोरी ॥ १ ॥ कोठ कहै कंचन
 तें सुन्दर झुसुम सुगन्ध भरोरी विविध बयारि नहै रुचिकारी मिलि झुलि
 फःशु रचोरी ॥ विहंसि बोले ऐसी गोरी ॥ २ ॥ ब्रज मोहन पहं सखि सब
 चलि के साज संकारि गहोरी ॥ विश्वरूप प्रभु होरी खेलो सो सों विनय
 करोरी ॥ सखी सब पांय परोरी ॥ ३ ॥ होरी भैरों ॥ ज्ञान भवन पिय होरी
 खेलै सखि आपु अनाहट वाजे ॥ निज निज रंग न डारति सखि सब वैठि
 दर्शो टरवाजे ॥ १ ॥ तुरिया रूप भलक अति सोहै उजियारी चहुं छाजे ॥
 निरखत रस बस भइहै मगन सखि पूरख फागु विराजे ॥ २ ॥ जगको लाज
 काज सब तेरो कर्म कुटिल सब भाजे ॥ विश्वरूप लगे नेह पियासों रंग
 अजःख सब साजे ॥ ३ ॥ होरी काफी ॥ राम लपन सिय होरी खेलै आजु
 उमंग चहुं छाजे ॥ आई सखी निज यूय बनःई पहुँचि सबै दरवाजे ॥ १ ॥
 रतन जाडित आसन पर बैठे भूपन अमित विराजे ॥ होरी कीच मची चहुं
 जेरी वरपत धन जिमि गाजे ॥ २ ॥ सकल भूति मूर्ति धरि धरिजे करों
 नितक शिर ताजे ॥ विश्वरूप सतगुरु परजे विनु हात न दृग अनुरागे ॥
 ३ ॥ होरी भैरों में ॥ मुनि समाज मिलि चिचकूट मह रघुवर खेलत होरी ॥
 नव तीरथ निज निज विभूति युत रूप अनूप धरोरी ॥ आये जहां रघुवीर
 जानकी रघुकुल चन्द चकोरी ॥ १ ॥ अये सुरेश शेष विधि शंकर सहित

नगेश किशोरी ॥ वनचर वृन्द सखा सब आये विशद समाज भरोरी ॥ २ ॥
 सुर वनिता सब बनि बनि आई बसन तड़ित छबि छोरी ॥ तेहि समाज
 शोभा को बरने शरद मति सकुचेरी ॥ ३ ॥ केसरि रंग अबीर उड़ावति
 डोलक बीन बजोरी ॥ विश्वरूप जग भूप राम छबि जिमि रबि उदय भयो-
 री ॥ ४ ॥ हेरी ॥ सोई फागु मन भावै ललारे हेरि खेलै पै रंग न लावै
 ॥ १ ॥ आवति सखि सब साज बनाइ निज निज भाव दिखवै ॥ ता महं
 नेकु नजर नहि लावै त संग खेल मचावै ललारे ॥ १ ॥ अवर ओढ़ि दिगम्बर
 हेवै मुख रोरी न लगावै ॥ विश्वरूप अस फागु लागु जेहि युग युग अमर
 कहावै ललारे ॥ ३ ॥ हेरी ॥ हेरी खेली पिय संग आपने फागुन समय
 भलोरी ॥ प्रति सुंदरिओ चटक रंगनि कीनिशि बंसर पहिरोरी ॥ इन्द्रिय
 समन सिंगार बनावौ जग मंग ज्योति जगोरी ॥ १ ॥ बिमल विवेक बिराग
 सोहावन सिंदुर भाल करोरी ॥ सुमति सखिनको साथ मिलावो कुमति सवति
 को तजोरी ॥ २ ॥ है पर पुरुष मोह परि पंथी जनि इन कहं निरखोरी ॥
 ज्ञान अमल पिचुकारी बनो है पूरण रंग भरोरी ॥ ३ ॥ हंसि छिरकति आ-
 तम सुख घन पर भेद भाव बिसरोरी ॥ विश्वरूप जग शोधनि नोकी जो
 अस फागु रचोरी ॥ ४ ॥ हेरी काफो ॥ ऐसो भैरव खेले होरी ॥ करिसमा-
 ज सुर राज देव गण निज निज यूथ बटोरी ॥ आये सब महाराज सभा
 में चहुं दिशि भीर भयोरी ॥ सकल मुनि वृन्द भरोरी ॥ १ ॥ आये बिष्णु
 चतुर मुख शंकर ज्योति सभा पसरोरी ॥ जिमि राकेश दिनेश अमित शत
 युगपत उदय कियोरी ॥ रुचिर अति ज्योति लगेरी ॥ २ ॥ भूत बैताल
 साज करि सुन्दर करि निज यूथ खंडोरी ॥ छिरकत रंग अबीर उड़ावत
 बाजा अमित बजोरी सुनत सुख सिंधु बढोरी ॥ ३ ॥ डारत रंग परस्पर
 सब कोइ आनन्द रंग मचोरी ॥ विश्वरूप भैरव टरबारहि भुवन भूति
 निवसोरी ॥ अचल नहिं नेकु चलोरी ॥ ४ ॥ हेरी ॥ देखो सखी ब्रज घूम
 मचोरी ॥ वासरनाहिं कोई निकसन पावै नन्द लला अस कोट रचोरी ॥ १
 रंगन बोरत होरत पटकों ऐसो हाल करोरी कोउ इत नाहि बचोरी ॥ २
 विश्वरूप ब्रजराज सावरो ग्वालनि कर गहि आपुन चोरी ॥ ३ ॥ हेरी
 काफो की ॥ सैयां होरी खेली मोसो जात है फागु बहार ॥ कान्ह तुम्हेवि-
 न कछु न सोहाई लागत भूषन भार ॥ १ ॥ डारो रंग प्रभु पैयां परतहो
 वीती जात बहार ॥ २ ॥ विश्वरूप प्रभु चतुर शिरोमणि राखी लाज हमार
 ॥ २ ॥ जेमी लंगला ॥ तू मेरे श्याम लियोरी ॥ कंजन बाजति हरि अघ-

रन में देखत कर कहियोरी ॥ १ ॥ सबको भाग अधर मोहनके छीनि अ-
 केलि प्रियोरी ॥ चपल अमल दुग टोना लाई निज बस प्रभुहि कियोरी ॥
 २ ॥ मिलति राधिका हंसि मोहन सेा दुग मुख चन्द दियोरी ॥ विश्वरूप
 भइ सगन वारि जिमि तलफत मोन जियोरी ॥ ३ ॥ हेरी जंगला ॥ सखी-
 री मन मोहन को हेरी आज खेलै है ॥ आज कहुं भागन नहिपैहै वाह
 प्रकरि विनमैहै ॥ १ ॥ डारोंगि रंग अंगपर हरिके मुखमें गुलाल लगेहै ॥
 विश्वरूप अब रसिक लाल संग कूजन धूम मचै है ॥ २ ॥ हेरी जंगला ॥
 तू सखि वत न मानत मोरी मैं हारी कहत बहुतेरी ॥ यमुना तीर रहत
 वनमाली रार करत हठिहेरी ॥ डारत रंग पिच कारिन भरिभरि गारी
 हंमि हंमिदेरी ॥ १ ॥ पनियां भरन तेहि घाट जाहु जिनि मग वट पार
 बसेरी ॥ विश्व रूप ब्रजनाथ सखा संग वर बस लेत है घेरी ॥ २ ॥
 हेरी काफो ॥ तनमें अम रंग रचेरी ॥ पिचुकारी रुचि कारी सुमति की
 ज्ञान रंगते भरोरी ॥ झिलि मिलि ऐसे फागु मंचायो चहुं दिशि कीच
 करोरी अमल पट रंग सजेरी ॥ १ ॥ वायु विचार बहत रुचिकारी भरम
 अवीर उडोरी ॥ युक्ति साज करि सखि सब आवति समता भाल पुरोरी
 भलक छावै चहुंओरी ॥ २ ॥ गुरु गम अगम समाज संगलै अनहद ताल परो
 री ॥ विश्वरूप विसरो सुधि तनको भेद लाजको तोरी उमंग उमडै चहुंओरी
 ॥ ३ ॥ हेरी जंगला ॥ घरकैसेक पैहैं जेान गहों गुरु रंगरे ॥ ताकहं फा-
 गुन दूर वसेहै फागु रंग रस भंगरे ॥ १ ॥ हेरी विना जीवन नहिनीको
 मूठ साज दुख संगरे ॥ २ ॥ विश्वरूप जेई निजरंग बसे फूलफाम उरदंगरे
 ॥ ३ ॥ हेरी जंगला ॥ संगति सेा भलो जहाँ आतम रूप विचार ॥ कुमतिकु-
 संग तजे निशि वापर केवल नाम अधार ॥ भरम अवीर उडाउ तुरित
 सब कर्म रंग जनि डार ॥ १ फागुन मास महामद वाढी धनि वनिता परि-
 वर ॥ इनके हेतु भूलो जनि कवहुं अंत महां दुख भार ॥ २ ॥ सम्मत मन
 को चाह बनोहै सुख दुख मूल अपार ॥ अमल ज्ञान गत भेद त्रिशद अति
 प्रवल अनल तेंजार ॥ ३ ॥ केवल ब्रह्म निरंजन पूरण गुणा तीत गोपार ॥
 विश्वरूप सोइ रूपगहो निज ताजि सब भेद त्रिकार ॥ ४ ॥ राग वसंत ॥ श्री
 गंगेसुचि करतवतरंग ॥ निरपत वट्टे उरमहं उमंग ॥ १ ॥ कालि कौश कलिल
 हर सलिल धार ॥ मुनिवृन्द मनोरथ पुर करार ॥ सुगधेनु देव तरसम उदार
 ॥ अद्य औघमहा तह तर कुठार ॥ २ ॥ सब सिद्धि दानि गुन भवन नीर ॥
 मुख मूल दानि पद अजर थीर ॥ सुन्दर सुरेश सुयोगि थीर ॥ क्रिय विश्वरूप

तव भवन तीर ॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ जय जय हरि वाहनि जगत मत ॥
 भयं शोक हरणि दुति भानुगात ॥ १ ॥ जय नन्द सुते कुरु मति विशाल ॥
 हर मोह मान मद काम जाल ॥ अघ मूल हरणि वर दानि दानि ॥ २ ॥
 जन इच्छित फल वर अमित खानि ॥ जगदीश्वरि वदन विशेष चंद ॥ वर-
 हास मोदकर रुचिअ मंद ॥ सब सिद्धि सदाकर जोरि जोरि ॥ ३ ॥ पठकंज
 वसत चपलाइ कोरि ॥ तव चरित भानु जनु मनु सुकोक ॥ दुख शूल हरण
 करता विशोक ॥ जगतारणि कारणि सकल लोक ॥ अबबिस्वरूप तबशरण
 ओक ॥ ४ ॥ राग वसंत ॥ को शंकर सम जग महं उदार ॥ देखिदीन नहिं
 ठरत वार ॥ १ ॥ मथेठ सुरासुर उदधि जाय ॥ प्रगटेउ दारुण विपनिकाय ॥
 अरत भुवन करै चाहि चाहि ॥ शरण टेरि परे चरण मांहि ॥ १ ॥ अतिदयाल
 प्रभु अभय दीन्ह ॥ जलकण सम जियपान कीन्ह ॥ सुखिय भये अति जन
 समूह ॥ तपत मोन जिमि बारि व्युह ॥ २ ॥ साधन हीन मलोम दीन ॥ अथ
 अवगुण मदमोह पीन ॥ प्रभु ऐसे कलिजन कहं बिचारि ॥ मुक्ति जननि काशी
 सवारि ॥ ३ ॥ निवसत नितगिरिजा समेत ॥ अगजग मरतहिं मुक्ति देत ॥
 बिस्वरूप प्रभु त्रिनय मोर ॥ चरण युगल शशिचित चकोर ॥ ४ ॥ राग वसंत ॥
 खेलत वसंत रघुराज राम ॥ संग भरत लषण रिपुसुदन नाम ॥ १ ॥ फुलेउ
 फूल बहु बिपुल जाति ॥ भांति भांति सोहै अमित पांति ॥ लटपट खटपट
 करै गुंजार ॥ सुरभि सोहावन वहै बयार ॥ २ ॥ बालकेलि करै सहित बालु ॥
 सरयू तट शोभा विशालु ॥ कंचन मय जहां बनेउ घाट ॥ बीचबीच मर्यानि
 कर टाट ॥ ३ ॥ सुचिस्चि टायक मालपोय ॥ कृवि अनुपम बहु रंग जोय ॥
 हरणि सबै प्रभु कंठ डारि ॥ मानहु रवि शशि सिमिटि धारि ॥ ४ ॥ सब क
 उर अति भयो उमंग ॥ जैसे पर्व शशी उदधी उमंग ॥ बिस्वरूप धनि अवध
 लोग ॥ योगी अलाभ सुख करत भोग ॥ ५ ॥ राग वसंत ॥ डारत अबीर खे-
 लत वसन्त श्री अवध राजसुत सीय कन्त ॥ बाजत मृदंग ठोलक सितार
 अति भीर भई महाराज द्वार ॥ सब नृपन कियो बहु रंग साज करि अये
 जहां है भूपराज ॥ १ ॥ सुरशेषसिद्ध मुनिवर सुरेश कृवि देखि चकित भये
 त्रिधि धनेश ॥ चहुंगान करत किन्नर उमंग लखि बिस्वरूप सकुचै अनंग ॥
 २ ॥ राग वसंत ॥ मनचेतो केवल हरि स्वरूप ॥ अजहुं तजहुं भवजालकूप ॥
 ममता बश जेहि कहत मोर ॥ सो नहिं रेहे कौम तीर ॥ दारा धन सुत
 त्रिषय रंग ॥ हाट पथिक जन सरिस संग ॥ १ ॥ काल उरग सिर बैठु आय ॥
 रास करैगे समय पाय ॥ नाम सजीवन रस अगाध ॥ गहत दहत सब

सोह बाध ॥ २ ॥ आदि अंत जग लेशनाहिं ॥ रवि कर जल समवीच आ-
 हिं ॥ देखते सो नहिं नयन हीन ॥ मृग सम चाहते प्यास छीन ॥ ३ ॥
 अबकी अत्रसर बनेहै आई ॥ पायो है साधन साज भाई ॥ विश्वरूप सोह
 धरु आधार ॥ जेहते न चौरासी अगार ॥ ४ ॥ राग वसन्त ॥ कर मेरो
 मनुवां हरि के आस ॥ जेहते नशै जग दुसह चाश ॥ १ ॥ जाके शरण वं-
 ह्यादि शेष ॥ निशि दिन सेवत रुचि हमेश ॥ लहत परम सुख पुलक
 छाव ॥ लहै जिमि सुरेश पद रंक पाव ॥ २ ॥ जो छन छन रहै नाम ली-
 न ॥ बिषय हेतु नहिं होत दीन ॥ जिमि अगाध चल माहं भीन ॥ नहिं
 निदाघ तप होत खीन ॥ ३ ॥ शुक्र शारद नारद वालमीक ॥ चरण सरो-
 रुह चंचरीक ॥ पिवत मधुर रस स्वादु सार ॥ रहत अगन तजि भेद भा-
 र ॥ ४ ॥ विपुल नृपति तजि सकल राज ॥ जात विपिन लखि सुख समा-
 ज ॥ विश्वरूप प्रभु रूप ध्याउ ॥ अगम ज्योति घर वास पाउ ॥ ५ ॥ राग
 वसंत ॥ बेलो निशि वासर गुरु के नाम ॥ सुख सागर गुण बल तेज धाम ॥
 १ ॥ हरिरूप ज्योति मय गुरु सरूप ॥ फागु वसंत अनूप भूप ॥ पावन पद
 रज फूलो है फूल ॥ मन मधुकर मोद आवंड भूल ॥ २ ॥ गन्ध सुहावन
 भरो है देश ॥ सुख खानि दानि सेवत हमेश ॥ गन विश्वरूप गुरु चरण
 आस ॥ रवि कोटि ज्योति तम हरण भास ॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ आये वसंत
 ऋतु पुलक छाव ॥ नित नेह राम पद रज सुभाव ॥ १ ॥ फुलेव फूल बि-
 रहत अलिन्द ॥ तप ज्ञान सिंधु मुनि वृन्द वृन्द ॥ अबभोग रोग दारुण वि-
 योग ॥ मदमानकुमति हर अचल योग ॥ २ ॥ सुख धाम राम पुर छवि अपार
 ॥ सुख दानि खानि सोहै सरयु धार ॥ लखि होत चकित चित देव रा-
 ज ॥ पुर विश्वरूप नृप मुनि समाज ॥ ३ ॥ राग वसंत ॥ खेलत वसंत शंकर
 कृपाल ॥ सोहै छत्रि अनूप दुति चन्द भाल ॥ १ ॥ शिर श्वेत कुमुम सोहै
 गंग धार ॥ कर पुर गौर शोभा अपार ॥ कर सोहै डमरू ब्याल माल ॥ भसम
 अंग सोहै दृग विशाल ॥ २ ॥ गिरि राज सुता सोहै वामवाम ॥ भय शोक ह-
 रणि गुण तेज धाम ॥ जग विश्वरूप हर सम को आन ॥ तम रैन दुन्द
 घन तरुण भान ॥ ३ ॥ राग घाटो ॥ सजनी कठिन दुख छाये होइ गैले
 हरिसैं दुखवरे ॥ कुमति सबतिया वसलि परिसवां निशि दिन भगरा
 लगाये ॥ १ ॥ बहत अनिय रस धार अगनवां वाहर नाहक धायोरे ॥
 कांच गहत सेसो छोड़ि रतनवां पारस को बिसरायोरे ॥ २ ॥ विश्वन हे-
 रत मूठ नयनवां विषयन नेह लगायोरे ॥ ३ ॥ राग घाटो ॥ भूलि गैले शहर

मंभारिया हो रामा ॥ ना कोइ दीखत सांचइ जरिया हो ना रुचि रंग न चारिया
 हो ॥ १ ॥ ना अब आइब विश्व बजरिया हो ॥ नापुर पति सों जुहरिया हो ॥ २ ॥
 राग घाटो ॥ झूठ रंगे मनुआरहे असु काइ हो रामा ॥ भजन कउल वादिये विसराई ॥
 भव रसपरले भुलाई रामा ॥ १ ॥ कपट कलेवर रुचिर बनाई ॥ खरसम रहैव
 लोभाई होरामा ॥ २ ॥ सुमति संघतिया ठरन सुहाई ॥ कुमति संघतिया
 वढाई होरामा ॥ ३ ॥ बिश्वबिना रघुवर शरणाई ॥ नहिछुटे जगदुख दाई
 होरामा ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ कुंज बन राधिक कन्हैया हो रामा ॥ करत
 बिहार सुहावन यदुवर ॥ कुसुमित तरनुडि छैयां हो रामा ॥ १ ॥ खब बन
 चेत फुलाने रुचिकर ॥ अलिगन युनिसुख दैया हो रामा ॥ २ ॥ फुलवा लोढि
 लोढि मोहन राजत ॥ मंगिया भुघत रुचिरैया हो समा ॥ ३ ॥ बिश्वरूप
 प्रभुकी यहचोरी ॥ यमुनातर सोहैया होरामा ॥ ४ ॥ राग घाटो ॥ पिया
 मेरे बसले विदेशवा होरामा ॥ कवनि समैया पिया मेरे येहें निशिदिन रहत
 अदेशवा होरामा ॥ १ ॥ कवनि विरहिनी पिय बिलमाये अजहुं न पाये संदेश-
 वा हो रामा ॥ २ ॥ कुमति संघतिया देति दुख दाहन कोहि बिधि सहिहो
 कलेसवा हो रामा ॥ ३ ॥ बिश्वरूप गहु गुरु शरना प्रति सहजइ होई उपा-
 देशवा होरामा पिय मेरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ पिंजरा लोभाई गइले मुग्गना
 नहिं जानमारे रामा हो ॥ १ ॥ चिरे पिंजरया रंगनहिं करे पहिचान मेरे ॥
 २ ॥ पनियां अगिनि मिलि धरति यह बनेहै निसान मेरे ॥ ३ ॥ हन-
 वांमेट्टि जैहें खब की लिहैं पुरान मेरे ॥ ४ ॥ अपना न कोठ लिख यक
 बिना भगवान मेरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ धनिसे अजदरे कुबवां जल भरे
 मुसुकाय मेरे रामा हो ॥ १ ॥ बिनुरे कलसवां डोरिया भरे दिनु कर पांय
 मेरे ॥ २ ॥ सखियां सहेलियां मिलि गये सुख उदाधि समाय मेरे ॥ ३ ॥
 प्रनियां अमिय रस छुके दुखद्वै तनसाय मेरे ॥ ४ ॥ बिश्व अगम यहगति-
 यांविनु गुरु न लखाय मेरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ जियरा उठासी भैलो नहिं
 आयें यदुराय मेरे रामा हो ॥ १ ॥ कुबजा सयतिया बड़िरे लिये हरि बेल-
 माय मेरे ॥ २ ॥ घरवां न नीको लागे कुंजबन न सोहाय मेरे ॥ ३ ॥ ठरत
 नयनवां जलरे दुख कोहि नहिं जाय मेरे ॥ ४ ॥ बिश्व कवन बिधि सखिरे
 यह विरह नधाय मेरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ सजनि कहलां सुनावीं सैयां
 क बोलना कठिन भैलो ॥ सैयां कहत हम जैहें विदेशवा केहिबिधिते बिल
 मावारे ॥ १ ॥ कोहि बिधि रहिहो अकेलि भवनवां कैसे विरह वितावारे ॥
 २ ॥ जेमेरे यहिहै नयन कमनियां कैसे ये दरद दुकावो ॥ ३ ॥ दिप्र

कवन त्रिधि रहिहौ भवनवां जेहते बियोगं न पावेरि ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥
 मलनि वडादुख पावें हरिजिक मिलना कठिन मैलो ॥ १ ॥ नाकछु जाये
 हरिके संदेसवां केशेके विरह बितावें रे ॥ २ ॥ चीन कन्हैया रेहे भवनवां
 लैसके रैन बितावेरि ॥ ३ ॥ विश्वमें लगिहों केहिसे गोहनवां केहि बिधि
 शोच मिटावेरि ॥ ४ ॥ घाटो ॥ सजनि कहलौं तुम्हको वनियामें भंवरं तुमै
 लोरे ॥ १ ॥ वगिया लोभाये जबते भंवरवां तवते सोहागन पावें रे ॥ २
 जेरे भंवरवा रेहे भवनवां फुलवा कि खेज विद्यावेरि ॥ ३ ॥ विश्व जगम घर
 करि हो गयनवां भिल्लि मिलि खोत जगवेरि ॥ ४ ॥ राग घाटो ॥ रामा
 वाजि गैलो वाजि गैलो मधु सुगलिया हो ॥ १ ॥ ना अथ भावत सखियां
 नगरिया हो ना धरकी टकमरियाहो ॥ २ ॥ ना अथ भावत यमुना कछरिया
 हो ना कुंजन कि डगरियाहो ॥ ३ ॥ ना अथ भावत चटक चुन्दरियाहो ॥ नाग-
 लहार सुंदरिया हो ॥ ४ ॥ दिख बिना अथ सांवरि सुरतिया हो ना कहूं
 जात नजरिया हो ॥ ५ ॥ राग घाटो ॥ रामा लागि गैलो लागि गैलो विषय
 वगरियाहो ॥ नाकेइ आपन लखत नगरिया हो ना प्रीतमकी डगरियाहो ॥
 २ ॥ नाकेइ जातन विश्व वचरियां हो नाहक लावै नवरिया हो ॥ ३ ॥
 रागघाटो ॥ जियरा उदासी भैलो लागि विरह कयान योरे रामाहो ॥ १ ॥
 चितरे संवलिया रंगेसुख छवि नुख खानि मेरे ॥ २ ॥ त्रिछुरे कन्हैया जल
 सें भयोतन दिनु प्रान मेरे ॥ ३ ॥ बिश्व भवनवां कदरे रेहे यदुनुलभान
 मेरे ॥ ४ ॥ रागघाटो ॥ सैंयां सुरतिया लागि दर भल वनेहै सोहाग योरे
 रामाहो ॥ १ ॥ अदरे महन पिय पाये छुठि गये दुखदाग मेरे ॥ २ ॥ भ्रम
 किछटरिया गिरिपरे भयो पिय अनुराग मेरे ॥ ३ ॥ नियम गहनवां सतके
 सोहै सेंदुर सांगमेरे ॥ ४ ॥ विश्व सोहागिनि सोई पायो अविचलि भाग
 मेरे ॥ ५ ॥ रागघाटो ॥ मोतियन्ह मंगिया संवरतिं माघी ॥ १ ॥ जामें
 जनतिउं मोहन मेरे रेहे काहेको नोहिया लगवतिउं माघी ॥ २ ॥ जामें
 जनतिउं त्रिछुरि रेहे मोखे काहेको खेजिया संवरतिउं माघी ॥ ३ ॥ जामें
 जनतिउं विरह मोहिं देखै काहे को वतियां भुलवतिउं माघी ॥ ४ ॥
 विश्वमें जनतिउं जोहरि नहि रेहेकाहे कोपतियां पटवतिउं माघी ॥ ५ ॥
 राग मलार ॥ ब्रज में श्यम नये ये छवि घन छाई श्याम घटा प्यारि
 रैन रुखीये जायो ॥ १ ॥ मेघ घटा चहुं जल घन वरसे श्याम सुवा भरे
 नयन ॥ २ ॥ तडित छटा छवि चमक सोहावन भुपन सोहै मुद दैन ॥
 घति गंभीरगगन घन गरवे सखि मोहन मोहे दैन ॥ ३ ॥ जलद घटा शिर

रहत न निशि दिन श्याम सदा छवि ऐन ॥ विश्व रूप घनश्याम पिपारे
 अंग अमित सोहे मैने ॥ ४ ॥ मलार ॥ जवते श्याम गये ये बिकुरनि मेरी
 शोषहिंयां सारी रैन सखीरि मधुवन ॥ १ ॥ सघन घटा लखि अहिरिपु दृग
 से चरन चपल महि दैन ॥ १ ॥ चपल चक्षित चपला चहुं घावति सजन
 बिरह कैपे चैन ॥ अवतौ सखि भये युगल प्रगट घन एक जलधर दूजेनैन
 ॥ २ ॥ दुज सागर तन छोन रैन दिन चित मोहन छविऐन ॥ विश्वरूप रसना
 नहिं दुग्नलखे जालखे ताहिन वैन ॥ ३ ॥ मलार ॥ पुलकि पुलकि यदुवर सखि
 ललकि ललकि भूले ॥ १ ॥ भारत वृन्द दहत धार चपल चमक बार बार च-
 ढो चढो सखि कहि कहि कहि रसरस हिय भूले ॥ २ ॥ विश्वरूप कहि न-
 जात पवन वेग नभ सोहात कमकि जात लटपटात नभ सर चहुं फूले ॥ ३ ॥
 मलार ॥ गरजि गरजि जल धर धर सखि चमकि चमकि आवै ॥ १ ॥ य-
 दुवर जवतें विदेश पाये नहिं कछु संदेश ॥ सुनो सुनो सखि रहि रहि रहि
 धक धक हियछावै ॥ २ ॥ विश्वरूप नहिं सोहात समुक्ति समुक्ति पिछलि
 वात सुरति जात श्याम गात घर नहिं मोहि भावै ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ प्र-
 फुलित दल अमल कमल चपल नयन हेरे ॥ १ ॥ तरज लरज काहुकि नआवे
 मधुर वचन टेरे संग संग बालक लेइ करते कंज फेरे ॥ २ ॥ दरज परज
 काहुकिन भावे कृपा उर घनेरे विश्वरूप निरखत सोई दृगन टरत मेरे ॥
 ३ ॥ रागमलार ॥ हरि विगसित राजीव नयन वै मधुर टेरे ॥ १ ॥ गगन स-
 घन वादर छाये घटा चहुं घनेरे ॥ गरजत उप घोर पवन सिपकि शीचमेरे
 ॥ २ ॥ बिपिन सघन सुधि न पाये निशिचर वहुतेरे ॥ विश्वरूप लपन संग
 मुनिके भवन हेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ छयो बदरारे मोहि धरह बढायो ॥ १ ॥
 घहरि घहरि भरि करि चहुं दिशवां अंधियरिया वहुं छायो ॥ कड़कि कड़कि
 चपला नभ घावे शोच उदधि अधिकायो ॥ २ ॥ कोइलरिया धुनि करक जि-
 यरवां सोवत मोहि जगायो ॥ विश्वरूप उर अधिक अंदेशो हाल न श्याम
 पंठायो ॥ ३ ॥ मलार ॥ आयो दरसारे नहिं रघुवर आयो ॥ १ ॥ लटकि लटकि
 वन घन चहुंओरवां गह वर लता सोहायो ॥ टपकि टपकि घन बरसन ला-
 गे-कोहिबिधि बास लगायो ॥ २ ॥ कड़कि कड़कि आवत छन छनवां बिधि
 बियोग दरशायो ॥ विश्वरूप सियवर देखेबिनु रजनी घन युग छायो ॥ ३ ॥
 मलार ॥ आयो बदरारे नहिं भवन छत्रायो ॥ १ ॥ अवघन गरजि गरजि
 चहुंओरवां बरपत भरी लगायो ॥ चुवत भवनवां कोहि घरजैहो कुममय शो-
 च बढायो ॥ २ ॥ भरि भरि चहुं बहत वधरिया जल घत जल भरि

आयो ॥ विश्वरूप एक श्याम मिले बिनु पल पल कलप चनायो ॥ ३ ॥
 मलार ॥ घूमि घूमि घूमि घेरे डगरवा ॥ जालिनि पकरि वदन घूमि छीनले
 चदरवा ॥ बाट साघ कोउ न भेरे तडपै बडरवा ॥ १ ॥ जामिनि फि-
 रिके अंगना प्राये वडारे निउरवा ॥ विश्वरूप मोहि लेत सांघरो लंगरवा ॥
 २ ॥ मलार ॥ हेरि हेरि हेरि लायोरे नजरवा ॥ जामिनि कारि सखिरे घेरे
 कारि रे बडरवा ॥ मोहन हंसि मुरलि टेरे मोहिले जियरवा ॥ १ ॥ काछनि
 काछे मधुर मोले नन्द के पियरवा ॥ विश्वरूप श्याम निठुर मोहेरे सह-
 रवा ॥ २ ॥ मलार ॥ अगम भदौयां भैलि रतिदां ह्यै प्रभु येरे बस लै
 बिदेश ॥ १ ॥ पांच खति वसे शिर पर कलह करति निशि वार ॥ निज
 निज स्वारथ धावति जीवन कैसे हमार ॥ १ ॥ देति नन्द दुख दासन
 मिलिहै परेसिनि जाई ॥ कल न परत सखि मोरुह अबजा करउ उपाई ॥
 २ ॥ विश्वरूप गुरु पतियां ह्यै पठवों मुरति सुधार ॥ तबहि पिया घर आ-
 इ हैं पुनि न विद्योग बिजार ॥ ३ ॥ मलार ॥ अगम भइलि भव चल नदिया-
 ह्यै कैसे के उतरव पार ॥ १ ॥ धन जरसत धन बुंदहि सिमिटि मिलै बहु-
 धार ॥ लहरि अपार चहुं दिशि सुमत वार न पार ॥ १ ॥ केवट गरबी सुनत
 नहिं हरे कारिके पुकार ॥ नहिं कोउ साघी खरच नहिं सांभ भइलि अंधि-
 धार ॥ २ ॥ विश्वरूप गहु अनुजन के वज गुरु के अपार ॥ अवर उपाई
 न तरीहो ह्यै कोटि करी उपधार ॥ ३ ॥ मलार ॥ विभुजन सैंयां भुलइ ले
 ह्यै कैसे सहज दुख भार ॥ १ ॥ वनरे सधन चहुं ओरहिं तहां न पवन
 पैसार ॥ केहि बिधि गुधि ह्यै पइव यह चिन्ता निशि वार ॥ २ ॥ कर-
 क सु जंतु दसत चहुं सय कहुं करत अहार ॥ बाट नहीं कहुं दीखत चहुं
 दिशि कांठ करार ॥ ३ ॥ विश्वरूप जग महं कोउ दीखत नहीं न हमार
 ॥ जा से जरज सुनवों ह्यै सुनत करे उपकार ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ सखि
 शुकुंभर लिन नहिं कछु भावत ॥ १ ॥ कुममय विधि बनवास देखायो धी-
 रज उर नहिं आवत ॥ २ ॥ अति सुकुमार चरण प्रियवर को सहि अंकुर
 चहुं छावत ॥ विश्वरूप घन निशि दिन बरसे दादुर दरद बढावत ॥ ३ ॥
 मलार ॥ चहुं दिशि घन गरजत डर पावत ॥ १ ॥ घन घगंड सहि तका
 नियराने श्याम नजरि नहिं आवत ॥ २ ॥ कल देखव नयनन्हते प्रभुकहुं
 मोच अधिज्ञ उर छावत ॥ अधियारी भई भानु छपित भयेबुंद गगन भारि
 लावत ॥ २ ॥ दामिनि दमक दरद उर महं अति दादुर विरह जगावत
 ॥ विश्वरूप दुख मिशु बिना हरि को जग मांह वचावत ॥ ३ ॥ मलार ॥

वटोहिया हो हरिमें कहियो संदेश ॥ श्याम घटा घन चहुं दिशि छाये
 दृग छलः ढरत हमेश ॥ १ ॥ कि धीं घनश्याम निरखि छवि डरि गयो घन
 न गयो तोहि देश ॥ विश्वरूप कियो श्याम डरो हे आवत उरमें अंदेश ॥
 २ ॥ राग मलार ॥ वटोहिया हो जेहो कवने देश ॥ आवत घन बरषत कित
 रहिहो भारी भयो है अंदेश ॥ १ ॥ अजहुं विदेशि समुझन करि हो पैहो-
 तु कठिन कलेश ॥ विजुरि चमक चहुं गगन गरज भरे डरपे जियरा ह-
 मेश ॥ २ ॥ नाचत घन लखि मोरवा मगन भये दादुर धुनि चहुं देश ॥
 विश्वरूप घर जो न फिर जेहो पावस भल ना विदेश ॥ ३ ॥ राग मलार
 ॥ हरि हो श्याम शोच विधि दई है आजु री रैन संवाई होय ॥ कासों
 संदेश पठावों इहां के हित नहि आपन कोय ॥ १ ॥ श्याम लखै नहि हाल
 हियाकों तड़ित चमक चहुं आय ॥ दादुर शोच वढावै हियामों हरि मधुपुर
 रहे सोय ॥ २ ॥ अवतो जोरि सोहायो सखिरे कुवरी मोहन दोय ॥ वि-
 श्वरूप प्रभु भलन कियोरे श्याम सरम दियो खोय ॥ ३ ॥ राग मलार ॥
 हरिहो मोह फांसमें फसिहो आयरी नैन नसाये दोय ॥ सुन्दर आतम रूप
 हियोमों नेकु सुरति नहि होय ॥ १ ॥ ज्ञान विचार सुदृग श्रुति गावे सो
 मुधि लखत न कोय ॥ भटकात आवत जात चरखमों नरक सरग दुख जोय
 ॥ २ ॥ अजहुं संभारो सुरति गरभको सहव कठिन दुख रोय ॥ विश्वरूप
 लखु राम हियामों जनम वृथा दियो खोय ॥ ३ ॥ मलार ॥ भलोछवि वृन्दा-
 वन घनघोर ॥ शाखा रुचिर फूल चहुं फूले जंतु रमत चहुं ओर ॥ तस्वर-
 सोहत मोहत श्यामहि चित मोहत धुनि मोर ॥ १ ॥ ललित सुदृग पटल मे-
 घनकी सजल सघन चितचोर ॥ विश्वरूप परप्रल घन बंदन दासिनि चमक
 अंजोर ॥ २ ॥ मलार ॥ लगे मन श्रीमोहन की ओर ॥ ललक भलक कुंडल
 छवि कानन अदृग ललित दृग कोर ॥ सुरली हाथ साथ गोपियन्ह के सखि
 मोहि परत न मोर ॥ १ ॥ ब्रज तजि हरि जबसों मधुपुर गये जलधर गये
 तोहि ओर ॥ विश्वरूप सखि मेघ न वरपे विरह बाण कियो जेर ॥ २ ॥
 मलार ॥ करि हारी श्याम निहोरा रे नेकु वचन मन नाहि धरे ॥ १ ॥
 अदु बन वारि डारि नजरि लगाये लखै दरद नहि मेरार ॥ २ ॥ ब्रज
 विसराये छाये घन मधुवन घोर गरज चहुं ओरार ॥ ३ ॥ भरत नयन
 वरषत जलधर चहुं सखि चहुं पवन भोरार ॥ ४ ॥ विश्वरूप वंस भयो
 गोपियन्ह के चित कियो कान्ह कठोरार ॥ ५ ॥ राग मलार ॥ मनभावै नन्द
 को छोरार ॥ नयन सुखवि दृग मांहि भरे ॥ १ ॥ धुनि सुख कारि प्यारि

मुरलि बजावै ॥ चित्त कियो चन्द चक्रोरारे ॥ २ ॥ एक घनश्याम श्याम-
 घन दूजे वन सोहै चहुं ओरारे ॥ ३ ॥ लसत हंसत मुख मयूर वैन सोहै ॥
 मखि गण धानु ओरारे ॥ ४ ॥ विश्वरूप प्रभु मधुवन छाये ॥ सखि अटके
 चित्त मोरारे ॥ ५ ॥ मलार ॥ बोलै कोइलिया प्यारे ॥ प्यारे गरजत मेघस-
 घन चहुं कारे ॥ १ ॥ ग्वाल सखासंग बनमें सिधारे ॥ घटा मनोहर नन्द
 दुलारे ॥ शकासों दरद सुनावै हिया के दादुरे बोलिया दुख को टारे ॥ १ ॥
 ब्रजं चित्त चोरवा चित्तमे हमारे शोचि हेतु विधि दिवस सवारै ॥ विश्व-
 रूप पल युग सों हियामो श्याम मुरलिया जो न निहारे ॥ २ ॥ मलार ॥ १ ॥
 भुलत सैयां परिके कुसंग हिंडोल ॥ अगम अपार खम्भ दुह लागे गुणमय
 गुण अनमोल ॥ १ ॥ पाया चारि सोहावन चमकत रावत रुचिर खटोल ॥
 मखि गण जडित तडित रेम सुन्दर छवि अति बने है अतोल ॥ २ ॥
 विनु कर पांय भुनावति पिय कहं वचन मनोहर बोल ॥ हंसति हंसावति
 रागहि गावति बहु बिधि करति कतोल ॥ ३ ॥ रैन दिवस पैठत नभ
 माहीं कबहुं न हेत मझोल ॥ विश्वरूप अब भूल भुलारे पुनि जिन चढहु
 मचोल ॥ ४ ॥ मलार ॥ हिंडोलना जो भूले तेरो रंग ॥ भुलि भुलि माति
 रहत सो निशि दिन छूटत कर्म कुसंग ॥ १ ॥ भूमि भुगि जात न डारत
 महि पगु वाढा अजब उमंग ॥ विश्वरूप गुरू मोहि भुलावो सोहं भूल
 अभंग ॥ २ ॥ राग मलार ॥ सखि नहि श्याम संदेश पठाये ॥ आशा दिये
 श्याम आवनकी कौन हेत विसराये ॥ १ ॥ कारी घटा छटा विनुरिन की
 निरखि शोच उर छाये ॥ धार अपार बहत यमुना की नीर नदी भरि
 आये ॥ विश्वरूप प्रभुश्याम मिलन कहं दैव ज्योग वढाये ॥ २ ॥ मलार ॥
 सुरपति कीन्हैउ कौथ घनेरो ॥ जगलयकर घन बंधन छोडे ब्रज पहं तु-
 रितहि प्रेरो ॥ १ ॥ करिबर कर समवरपत धारहि ब्रज व्याकुल बहुतेरो ॥
 प्रभु करुणा निधि आरत मोचन कहि ब्रज चन्दहि टेरो ॥ २ ॥ मुनतहि
 गिरि कहं कर पर धारो दीन्हो अभय बसेरो ॥ विश्वरूप जगदीश दया
 जेहि सो न परत दुख घेरो ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ अंधियारि आये बरसा-
 ति ॥ घेर सघन चहुं ओर मेघश्री चपला चमक दिन राति ॥ १ ॥ मधुपुर
 नेह किये युवतिन सों गोप वधून सोहाति ॥ २ ॥ भवन भोग सखिमोहि
 नहि भावत अब जीवन कहि भाति ॥ ३ ॥ मलार ॥ देखेरी काम घटाघन
 घेरो ॥ विषय वृंद वरपत निशि वासर साहस वाद घनेरो ॥ १ ॥ प्रबलधि-
 राग बसन अति सचि कर तोहि भयत चहुं फेरो ॥ समता भूमि नजरि नहि

आवत वारि भरेउ बहुतेरो ॥ २ ॥ ले गुस् वचन सुसाज रुचिर अति छावो
 भवन सबेरो ॥ विश्वरूप सुख सो विहरो अथ चान उपाइ न हेरो ॥ ३ ॥
 राग मलार ॥ हरि विना जियरात्रा तरसे ॥ रैन दिवस अगुहन दूग वरसे
 ॥ १ ॥ वरपत धन मन चपल करत सोइ ॥ टामिनि दमक विरह उर सरसे
 ॥ २ ॥ मुरति करत मन हरत तुरित सो छवि रमणीय रुचिर चल धरसे
 ॥ विश्वरूप सुख रूप अलख सो चरण कमल कवच परसव करसे ॥ ३ ॥ राग
 मलार ॥ देखो सखि कारेकीर मितार्इ ॥ कारे कृप्य प्रीति करि हमसों कीन्ह
 दुराव कन्हाई ॥ १ ॥ कारे मेघ घटा डरपावत घुमडि घुमडि घहराई ॥ त-
 डपि तडपि उर साल बडावत विरह के बाण चलाई ॥ २ ॥ कारे धन धन
 मगु नहि दीखत जंतु बिपुल सखि मोहि नेकु न भावत ॥ ३ ॥ मलारबि-
 हाग ॥ सखि नहि मधुपुर सैं कोइ आवत ॥ तन बत मन जहां श्याम पि-
 यारे भवन काच नहि भावत ॥ १ ॥ निरखि सघन वन मोर मगन मन
 द्रव्य युवतिन दुख छावत ॥ दादुर कोकिल केलिमचायो दै जुबियोग सहा-
 वत ॥ २ ॥ सखि अचरज पावस चतु आयो वरपत अग्नि बडावत ॥
 विश्वरूप मति वाम श्यामको कुवरी आस पुरावत ॥ ३ ॥ मलार बिहाग ॥
 संदेशन मधुवन रूप भरे ॥ लिखि लिखि पाती श्याम पठाये कउलन सांच
 करे ॥ १ ॥ जैसे दाव अनल वन भीतर गिरह ते देह चरे ॥ कवन आस
 चल देहि दुकावों मन न भरोस धरे ॥ २ ॥ अवतो आवन दूर वात सखि
 मोहन दूर परे ॥ विश्वरूप उर एक शोच उर मुख छवि दूगकों हरे ॥ ३ ॥
 मलार बिहाग ॥ देखो सखि हरि अजहुं नहि आये ॥ वरपा चतु अवं
 आय तुलाने मेघ घटा नभ छाये ॥ १ ॥ बोलत बैन मयूर कोकिला नाचत
 मोद बढाये ॥ दादुर घुनि चहुं ओर करत अति चतु आगमन जनाये ॥
 २ ॥ काठिन बिरह कछु कहि नहिजाई हरि न संदेस पठाये ॥ विश्वरूप
 एक श्याम दरश बिनु नीर नयन भारि लाये ॥ ३ ॥ राग कजरी ॥ ऐसेहरि
 जिविताये न पठाये पतियां ॥ एक वोर धन वरपत चल धारा दूजे दूजे
 रे भरत बैना रतियां ॥ १ ॥ एक दुख मून ग्रहन अधियारो जाने जाने रे
 कवन दूजे दुख वतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप मन मोहन मोही देखो देखो रे
 सवनकी भुलाई वतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिको हिंडोल भुलावै सखि-
 यां ॥ सुसुम बाण तिय छवि सखि धारे गावै गावै रे सुराग कवन लखियां
 ॥ १ ॥ मोहन मुरली मधुर वजावै मोहै मोहै रे सुरेश सहस अखियां ॥ २
 ॥ विश्वरूप धन धन नननाला देखो देखो रे आगम हरि रस चखियां ॥

३ ॥ कजरी ॥ ऐसे हरिके नयन मोरि मोहै मतियां ॥ जपलाई दृग टोना
 जलाई कैसे कैसे रे जियों मोरि अस गतियां ॥ १ ॥ भइहो विकल सखिकल
 न परत मोहि नहिं सोहात ब्रज मुत पतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप घन बरण
 शरणमोहि अवर सोहात न दूजी वतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ देखो अगमदरह
 बरपत रतियां ॥ कालि रईनि वदरा चहुं कारे करे करे ॥ करक हरि
 जिकि वतियां ॥ १ ॥ केतिक अवध बिताये ऐसेभुटे भुठेरे मोहावे हरि
 मेरि मतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप मगु सुरली घरके जोहे जोहेरे सकल वनच-
 रजतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ हरिगैया चरावेरे वजावे वंसिया ॥ मधुर मधुर
 सुरलि धुनिटेरे लगे लगेरे सबहिकों बिरह गसिया ॥ १ ॥ खग मृग मुख
 चारा रुकि रखे वधो वधो रे सबै मोहन फसियां ॥ २ ॥ विश्वरूप उर का-
 गजहरिको लिखोलिखी रे प्रीति पिरौतम मसियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ बसे अजब
 महलरे हमारे पतियां ॥ दश दरवजवा वसे सब सखियां ॥ पियके मनावे
 नहिं सुने वतियां ॥ १ ॥ करति कलोल देखावति लोभाहि नयन सखन दर
 सावे मतियां ॥ २ ॥ विश्वरूप यह नगरि न रेहो मेटि रे गईलदुख वर
 सतियां ॥ ३ ॥ कजरी ॥ ६ ॥ रागसोरठ ॥ सखिरे कवन हरिको हाल ॥
 सुरति ब्रजकि बिमारि दीन्हो कैसे गोपी गाल ॥ कैसे यशुमति नन्द हूँ हूँ
 कैसे ब्रजके बाल ॥ खाडा संग जैकेलि कोन्हीं कुंज मधुवन ताल ॥ विश्वरूप
 सनेह हरिको देत दाहण शाल ॥ १ ॥ सोरठ ॥ मनरघुनाथ पदरज धार ॥
 विषय परि हरि सुरति उरधरि कुटिल कर्म निवार ॥ २ ॥ जाहि सेवत
 सिद्ध मुनिवर शंभु हृदय अगार ॥ कागराज विहाय निशदिन सेइ कालहि
 टार ॥ १ ॥ सकल पदके दानि केवल हरण ममता भार ॥ जनम मरण अनेक
 बंधन सधनवन कहजार ॥ २ ॥ कहत वेद पुराण महिमा लहत अजहुं न
 पार ॥ शेशशरद कहत हारे शरण शरण पुकार ॥ ३ ॥ सकल तीरथ भूतिनि-
 वसत अगम ज्योतिषु चार ॥ विश्वरूप बसोसदां उरछुटो जग टक सार ॥
 ४ ॥ सखिरे श्याम दुखमोहि दई ॥ बिरहगांसी लाई हरिगयो कठिन जी-
 वनभई ॥ १ ॥ वितेउ केतिक दिवस सखिरे सुनेव वात ननई ॥ विश्वरूप
 बियोग दुखकोवेद विधि छिने लई ॥ २ ॥ सोरठ ॥ सखिरे आजु दुख मोहि
 भई ॥ राम बिनु मोहि कलन सखिरो पलकयुग समझई ॥ १ ॥ कहां केहि
 विधि शोच उरको निन्द दृगसों गई ॥ २ ॥ विश्वरूप बियोग छायो प्राण
 विधि हरिलई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे प्रीति प्रभुजि सोगई ॥ भूठि पाति
 श्यामपटयो कपटकारदई ॥ १ ॥ कवन पाहिली आवसखिरे शोच उरमनई ॥ १ ॥

॥ विश्वरूप सनेह नीको भलन बिछुरनि भई ॥ ३ ॥ सोरठ ॥ सखिरे राज-
कुंवरिहि भये ॥ लोक नाथ सनाथ कीन्हो सकल सुख विधि दये ॥ १ ॥
भूँठसवमन राज सखिरे मिलनको दिनगये ॥ विश्वरूप चितेर जैसे मन-मु-
रतिलिखि गये ॥ २ ॥ सोरठ ॥ चखोरें नाम रससुखमई ॥ नाम रस सुख धाम
जानो अवररस दुखहई ॥ नारदादि मुनीश चांखो भेद मति दुरिगई ॥ विश्व-
रूप अलेख देखो आपु पूरगा भई ॥ २ ॥ सखिरे श्याम वसोहै विदेस ॥ रैन-
दिन घन भरत जल कहं पवन सरस हमेस ॥ श्याम बिरहते सुख तरिवर
होत कठिन कलेस ॥ १ ॥ गोप गोपी हाल लखिके होत जियमें अंदेश ॥
विश्वरूप श्री द्वारिकाको आपु भयोहै नरेश ॥ २ ॥ लखुरे कामबंधन दई ॥
काम बसतें राम भूले सहज सुख दुरिगई ॥ १ ॥ कठिन जाल पसारि दीन्हो
प्रीति नितिनितिनई ॥ २ ॥ विश्वरूप सुसाजपायो रीति हरिसो नभई ॥ ३ ॥
सोरठ ॥ जोपै कोई नेम अयसो धरे ॥ छूटति तुरितहि जगत फन्दा मोह
ममिता टरे ॥ १ ॥ जैसे चातिक तृपा व्याकुल गंग जलमें परै ॥ वारि काय
मुखमें न डारे चोच बंधन करै ॥ २ ॥ वारिचर जिमि वारि बिहरत मोदउर
में भरे ॥ पलक भरि होय चालसो बाहर प्राण कों परि हरै ॥ ३ ॥ विषय
आशा सकल परिहरि प्रीति प्रभु अनुधरै ॥ विश्वरूप अपार भवनिधि सहज
हीसो तरै ॥ ४ ॥ सोरठ ॥ बिना प्रभु हिय दरदछाई ॥ रटतवीतेउ दिवस
मोहिब्रहु टरशनहि पाई ॥ जलज जल विनु रहत नाहि तुरित कुंभिलाई ॥
१ ॥ सरितपति सर दिंटु संगम वाळि अधिकाई ॥ बिरह चन्दाहि पईतैसे
शोक बहुताई ॥ २ ॥ कल परत नाहि एकछन जल मीन बिलगाई ॥ विश्व
अवविनु दरश हरिके मोहि न रहिजाई ॥ ३ ॥ ८ ॥ राग विहाग ॥ कामना
को तेज चाउंमानो कहायहि दाउहें ॥ अपने रंगन्ह सुरति भिजाऊं असपै
हो न उपाउं ॥ १ ॥ जगमग सुन्दर च्योति जगाउं विनु पतंग दुति छाउं ॥
वर्षत सुख हरपत जनतामह जेहि गुरुभेद लखाउं ॥ २ ॥ विश्वरूप निच
सुख अरुभाउं ॥ जनमन विषय भुलाउं ॥ ३ ॥ बिहाग ॥ सांवरके संगजाउं
सखि मोहि घर न सोहाउं हो ॥ १ ॥ मधुपुर हरि गये सुधि नहि पाउं ॥
सखिदुख उर मोहि छाउं ॥ २ ॥ स्वाति घन चाचिक चित चाउं हरि छबि
चित अरुभाउं ॥ ३ ॥ विश्वरूप विधिगति को लखाउं हरिमोसे करिहे दुराउं ॥
४ ॥ बिहाग ॥ राघो हरत नपीर ॥ केहि कारण हरि देरीलगायो भय मो-
चन रघुवीर ॥ १ ॥ दीन बंधु प्रभु नाम कहावत भवसागर भरेनोर ॥ २ ॥
जो महिमा नहि नामके रखिहो को लइहे मोहि तीर ॥ प्रभु केतिक खल

गन लक्ष्मिरे गिति न मके कोइ धीर ॥ विश्वरूप प्रभु देहु दयाकरि वरसो
 भवन मोहि धीर ॥ ३ ॥ विहाग ॥ कव येहै यदुवीर भवन कखि ॥ रैन
 दिवस दुखठन अपि जायो ठरत दृगन से नीर ॥ १ ॥ गृहविनु दीप ॥ रैन
 विनु शशिके भुज गन मखि विनु धीर ॥ २ ॥ पति विनु सारि वीरि विनु
 सफरी वनजन की हियपीर ॥ ३ ॥ यमुना केलि खेलि सचुवन कियो नट
 नागर रनधीर ॥ विश्वरूप प्रभु नट नागर विनु मन न लहत कहुंवीर ॥ ४ ॥
 विहाग ॥ सेजर से जिमि कीर जगत मुख ॥ सेवत निशदिन आस लमायो
 चौच लगत भयोपीर ॥ १ ॥ टीप शिखाबल फेन लहरिसो जिसे रविसे नीर
 र ॥ वनिता राज भवन सुख तैमो मूढ लहत मोहि धीर ॥ पाई विपय
 सुख हरष वढायो विदुषे होत करीर ॥ विश्वरूप दृग मध्य भयो टोठ ग
 हंगुल जन भंभिर ॥ २ ॥ विहाग ॥ भवनागर चहुंनार भवन सखि ॥ ना
 कहुं नावनि खेवन हारो ना गूढत कहुं तीर ॥ १ ॥ छन छन अगस लह
 रि चहुंछावै पाई कुसंग समीर ॥ रैन दिवस स्मरन जलछयो कहि यिधि
 ते धरो धीर ॥ २ ॥ वारवार पुनारि करनहैं विनति सुनो यदुवीर ॥ वि
 खेरूप प्रभु जन सं सुत वर राखि लेहु रसुवीर ॥ ३ ॥ विहाग ॥ प्रभु जग
 जाल कव परि हरिहो ॥ कवनाशन करिहो कुख दायक कव हरि पड ठर
 धरिहो ॥ १ ॥ नरतन पाइ जो करत उपाइ न मसे अनल महं जरिहो ॥
 २ ॥ इत दाख्य दुख विपुल लहोगे बहु र नरक पचि मरिहो ॥ ३ ॥ विश्वरूप
 विनु गुन सरगागति यम गण कह क्रिमि टरिहो ॥ ४ ॥ विहाग ॥ जवते
 विषयन में अरु भाई ॥ तवते चित्तानन्द पूरण सुख गूढ दिये बिसराई
 ॥ १ ॥ काठन विगुल को फांस यरो है परपस जहं तहं याई ॥ सुख दुख
 लहत मनेकन्ह निशि दिन ऊंच नीच धर जाई ॥ १ ॥ कवहुं क देव द
 नुज मुर पति भये कवहुं को नरतन यई ॥ काला राज भोग अरुआने सु
 मति विचार विहाई ॥ २ ॥ कवहुं क कीट पतंग भयोहै मयल तिमिर उ
 रद्वारै ॥ चलत उपाय जहो साधन की समुक्ति के मुक्ति पछतई ॥ ३ ॥ ज
 कगुल वचन विचार सुकंजन ठर दृग नाह लगई ॥ विश्वरूप निलरूप लखे
 नय दोष तिमिर जिनमाई ॥ ४ ॥ विहाग ॥ भजुवन समे काम बिसराई
 सातका मुंज सकन यिन जावत सुख सागर ठर छाई ॥ १ ॥ तरैठ अलामि
 न आदि अष्टम बहु अचल लोका वसै जाई ॥ जोचो नरे करे गिनती को
 जेप गिरा सकुचाई ॥ २ ॥ सकल विभूति प्रताप जाहि को चरकन्ह भवन
 यनई ॥ महिमा अगम पार को पाई विठ नेति जाहि गाई ॥ ३ ॥ जो

चाहसि कल्याण कल्प तसु तौ यह सुगम उपार्थ ॥ विश्वरूप हरि सरण
 नहो अत्र जात्रागमन नमोहे ॥ ४ ॥ विहाग ॥ जनन हम हारे हरि
 लागी चरण कमल अनुरागि ॥ नाहि चहोँ छन भजन विषय मुख नहि
 सुर पति पद सुगो ॥ नहि यत जर बड़ाये वहाँ नेह तुमहि सो पायी ॥
 नहि तनके सुखनाथ वही भ नहि चाहोँ बड़ भागी ॥ २ ॥ करहु दया-
 ल दया जन जानो हनु भुमह दुख टागो ॥ केतिक अयम लिये अपना-
 हे अत्र न नाथ मोहि त्यागी ॥ ३ ॥ तुम आभु मातु पिता सुत बंधू काम
 मदनवने प्रागं ॥ विश्वरूप मन मधुप पियत रस चरय कमल अनुरागी ॥
 ४ ॥ विहाग ॥ धटिया करायल मन दुख पावल रेकि ॥ जात जात भुनि
 गीने महावन चेरन अरि लेल भावन रेकि ॥ १ ॥ दिनय सुनत नाहि देत
 दररो बहु विधि चम देखावल रेकि ॥ २ ॥ वंतु धनेरे जहं तहं मरजहि
 निरपत धीर परायल रे कि ॥ ३ ॥ करत विपाद बहुन पछिनावा कोठ
 नहि दगर बतान रेकि ॥ ४ ॥ खोचत खोजत गइलि न निचवांसत गुरु
 राह मिलावल रेकि ॥ ५ ॥ विश्वरूप जदपिय घनआये ताप सकल विरुदा-
 वन रेकि ॥ ६ ॥ विहाग ॥ हियलागो दूख तीर मोहन विनु ॥ मन मोहन
 कियो खेन पुलिनमे, हरे युवतिन्ह के चार ॥ १ ॥ यदुनन्दनसो ब्रज छवि
 छायो ज्योति बरि सिमिहीर ॥ सो ब्रज नेकु न आवत मनयो सर जेमे विनु
 नारि ॥ २ ॥ काह कठो गति ब्रज युवतिनयो मधुवन जंतु अयोरे ॥ विश्व-
 रूपे प्रभु मनहरि लीन्हो सावल छवि यदुवीर ॥ ३ ॥ विहाग ॥ आशु भयो
 सिधि धामरी सजनी ॥ राज सुनाई विपिन दियो रायहि कौते सही दुख
 धाम ॥ १ ॥ काव सेहै सियाराम रूपन धर ज्योति तलित पनश्याम ॥ यह
 चिन्ता से हि रैनदिवस सखि नहि आवत सुख काम ॥ २ ॥ गृह अंधियार
 दीप विनु कैसे त्रैसे भयो विनुराम ॥ विश्वरूप शोचति हियजननी कोटिन्ह
 युगसम धाम ॥ ३ ॥ विहाग ॥ जग जीवन केहि काम भजन विनु ॥ काह
 भये गजरयके पाये का सुरपतिके धाम ॥ १ ॥ काह भयो गुरुता गुणपये
 महि मंडनके धाम ॥ काह भयेतन भेष वजाये अंत चिबिध घरिनाम ॥ २ ॥
 काह भये बहुनेम बड़ाये मन न लगे सियाराम ॥ विश्वरूप एकदिन चस सेहै
 कूटि जेहेंधरंडाम ॥ ३ ॥ विहाग ॥ जानके ज्योति छाउं फेरिगरभ नहि आउं ॥
 विषय भोग हैधन रचित चाउं महि मत्र वेगि जराउं ॥ २ ॥ क मन्मोध सदतम
 दुरि जाउं आनु प्रकाश मोहाउं ॥ विश्वरूप गुरु सेसा लखाऊं सहजहि द्वैत
 नसाउं ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ प्रात समय सुब निरखि रामको वैशिन्य, हरपाई ॥

निज करतें प्रभुको मुख घोवति लेई भारी संचिराई ॥१॥ अंचल पोछि गोद
 बैठावतिमन छवि रहेबलेभाई ॥ फूल अरु फूलदेति प्रभुके कर मेवा विविधि
 मंगार्ई ॥ २ ॥ ब्रह्मादिक समूह सुरजेते निज निज थलतें आई ॥ जय जय धुनि
 करिप्रभु यश गावत पूजत प्रीति बढाई ॥ ३ ॥ चारिउ वेद रामगुण गावत निज
 निज वेष छपाई ॥ गान करत गंधर्व मनोहर नाना राग बनाई ॥ ४ ॥ शो-
 भा खानि मदन छवि हारक उर धरि सबै सिद्याई ॥ विश्वरूप प्रभु त्रि-
 भुवन स्वामी हरो मोह समिताई ॥ ५ ॥ राग भैरव ॥ श्री रघुवीर धीर
 जन पालक दानि अचल पद केरे ॥ बारिज नयन मोह मद खंडन जन
 मंडन हित हेरे ॥ १ ॥ बालापन ध्रुव कीन्ह महा तप असन बसन तजि
 जेरे ॥ दीनबंधु भगवन्त महा प्रभु तुरित गये तेहि जेरे ॥ २ ॥ सुर दुर्लभ
 वर देई शीस पर रघुवर निज कर फेरे ॥ जहं कालहुकी गति न परतु है
 सो पद टोन्ह बसेरे ॥ ३ ॥ सुर नर धरणि धरम बांधक खल अस रावण
 प्रगटेरे ॥ ताकहं मारि उवारि विभीषण कहं प्रभु तिलक करेरे ॥ ४ ॥ जय
 जय धुनि नभ सब मुनि गण करै कुसुम समूह बखेरे ॥ विश्वरूप असप्रभु
 सखा गति को नहिं जग उवरेरे ॥ ५ ॥ राग भैरव ॥ रमा रमण रघुवीर धीर
 भजु तजो मोह मद मायारे ॥ भूलि परेसिका दिपय भोग में झूटे तनयन
 जायारे ॥ १ ॥ जासु प्रताप अखंड अनूपम भुवन चतुर्दश छायारे ॥ ताहि
 विसारि भ्रमसि कामी बस मिथ्या जन्म गवांयारे ॥ २ ॥ काको मृग जल
 तृपा गयोको स्वप्नराज सुख पायारे ॥ उदधि पारचा हंसि गहि वीची हरि
 वोहित विसरायारे ॥ ३ ॥ अर्थ अनर्थ रूप श्रुति गावत ब्याध सरिस दुख
 दायारे ॥ तेहि नित मुख जोवत तुच्छनको अजहुं समुझ नहिं आयारे ॥ ४ ॥
 जो सुख निधि चाहसि निशि वासर निराबाध चित भायारे ॥ विश्व रूप
 गहु राम कल्प तरु सबकर भूल सोहायारे ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ भजुमन रमा
 रमण भयहारी ॥ जगत बंधु जग जाल काल हर समता भेद कुठारी ॥
 कुमति कुसंग कुचाल कुमग तजु विषम रैन अंधियारी ॥ चखड भानु शत
 कोटि तेज धर अज अनीह अविकारी ॥ २ ॥ जनमन कुटिल कर्म दाख्य
 वन लोभ मोह वनचारी ॥ जारत अनल अखंड अमित शत तरुण तेजवपु
 थारी ॥ ३ ॥ अभिमत दानि खानि सब सुखके करुखा सिधु सुरारी ॥ अंतर
 गति जानत सब जनकी जल दल जीव अपारी ॥ ३ ॥ सबकोई ससुब धर
 केवल रघुकुल कमल तमारी ॥ विश्वरूप प्रभु आरत मोचन जो गजराज
 उवारी ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ अब मोहि शंभु दया करि हेरो ॥ बल अंगार

भव भाव, हरण प्रभु देहु चरण महं डेरो ॥ १ ॥ जगत सघन वन पार न
 दीखत मोह गर्त बहुतेरो ॥ काम क्रोधके हरि द्वीपी बहु हठि घेरत चहुं
 फेरो ॥ २ ॥ खलको वचन कंठ उर वेधत सुधि न रहत तन केरो ॥ आसा
 नदी बहुत बाढी है दीखत नाथ नवेरो ॥ ३ ॥ वनचर बंधु सखा बालक,
 पितु तिय पुरजन सब केरो ॥ इनके सुख दुख तें मानत उर, हर्ष बिपाद
 घनेरो ॥ ४ ॥ धायउ सब दिशि कियेउ यतन बहु लगत उपाय न मेरो ॥
 विश्वरूप अब शरण परो है, नाथ कारो निज चरो ॥ ५ ॥ राग भैरों ॥ श्री
 रघुनायक जन सुखदायक द्विज सुर हित तन धारी ॥ कहत मंदादरि
 विनय बहुत करि सुनु पति वचन हमारी ॥ राम विरोध बहुत पछतैहो
 देखो नैन उधारी ॥ १ ॥ कालहुको भक्त जनरक्त जाहि नमत चिपुरारी
 ॥ तिनसों का पुरधारय करिहो काल बदन शिर डारी ॥ २ ॥ सुनि सब
 असि गरज तरजि अति कहत वचन भयकारी ॥ मो समको योधा जग
 माहीं जो सक्रिहै भुज टारी ॥ ३ ॥ लखि बिपरीत विघाता पियको शोच
 करति अति भारी ॥ विश्वरूप रघुवीर विमुखकों सक्रिहै कवन उवारी ॥
 ४ ॥ राग भैरों ॥ जय महेश अखिलेश सनातन करुणा सागर शोक हरो ॥
 कुंड इन्दुवर बरण सरिस तन अमित टिकाकर तेज धरो ॥ १ ॥ उदधि
 मयन संभव बिप दुर्जर जरत सुरासुर ताप गरो ॥ करिविष पान निमिष
 महं सबको अभय कियो यस भुवन भरो ॥ ३ ॥ पर उपकार उदार काहि
 अस जाके प्रभु मै चरण परो ॥ शिव केदार दानी उदारहो दानि चारफल
 देव तरी ॥ ३ ॥ अर्ज मानि जन जानि दयानिधि मन इच्छित फल दान
 करी ॥ विश्वरूप तव शरण परीहै आन उपायन काज सरो ॥ ४ ॥ रागभैरों
 ॥ यमपुर कौन वचैहै हो ॥ हरि बिन साथी नहीं कोइहोइ हे मरणसमय
 जबहैहै हो ॥ मातु सुता सुत घन हित मानत सोतो इतरहि जैहैहो ॥ १ ॥
 देखु विचारि समुझ मन अपने जेसो पाप कर्महैहो ॥ सो जन तैसो अवशि
 लहैगो निज फल कवन दुरैहै हो ॥ सावन हरित रहत नहि सब कून कछु
 दिन कीति सुखैहै हो ॥ देखतहू जग अंध भयो है अंत समय पछितैहैहो ॥ ३ ॥
 साधन मूल पाइ नर तन कहं जो तुम अग्रहि बनैहै हो ॥ विश्वरूप सोइ भाग
 पुंज नर अमर लोक घर पैहै हो ॥ ४ ॥ राग भैरों ॥ देखो कर्म रेख कठिनाई ॥
 जोजस करत लहत तैसो फल ऐसेवेद हु गाई ॥ १ ॥ कोउ जन असन वसन
 नहि पावत दुखतें दिवस बित ई ॥ कोउ सुरराज भवन विहरत नित नमत
 सकल सुर आई ॥ २ ॥ कोउ सब धरणी राज करतु है दल चतुरंग सोहाई ॥

॥ खंड खंड भूपाल जोगिकर पद रज शीस चंडाई ॥ ३ ॥ कोउ नर बाहन
 सरिस भयो है परम मोद उर कहे ॥ सकल भुवन विहरत कोउ निज
 सुख कोउ यम गेह सिचाई ॥ ४ ॥ गहन कर्म गति लखि न परत यह ट
 रत न आन ठपाई ॥ विश्वरूप गहु हरि शरनागति तत्र यह जात नसा
 ई ॥ ५ ॥ राग भैरो ॥ सुनहु सिखवन संवण मेरी कहत बिभीषण विनय
 करी ॥ जो अगदीश चरचर नायक रघुन यक सो रूप धरी ॥ इनते वैकु
 शल नहि होइ है पछिते हो शिर आय परी ॥ १ ॥ डरन सुरेश सेस सुर जेते
 जेहते निशि दिन काल हरी ॥ वंदत चरण प्रभु अज आका विनय करत
 उर प्रीति भरी ॥ २ ॥ जनकपुता जगदम्ब जनकी विन समुझे तोहि मुठ
 हरी ॥ ले सिय चरण परी रघुवर के और उपाय न काज सरी ॥ ३ ॥ सुनत
 बचन कोपेउ दशमेधर सकल अंग मह आगि वरी ॥ विश्वरूप विधि वाम
 जाहि कि कोटि यतन नहि काल टरी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ जय रघुवर दनुज
 कुल नाशन गढ़डासन जन अय न गहे ॥ चौदह सहस प्रबल अति खन
 दन खरि दुषण जो विदिन रहे ॥ छनमह कीन्ह विनस संवन को जैसे
 पवक तून दहे ॥ १ ॥ संवण शकुन सैन सब मारे मेद उदधि चहुंओर
 वहे ॥ मुं नर नाम धर्मद्विज धरणी हू प्रसन्न सुख अचल लहे ॥ २ ॥ हो
 य अभय तप रत मुनि गणभये निज सहस्र सुख अचल चहे ॥ विश्वरूप
 महाराज रामको अति अगाध यश कवन कहे ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ सोई धीर
 खोई परम विवेकी रहे यक चितलाई ॥ द्वैत भाव कछु हृदय न देखि
 ब्रह्म स्वरूप सेहई ॥ १ ॥ अंतर बहर भेद नही कछु सैधव घन स
 मुदाई ॥ लोभात्म भेद नहि आवत ममता सेतु नसाई ॥ २ ॥ पाप पुण्य
 को लोप न होवे ज्ञान जनन टाहिजाई ॥ रहत सुखी दुख लेसन आवत
 संग दोष तेजि जाई ॥ ३ ॥ पवन अनन नभ भेनु सरिस विचरत सबदिवर
 वितई ॥ विश्वरूप सोइ गुणातीत है निज स्वरूप लिखिपई ॥ ४ ॥ राग
 भैरो ॥ प्रभु पालक सबकर अपेहो तत्र कृपा टरे भवतापेहो ॥ भक्तन को
 सनत प्रण राखत ऐसी रीति कहे कापे हो ॥ १ ॥ जाऊह प्रभु तुम निज
 करि मानत धन्य भग है काके हो ॥ निर्गुण निर्विकार अविनाशी सुख
 स्वरूप चहुं व्यपेहो ॥ २ ॥ भै अरु मोर तोर यह वंधन उदधि घटज हरि
 जापे हो ॥ विश्वरूप बसो राम सदा हिय सहित वाण धर चपेहो ॥ ३ ॥
 रागभैरो ॥ निशि दिन चेतो हरिको नाम जाको नाम असित खल तारे ॥ गुण
 सागर मुख्यास ॥ १ ॥ महिषा अंगस कहत अतिज को हरि हरि अम घाम ॥

जननि-जनक-समा-पालक-जनके-जल-धल-तम-सब-टास ॥ १॥ जे-जन-
 प्रीति सहित ली लावै थरी-पलक-छन-याम-॥ सकल-भुवन-महं-भाग-उ-
 दधि सोलहै-अवल-विश्राम-॥ ३ ॥ नहि-कलिमांह-अवर-कछु-साधन-
 केवल नाम-अकास-॥ विश्वरूप-रघुवीर-रटी-नित-जीवन-अभियाम-॥
 ४ ॥ विहाग ॥ मन-रूपने-रूपहि-रुटको ॥ काया-र-रुमें-दिखु-बिचारी-वा-
 हर-नाहक-भट-को-॥ १ ॥ अपने-में-सब-खेल-रचो-है-जैसे-ला-ला-नटको-॥
 आपुहि-में-रुव-लीन-रहत-जिमि-वलि-मांह-तर-बट-को-॥ २ ॥ अमित-
 ख-नि-पुतली-कंचुका-बहु-होत-मूत-संपट-को-॥ खोलि-निहारो-नजरि-न-
 आवै-कछु-निसानी-पटको-॥ ३ ॥ सुख-सदूप-आनन्द-घन-केवल-दसंब-
 दिशा-में-लटको-॥ विश्वरूप-जेहि-समुझ-परो-है-सहजहि-रुव-भ्रम-सटको-
 ॥ ४ ॥ विहाग ॥ भरमत्-बीतेउ-दिन-सब-तेरो-॥ पर-अपवाद-निरत-निशि-
 वासर-कंचन-प्रीति-घनेरो-॥ १ ॥ रसना-र-सब-विषय-बिबस-भये-नाम-
 कबहुं-नहि-टेरो-॥ पर-तिय-नेह-गेह-रुचिधारे-नहि-हरि-चरण-बसेरो-॥
 २ ॥ अमृत-रस-सुख-नेकु-पिबत-नहीं-भूलेउ-रुट-भूमेरो-॥ थोरे-दिन-महं-
 समुझ-परिगो-जब-करि-है-यम-जेरो-॥ ३ ॥ मानु-कहा-तबु-अजहुं-जात-
 सुख-भजु-रघुवीर-सबेरो-॥ विश्वरूप-यह-अवसर-नकीं-गरभ-कउल-मन-
 हेरो-॥ ४ ॥ विहाग ॥ करो-मन-ज्ञान-भानु-ठजियारो-॥ समता-कुमति-
 कुसंगति-र-रनी-छूटत-रुव-अंधियारो-॥ १ ॥ शमदम-तोप-सुरीरुह-सुन्दर-
 विगसेउ-अति-रुचि-करो-॥ काम-ठलूक-लुकाने-रहत-हं-क्रोध-कुमुद-कहं-
 जारो-॥ २ ॥ तारा-गग-सब-हम-हमार-यह-कुटिल-कर्मदुख-भारो-॥ भये-
 हत-तेज-टरत-तुरितहि-सब-पुनि-नहिं-लहत-प्रमारो-॥ ३ ॥ बेट-सार-उर-
 प्रगट-भये-है-भलकत-ज्योति-अपारो-॥ विश्वरूप-धनि-भग-ताहिको-जो-
 निरखत-निशि-वारो-॥ ४ ॥ विहाग ॥ ज्योति-सदूप-नयन-बिनु-हेरो-॥
 कोटिन्ह-रजनी-प्रति-दिन-कर-दुति-सकृत्रि-रहे-तेहि-जेरो-॥ १ ॥ भरत-
 अगम-सुख-वरत-रैनि-दिन-तेज-पुंज-छवि-डेरो-॥ शोक-लोभ-भय-मोह-
 सघन-तम-लेखन-करत-बसेरो-॥ २ ॥ करि-बहु-यतन-रमत-योगी-जन-
 परि-हरि-माया-घेरो-॥ मंगल-रहत-सुख-सागर-महं-नित-तबि-संब-इन्द्र-
 य-भेरो-॥ ३ ॥ अजब-वस्तु-अति-निकट-सदा-है-ओट-परेउ-बहुतेरो-॥
 विश्वरूप-जो-देखन-चाहो-गहु-एउ-सत-गुरु-केरो-॥ ४ ॥ विहाग ॥ मन-
 तेरो-लाज-नेसाजी-॥ चलत-कुपथ-अभिमाजी-॥ १ ॥ सचि-सचि-लक्ष्मी-
 भवन-संवारे-पादिल-वात-नजानी-॥ नारि-नयन-शर-दुखके-सागर-अजहुं-

शठ पहिचानी ॥ २ ॥ काल कोलाहल करतरैन दिन चलन समय नियरानी
 विश्वरूप कव हरिपद भविहो समुक्त होत गलांनी ॥ ३ ॥ विहाग ॥ जयो हरि
 कव दरशन देखै ॥ कौल क्रिये सो कीति गयउ अत्र कवधौ यदुपति गेहै
 ॥ १ ॥ नैनन नीर बहत निशि वामर कहु कव श्यास चितैहै ॥ शोक अनल
 चारत चहुंदिशिते कव होइ जलद वचै है ॥ २ ॥ कव प्रभु मधुर पिपूष
 वचन बर मुरली टेर सुनै है ॥ विश्वरूप मोहनदेखे विन यमपुर प्राणसिधै
 है ॥ ३ ॥ विहाग ॥ जयो हरि सों कहियो संदेसो ॥ कहिये और करत
 हौं और यह मन बहुत अंदेसो ॥ १ ॥ रसना रटत थकितभइ निशिदिन
 मन रहे चपल हमेसो ॥ तुम विनु जीवन प्रभुनहि होंइहै विनु जलमीन
 मरेसो ॥ २ ॥ आवन कहेउ वचन सोइ पालियका भूलेउ दुसरेसो ॥ विश्व-
 रूप प्रभु प्रेम मगन सखी सुधि विसरीतन केसो ॥ ३ ॥ विहाग ॥ मधुकर
 ते सखि कहै सुसुकाई ॥ जयव ते अम कहति सुनायके वचन माधुरीअति
 सुख टाई ॥ १ ॥ कारते हम प्रीति करत नहि मधुर मुखर तव मोहि न
 सोहाई ॥ २ ॥ करितुम प्रीति अवशि विछुरोगे जैसे यदुकुल नलिन कन्हाई
 ॥ ३ ॥ उडि उडि जात पलाटि आवत पुनि बैठत अचल प्रीति बढाई ॥
 ४ ॥ तुमरो कहा कवहुं नहिं करिहौं कोटि भांति जो करिहौं उपाई ॥ १ ॥
 कारे मै गुण एक बडो है वरवस मन कहं लेत लोभाई ॥ ६ ॥ विश्वरूप
 विन मोहन जीवन विधि ने उलटी चाल चलाई ॥ ७ ॥ विहाग ॥ जयो
 कव गेहैं ब्रज राज ॥ हमसकर सुधि जाई विसारेउ भूले राज समाज ॥
 १ ॥ एक पलक शत कल्प विततुहै नहि मूक्त कछु काज ॥ करि अति
 प्रीति मोहनी डारे प्रभु नटवर सिरताज ॥ २ ॥ इन्द्रिय गण गति भयेउ
 थकित अति जिमि बटेर लखि वाज ॥ विश्वरूप हरिसों कहियो असकरि-
 ये शरण की लाज ॥ ३ ॥ विहाग ॥ माता सोच करत मनमाही ॥ कोमल
 पद मगु उकट विकट अति वन घमंड चहुं पाही ॥ १ ॥ अति सुशुमार
 गात रघुवर को कोउ पटतर जग नाही ॥ जनक सुता की काहं कहों मै
 मुनेउन दुख परि टांही ॥ २ ॥ रैनदिवस उर मांह विकल अति पलक कल्प
 सम जाहि ॥ यह दुख उदधि पार किमि जैहो कौन सुने कहों काहि ॥
 ३ ॥ काहं कहां विधि की उलटी गति नहि विवेक कछु आही ॥ विश्व-
 रूप सिय राम विरहते प्राण अथम न नसाहीं ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ दशरथ राज
 दुलारे प्यारे करत मधे रखवारे हो ॥ कौशल्या नन्दन जग वंदन हरत
 मोह मद मरेहो ॥ १ ॥ सकरे प्राण प्राण पति जीवन टोनबंधु हित कारे

हो ॥ जो नित जपत टरत भव संकट काल कर्म दुख भारेहो ॥ २ ॥ जे-
हि अनादि अज श्रुति अस गावत भक्त हेतु वपु धारेहो ॥ सञ्चित घन
सुखसागर साहेव सब महं सबते न्यारेहो ॥ ३ ॥ लीला करत हरत मन
जनके सुर नर होत सुखारेहो ॥ अस्तुति करत विनय कर जोरे अशरण
शरण उदारैहो ॥ ४ ॥ अवध पुरी बालका बड़भागी संगमें करत बिहारैहो ॥
बिखरूप सोई बड़ भागी को कवि वरखै पारेहो ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ बालक
वृन्द लिये रघुबर करै केलि बिबिध फुलवारी ॥ बरत गुंजार मनोहर म-
धुकर द्विज धुनि बहुसधि फारी ॥ १ ॥ मानहुं सुनि जन रूप साज करि
गावत प्रभु यश प्यारा ॥ आनन्द उदधि भरो उरअंतर तननी दया विखार-
री ॥ ३ ॥ फल अरु फूल लगे बहु भांतिन्ह भूमि नवै तरुकारी ॥ प्रभु से
विनय करत बहुभांतिन्ह करिप्रणाम अनुहारी ॥ ३ ॥ कोउ गादत कोउराग
सराहत कोउ नाचत देतारी ॥ वाचत डोल मृदंग बीन डफ होत उमंग
अति भारी ॥ ४ ॥ प्रखत पाल करुणा निधि केशो अशरण शरण पुकारी ॥
विखरूप प्रभु कृपा कीजिये सुनिये अर्ज हमारी ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ सखियां
उपमा प्रभु की नही ॥ ऐसे रूप नहीं जग कोई हारेउ खोजि मही ॥ १ ॥
जाइ जलज जल माँहि भवन करि अनछन सजुचि रही ॥ श्याम तमाल
गरख निज परि हरि सघन गहन कों गही ॥ २ ॥ बारिद जाइ सिधारेनिज
थल व्याज शरद को लही ॥ बिखरूप अनेपम सुखमा छवि दृगनिशिबार
चही ॥ ३ ॥ रागभैरो ॥ आस तोष हर नाम तुमारो ॥ जनपर दया करत
तुरितहि प्रभुहरत फन्द दुखभारो ॥ १ ॥ अवण सुखट अति परम मनोहर
जो करै नाम उचारो ॥ अणि मादिक तेहि पांयन लोटे कर तल सुगति
सुधारो ॥ २ ॥ अस दयालता अवण सुनेनहि खोजेउ सब जग सरो ॥ बिनु
अम योग यज्ञ बिनु साधन अग जग जीवहि तारो ॥ ३ ॥ फणिय नायक
साइद सुनि नारद गज मुख बुद्धि अगारो ॥ चरित सोहावन अमित कल्प
सत गावत लहत न फारो ॥ ४ ॥ गुण अगार संसारभार हर जनहित परम
उदारो ॥ बिखरूप प्रभु अंतरायामी जानत हाल हमारो ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ माया
में भुलाने मन हरि को न जाना ॥ निशि दिन करत विषय कोलटिनी सोह
जाल अरुभाना ॥ १ ॥ रविकर निकर सरिस जग सुखहै तूसठ नाहिं किये
ग्रहचाना ॥ २ ॥ कहूं सपना संपति को धनिक भयेतेहि बस नाहक होत
हैसना ॥ ३ ॥ अज कर हेतु रघुबर ते धन जन बिभव जानु दुख धाना
॥ ४ ॥ धीर गुजान सोइ जगमाँही जो हरिपद लपटाना ॥ ५ ॥ बिखरूप

यह अवसर बीतें यम पुर में परि है पछिताना ॥६॥ भैरवी ॥ भरपरो जग
 की चतुरैया ॥ अपने गये अवर को खोवत कारत कुपथ में प्रीति सदैया ॥
 १ ॥ सपनेहु नहिचित धरम धरतु है असत कर्म के नाव चलैया ॥ २ ॥
 कब हुन हरि सों हेतु करतु है हेतु निरंतर सुत पितु भैया ॥ ३ ॥ विश्व-
 रूप धिग राम शरण बिनु को सठ तो कहं पार लगैया ॥ ४ ॥ भैरवी ॥
 सखि नियरैलो तेर गवनवां ॥ समुझ करो का गहसि मनववां ॥ १ ॥
 नैहर गैले गर्व भुलै ले वासन प्रैवे पिय के भवनवां ॥ २ ॥ जवउहं स-
 हवे ताप बिविधि विधि तव तूं लगखे कहिके गोहनवां ॥ ३ ॥ विश्वरूप
 पिय चेत सबेरे फेरि नहि ऐबे टेश अवनवां ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ भूलैसि कातन
 रहेठ लोभाई ॥ किम विट भस्म अंत है जाको तो कह सो सुधि अजहुन
 आई ॥ १ ॥ गये वंचत वे नृप न रहे कोउ अवर तुच्छ की कवन च-
 लाई ॥ २ ॥ पृथु पुरु गवा गाधीनहु सगये और ययाति नृपति समुदाई ॥
 ३ ॥ गये नमुचि संवर भौमासुर कनक कशिपु गये तजि ममताई ॥ ४ ॥
 रावण गये जासो डरत सकल जग तिह मारेठ क्य मह रण जाई ॥ ५ ॥
 विश्वरूप गहु राम अचल पट अक्की भून बहुत दुख टाई ॥ ६ ॥ भैरवी ॥
 हंसा करो सरोवर वास ॥ आनद जल तहं पुरिहो है प्रेम कमल सो है पर
 गास ॥ १ ॥ काई कपट रहत तहं नही अति अगाध निशिदिन सुख रास ॥
 २ ॥ घटत बढत कहुं सर नही रहत येकर रस वारह मास ॥ ३ ॥ तहं अंधि-
 यार लेश कछु नही अमित भानु सम संदां प्रकश ॥ ४ ॥ कूर काक तहं
 जात कबहिं नहिं उहां मिलत नहिं बिषय बिलाश ॥ ५ ॥ विश्वरूप सत
 गुरु शरणागत मोति चुगे मिटे जग चास ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ हरिविनु मे कहं
 कछु न सुहाई ॥ गयउ बहुत दिन सुधि नहि फाई ॥ १ ॥ काह भये कछु
 वृष्णि न परतु है पर वस भये कि सुधि बिसराई ॥ २ ॥ काहे को हरि प्रीति
 लगायो अब हरि विनु मोहि कछु ना सोहाई ॥ ३ ॥ विश्वरूप ब्रज नाथ
 दरश बिनु पलक कल्प सम निशिदिन जाई ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ गहिरि नदि-
 या कैसे पार जहो बहुत अदेशा चित में रहे ॥ अरत हरण सुनत हो
 नम प्रभु सत्य करो जस वेद कहे ॥ २ ॥ अमलहार कछु सुभिन परतु
 है परेठ मांझ बहु ताप सहो ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु संकट टारो आपन जानि
 के बाह गहो ॥ ४ ॥ भैरवी ॥ गये बहुत दिन रहि गये थोरि ॥ अजहुं च-
 लसिना प्रभु की ओर ॥ १ ॥ विषय लहरि मंहं भूलि गये का आइ तुलाने
 काल कठोर ॥ २ ॥ किये भजन को कौल गर्भ में बाहर आवत परि गये

भैरवी ॥ त्रिश्वरूप अंतहु पाँछितै हो हरि बिनुनाहि मिटे दुख भैरवी ॥
 भैरवी ॥ चलना अके संग नही रे ॥ सुत बित नारि तुं हित करि मानत
 सीतो के तजि इहाँई रहरी ॥ १ ॥ बहुत नृपनन्ह को राज गयो है रहत
 न धन मद को समही रे ॥ २ ॥ जाके संग बहुत दल सोमित सो सम
 छिन महं जात वही रे ॥ ३ ॥ मूर बीर केते हूँ चलि गये जाको बल को
 संकत कहौ रे ॥ सभ नर अंध भये नहि सुभत निशु टिन रहत कुपंथ
 गहीरे ॥ विश्वरूप गहु राम शरण अब भव जल अगम जो पार चही रे
 ॥ ६ ॥ भैरवी ॥ भारि नदिया देखि बहुत डरों अब केहि भांतिनि वाह
 परों ॥ १ ॥ धार अपार नहीं ठहरावा ता महं जन्तु समूह भरो ॥ २ ॥
 जो पै शत सो पलाटि न आवत गाह मकर गहि शास करो ॥ ३ ॥ नाव
 बेरा कछु बुझि न परतुहै केहि बिधितें अब पार तरों ॥ ४ ॥ होत चकोह
 भयंकर नांना सभ कर धोरज निरखि टरो ॥ ५ ॥ ऐसन हित कोइ बुझि
 न परतु है वासन मेरो काज सरो ॥ ६ ॥ राम नाम दूढ़ नाव करे
 अब कन हरि या गुरु चरण धरो ॥ ७ ॥ विश्वरूप रघुनाथ कृपा तें सह-
 जै भव जल पार तरों ॥ ८ ॥ भैरवी ॥ रघुवर अब तमासा तैरो ॥ नट-
 वर सम प्रभु खेल क्रियो है जीव फसे तैहि फेरी ॥ कोउ भूले राजभोग सुख
 कोठममता फन्द धनेरो ॥ १ ॥ नारि पियारि बहुत मानत उर भयो है काम
 को चरो ॥ परजस भ्रमते सदा कपि समनित नहि धिरता छनकैरो ॥ २ ॥
 तृष्या उदधिबद्धत छनछन अतिलाभ शशिहि जब हेरो ॥ बढो तरंग ठगे सब
 दृग चहुँदिशि भयो अंधेरो ॥ ३ ॥ गार्डितव स्वरूप अति संमत जब उर करै
 वसेरो ॥ विश्वरूप भव जाल छुटै तब मुनि जन सब निबेरो ॥ ४ ॥ भैरवी ॥
 गहुशरणागति मन रघुवंगी काभूलेसि जग नातारे ॥ ताहि विसारत मूढ़ मोह
 बसि तजि अमृत बिषखाता रे ॥ १ ॥ रिपुके बंधु विभीषण आरत परे चरण जल
 जाता रे ॥ रिपु मति उरन गहे कश्यपनिधि दीनबंधु जनचाता रे ॥ २ ॥
 कीन्ह अस कलत पति कहं प्रभु सजल नयन मुसुकाता रे ॥ ३ ॥ भेटत
 करि सतकार बार बहु हर्ष न हृदय समोता रे ॥ ४ ॥ कोमल चित जनअथ
 न गहत हरि जिमि जननी शिशु सातारे ॥ विश्वरूप अस प्रभु उदार भजु
 मन बाँछित फल दातारे ॥ ५ ॥ भैरवी दामनि शिरोमणि सम सुजान प्रकृत
 कल्प तरु कृपा निधान ॥ १ ॥ अभिमतें दीता भव भय चाता पालन कर्ता स
 समान ॥ जन सुकृत को पाप नेवारो बालि अंधम हति एकै वानु ॥ अभिभव
 पायो है लंकाका रावण जीति समर मैदान ॥ विप्र सदांसां किशोर अयाचन सक

भुवनमें यश प्रगटान ॥ विश्वरूपप्रभु कृपा करौ अबहरो मोहममता अज्ञान ॥ ४ ॥
 भैरवी ॥ चिगुण तनीया सभै अरुभान ॥ आपन रूप नहीं पहिचान ॥ आवत
 जात भ्रमत बहु भातिन्ह काम क्रोध मदमें लप टान ॥ १ ॥ हरि पद प्रीति
 करत नहि कबहूँ विषय चाह दिन दिन अघि कान ॥ परमारथ हिय
 नाहि गहतु है स्वारथ में सब दिवस सि रान ॥ ३ ॥ भक्ति प्रभाव लखत
 नहि कबहूँ भाया मोह को हित करि मन ॥ इन्द्रिन के वसि भूलि गयो
 है निज करनी न परत पहि चान ॥ विश्वरूप भ्रमे त्यागि भजे हरि सो जन
 जंग महं चतुर सुजान ॥ ४ ॥ विहाग ॥ सोई गववले मनुषां मोर ॥ १ ॥
 राखि सकै असकोउ जग नाही इहा न अस गति होइ है तोर ॥ २ ॥ चाना
 दूर नहीं कछु सामर कैसे जैवे राह कठोर ॥ निर्दय दूत कहा नहि माने
 कितनेो विनय करौ करिखोर ॥ ३ ॥ अवर उपाय नहीं बचिजे की बेगिजा-
 हु तुम हरि की ओर ॥ विश्वरूप प्रभु शरण गहहु अब तव मिटि है भव-
 भयदुख घेर ॥ ४ ॥ विहाग ॥ भस्तानां मन मत वारे रहा निरंतर सकता
 रे ॥ १ ॥ जिमि उन्मत फिरत है जहं तहं सुधिन रहत है तनकारे ॥ जो
 कछु भये बहुरि जो होइ है जो वर्तत नहि चित धारे ॥ २ ॥ काम क्रोध का
 तार कठिन है ज्ञान अनलते तेहि चारे ॥ प्रेम पियाला पियो मगन होय
 सकन वस्तु महं यह सारे ॥ ३ ॥ है यह अगम मिलत सुधि नाही खोजत
 जिनतसब हारे ॥ सतगुर कृपा कोउ जन पावतप्रियत छूटेजग व्यग्रहारे ॥
 निश्वरूप धर अचल वैठिरहु आवा गवनते भयेन्यारे ॥ ४ ॥ परज ॥ सुन भवन
 मन करो वसेर ॥ जहवां चन्द सूर कोउ नाही राति दिवस नहि सांभ स-
 खेर ॥ स्वर्गनरक तहं लोक नहीं है धर्मअधर्म न कछुक निवेर ॥ नहिं छितिते-
 ज पवन नहि पानी नहि साया बार लागत घेर ॥ २ ॥ चर अरु अचर
 कोउ तहं नाही सुरासुर कर्मके फेर ॥ जंच नीच तहंवां कोऊनाहीं
 नहि है साहेब नहि कोउ चेर ॥ ३ ॥ विश्वरूप हय अलख पुरुष यक
 सोहि सजुके सभ मिटि है अघेर ॥ ४ ॥ परज ॥ भजुसन दशरथ नन्दकु-
 मार ॥ भूमोद्विज सुर भार हरण हरि लिये जनहित अवतार ॥ १ ॥ रावण
 सकुल सदल मारे इत करी उत लीला रुचिकार ॥ उत खल कठिन कंस
 काहं मारे टारे इत मही सुर भार ॥ २ ॥ उषसेन कहं और विभषण इत
 उत कीन्ह भुवार ॥ पवनि नीर वहति सरसू इत भानु सुता उत धार ॥
 ३ ॥ इत चरित्र वन हतेउ ताहिका उत वक्रं भगिनिही मार ॥ गौतम तिय
 तारे इत ॥ भु उत धन पति तनय उबार ॥ ४ ॥ राम कृष्ण वर बेप मने

हरसिय राधा वर प्यार ॥ विश्वरूप प्रभु भक्त हेतु करै मथुरा अवध बिहार
 ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ ऊधो रेहै की नहि ब्रज लाल ॥ एक पलक सत कल्प
 विततुं है हमसब प्रभु विन रहत बिहाल ॥ १ ॥ कोउ सखि कहत अबहि
 नहि रेहै भूलेउ धन मद राज बिशाल ॥ २ ॥ हम सब ग्वालनि कवन
 पुछुं है जेहि सेवत अज शिवधन पाल ॥ ३ ॥ लक्ष्मी जेहि पद नाहि
 बिसारत रहति निरंतर तजि निजचाल ॥ ४ ॥ प्रीति करत थिर नहि
 नन्द नन्दन छन में बिकुरै छन में दयाल ॥ विश्वरूप हरि प्रेम मगन
 भई सुत वित बंधु भूलेउ जगजाल ॥ ५ ॥ भैरवी ॥ राम ब्रह्म व्यापक
 निरधार ॥ सदाप्रशांत अभयनिशि बासर जंहवां द्वैत नहीं व्यवहार ॥ १ ॥
 बोधरूप शुद्ध सुख सागर सब कारण कारणते न्यार ॥ २ ॥ वेदहु की
 जहां गति न परतु है भेद प्रपंच करै पैसार ॥ विश्वरूप जेहि संसृष्टि-परो
 है छूटेउ साधने कर्म अपार ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ भूलेमनुवां भटका खात तेहिते
 जनमि जनमि पछितात ॥ १ ॥ आवत जात चखैं चौरासी भ्रमत सदाई
 नहीं धिरात ॥ कर्म कठिन भरभेट देत है शिर परसहत महा दुख घात ॥
 २ ॥ विश्वरूप हरि शरण अजहुं गहु भली भांति सबवनी हैवात ॥ ३ ॥
 विहाग ॥ अब मोहि निजे जानो रघुवीर ॥ प्रणत पालकरुणा निधान हरि
 सेवक बंस अति सेतु शरीर ॥ १ ॥ सकल सुर शुरनमतसदा जेहि कोउ
 संमुख न परत असधीर ॥ पालत मातु पिता जिमि बालक पालन करत
 हरत समपीर ॥ इन्द्री गणदुख घोर नेवारो चरण कमल मन देहुगम्भीर ॥
 २ ॥ अक्की दिनय भोर मांति डारो ऋज सुनो प्रभुचित होय थीर ॥ विश्व
 रूप प्रभुदीन बंधु हो अशरण शरण हरो जनपीर ॥ ४ ॥ विहाग ॥ सखि
 हियगहि लेपिय के शरणवां ॥ चेतु सबेरे फेरि न अवन वां ॥ १ ॥ सेदुर
 सत्य सोहाग वनो है पहिरो सुन्दर भक्तिगनवां ॥ ज्ञान बिराग वसनभल-
 कावो निशितिन होइरहु प्रियके मगन वां ॥ २ ॥ लोक कानि यह सवति
 वडी है तेहि के बीचका ताप सहन वां ॥ विश्वरूप यह समय चूके तै
 मेटिहै नहि जगजन्म मरणवां ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ को दयाल रघुवर समभई ॥
 मुनि जन हेतु गवन किये वनके अवधराज सुख सब पिसराई ॥ १ ॥
 देखि राज सुरपति मन चाहत चिया समान सो मनहि न आई ॥ सकल
 मुनिन काहंदरण दीनो निरखत नैनन नाहि अघाई ॥ २ ॥ निरखि मगन
 भय सुधि सब बिसरी जैसे रंक सकल निधि पाई ॥ तप फल भयउ गयेउ
 कतन के जेसेवपीतह समुदाई ॥ ३ ॥ अस्तुति करत भरत उर आनन्द

जयकृपाल जयजन सुखदाई ॥ फल अरु फलदेत भरि दोनन्हलेत राम
 अति प्रीति जनार्इ ॥ विश्वरूप गहु रामचरण अवठेहु सकल मनकी घतु-
 राई ॥ ५ ॥ परज ॥ वादिन भजन विनु जन्म क्रियेरे ॥ ना सतसंग न
 साधु की सेवा ना विप्रन के दानदियेरे ॥ १ ॥ तरथ वरत नही कछुकोन्हो
 पर उपकार न कवहुं क्रियेरे ॥ २ ॥ कथा सुधारस धार वहंतु है नाहि
 श्रवण घुंठ कवहुं पियेरे ॥ ३ ॥ विश्वरूप रघुवीरशरणी विनु कीट नरीखे
 जगमें लियेरे ॥ ४ ॥ विहाग ॥ गेहुरे निजसरूप मन भावन ॥ तजु प्रपंच
 सब अगम मोह कर दाख शोक बढावन ॥ १ ॥ अलख अगोचर नेत नेत
 जेहि करत है वेडासिखावन ॥ अगम अनदि सनातन सुख घन शुद्ध निरं-
 जन पावन ॥ २ ॥ जैसे रविप्रतिबिम्ब अमित घटदीखत अमित रूप छब
 छावन ॥ नहि परमारथ भेद लखतु कछु केवल एक सोहावन ॥ ३ ॥
 लवण पुनरी परेउ अगम जल सकै कवन विलगावन ॥ विश्वरूप अपने
 पुरख भये फेर रहत नहि आवन ॥ ४ ॥ विहाग ॥ विनु हरि मन सुख
 कतहुं न पैवे ॥ कोटि यतन करि जो जग घैवे ॥ सुर तस आकटाके सम
 तो कहं अमिय भोजन चिखसम खैवे ॥ १ ॥ कसतल विभव विराने होइ
 है नरक सरिस स्वर्गहु जो जैवे ॥ २ ॥ अहित अरि होहै गुण अगुण सम
 विविध भौंति सेवा जो लैवे ॥ ३ ॥ विश्वरूप येकराम भजन विनु पर
 वसहोय अंतहुं पछितैवे ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ जग सुख जन्म क्या खेयारे देखाने
 वाहवां ॥ नजीरी कूचकी गाजे क्यों गाफिल होतरे काजैगरभ तो फेरसो
 नाजे ॥ १ ॥ रैनदिन सैन के राजे जो वालुन घेरि के छाजे जियय सुख
 मे हसो टाजे ॥ २ ॥ समुझि जब जगत् सो भाजे जो कानन दाव को
 लाजे लखारे विश्वमै आजे ॥ ३ ॥ खेमटा ॥ छंडो नेहियां रसीले छवीले
 हरि अपने मुख भवन वातुं कहि नागर रंग रंगीले ॥ १ ॥ ब्रजललना
 दूग चपल बाण गहिमरत मोहि गसले ॥ विश्वरूप मन मोहन प्यारे
 काकरिहारे छवीले ॥ २ ॥ भैरो ॥ हरे क्यौन मान रामोहो ॥ अपने जन
 हरि जान ॥ भय हरि लीजे सुख पद दीजे देहु ज्ञान के वान ॥ १ ॥
 अगजग कर्ता सब को हर्ता मोह तिमिर को भौन ॥ प्रभु मुखतरो मुनि
 हित हरो विश्वरूप के ध्यान ॥ २ ॥ भैरो ॥ राम कृपाल दयानिधि के
 शो पतिराखो प्रभु तुमहि बडोई ॥ एक भरोस आस हरितेरे अवर नही
 मोहि हितिय सडोई ॥ १ ॥ गति मति भुक्ति टानिसवही कहपालत यथा
 भाग समुदाई ॥ सकलचराचर कर्ता केवल इन्द्रजाल मयजग दरशाई ॥ २ ॥

ऐसी प्रतीति भई प्रल्हादहि "सुखी भये" सब भय बिसराई ॥ पितु कृत
 तापदाप नहि ब्यापेउ जिमि अनीशकृतेत्र टरिजाई ॥३॥ जल थल सरिस संगन
 होय सोवत बिप अमृत पावक शितलाई ॥ महा मंत कुंजर पंगुतन परराई
 सम नहि भारबुझाई ॥४॥ मारण मेव किये सबद्विज गण भये विपरीत गिरे
 सुरछाई ॥ विश्वरूप जोहि प्रभु रखवरो काल प्रचंड निकट नहि आई ॥ ५ ॥
 परज ॥ देखो देखो मुरलिया श्याम को ॥ अमित चन्द रवि दुति उजियारी
 निरखत मन विश्राम को ॥ १ ॥ सकल निगम ते पूरि रही है आनन्द कर
 छवि धामको ॥ चिभुवन मन मेह पटतरनहिकोउ हारी सब शशि आन को
 ॥ २ ॥ विश्वरूप मोहति मन मोहिन करत अधरस पानको ॥ ३ ॥ भैरो ॥
 अद्वय ब्रह्म सनातन पूरण केवल शक अधारो ॥ स्वगत सजाति बिजाति
 भेद ते रहित शुद्ध सुख सारो ॥ १ ॥ निगमत भेदरहत जिमि तस्महं पौ-
 तफल फल डारो ॥ भिन्न भिन्न तरु भेद सजाति गिरि विजावे देवहरि ॥
 २ ॥ विविध भेदनहि घटत अकलमहं असमत वेदबिन्दरो ॥ अचल अम
 लअजेव्योति अनूपम बुद्धि बचन मज न्यारो ॥ २ ॥ जिमि भाला महं ओहि
 वपु भाषत पाई ककुक अधियारो ॥ तिमि निगुणमहं नाम रूप दोउ गुण
 मयभेद अपारो ॥ ३ ॥ तजि विपुटरति भेद जनित मति हाति सब विषय
 विकारो ॥ विश्वरूप निज बोध आत्मा साईरूप हमारो ॥ ४ ॥ विहाग ॥
 माधव मनकृत जग व्यवहार ॥ जामने जीति कियो वस अपने सोजन भव
 तेन्यार ॥ १ ॥ जोइ जेइ गुणत हात सोइवपुनट वर सम टक सार ॥ कन
 महं भुवन सकल फिर आवत जिमि सबठोर अगार ॥ २ ॥ नौर नयनअति
 प्रबल सिलीमुख जब वेधत उरपार ॥ तासु संरूप हीत आतुर तव भूलत
 सकलबिचार ॥ ३ ॥ रसनति रसस्वाद पाई बहु धावत करत अपार ॥ पाये
 हृषी विपाद मिलेबिनु आरहित गहत विकार ॥ ३ ॥ तवस्वरूप सुखरूप भनु
 जब हृदय करै उजियार ॥ विश्वरूप मन दीप अमित तम नसत न लागे
 वारो ॥ ४ ॥ विहाग ॥ रघुवरजो से आदर चहुरे ॥ जेह आदर ते सब घर
 आदर पुनि न अनोदर लहुरे ॥ १ ॥ जाको भूति भुवन महं ब्यापी कजअख-
 डित चहुरे ॥ आज्ञा करत सुरासुर जाको कर वाधि सिरमहुरे ॥ २ ॥ जाको
 बिलते शेष शीस पर सरस पंशम महिरहुरे ॥ येकालकाल कठिन पातक टल
 नाम अनलते टहुरे ॥ ३ ॥ निबल केवल श्रीकृष्ण निधि जा दृढ पद रज
 महुरे ॥ मानुष देह साज भल पायो परबस दुख जानि सहुरे ॥ ४ ॥ कमल
 नयन जनत प विमोचन तासे विनय निज कहुरे ॥ विश्वरूप प्रभु अदम

उधारण केहि अपराध तजहुरे ॥ ५ ॥ विहाग साधव मनकी मैलिहरो ॥ त्रिनु
 तव कृपा कटाच महाप्रभु कवहुन फन्दटरो ॥ १ ॥ मुकुर मलीन नाहि मुख
 दीखत जो सनमुखहि धरो ॥ तिमिउर बधत दीखत नाही हरि ऐसे जोट-
 परो ॥ २ ॥ मनकृत वेग अनेक विविधि विधि सहस प्रबाहभरो ॥ जीवनि-
 काय ब्रहतन लहत थिति कोटि उपाई करो ॥ ३ ॥ सबको पतिहित मति
 टायक असदीखत नहि दुसरो ॥ सिंधु अगममहं ठपल तरणि चढ़ि कहहु
 कवन उवरो ॥ विश्वरूप प्रभुगहु शरणागति को भवजलन तरो ॥ मेरिबेर प्रभु
 देरि किये का मन अतिशोक गरौ ॥ ५ ॥ भजन ठुमरो ॥ काहभये बहु भेप
 बनाये जोदिल रामन आयारे ॥ लोभ विवस मन छेभ बढावत रसनावस
 नित धायारे ॥ गहत कुसंगकुचाल कुमारगक्रोधके कोशभयारे ॥ १ ॥ परतिय
 परधन प्रीति निरंतर परअकार बढायारे ॥ निगमागम गुरुमत नहिमानत
 कल्पित मतठर भायारे ॥ २ ॥ पुजा हेतु दंभबहु विधि करे देखरावत
 बहु मायारे ॥ एकोछन हरि भजन करत नहिकपट वजार बसायारे ॥ ४ ॥
 देखतहु भये अंधनेन देख नहि समुभक्त सपूजायारे ॥ विश्वरूप जन यम
 गणयेहैं भुलिहै सकन उपायारे ॥ ५ ॥ परज भजन ॥ देखोरे जग चीन्हत
 नाही ॥ अकल अनीह जाहि अति गावत सोवैठे अपनेघट माही ॥ १ ॥
 शुद्ध सनातन व्यापक चेतन कोटि चन्द रविद्युति समुहाही ॥ २ ॥ रवि
 करनीर निराप नितधावत तृषा न गिटे अधिक अधिकाही ॥ भयेदृग अंध
 बंधनहि सूभक्त जैसे हठि कपिकीर बंधाही ॥ ३ ॥ चिन्तामणि तजि कांच
 गहतुहै भटकत फिरत नकवहुं थिराही ॥ तजि आत्मा सुवासिंधु मे हवस
 पिबत असकण कैसे अवाही ॥ ४ ॥ सुतवित देहनेह अति बाढी सपन
 बिभव मानत थिरताही ॥ विश्वरूप गुरुघट संभव विनुभव दुर्गम जलनिधि
 नसुखाही ॥ ५ ॥ साम कल्याण ॥ मेरेहिये वसोयनु णानी ॥ चितनहि टरत
 हरत दृगदृग बरकर सर लसत बसतमनहि नितकंज नयन छवि येनवैन
 कहै मतियां हरत मुमुकानो ॥ १ ॥ गति चतुराई चित लेतहै चोराई
 चहुं चमक छटाई तडितःई पटछाईहै ॥ विश्वरूप चित लज्जित सदन
 भयेनिरपि वदन छवि खानि ॥ २ ॥ साम कल्याण ॥ हमभले तुम्है पहि
 जानी ॥ थिर नहि रहत गहत कर यदुवर रसवस चपल हरत चितवनि
 चितकंज वदन छवि सदन शिरोमणि मन मोहन छविखानी ॥ १ ॥ नन्द
 कीदाहाई तोहि कहत कन्हई अबछोडु चपलाई लरिकाई न भलाईहै
 विश्वरूप ब्रजजन वसकिये काहिवयन सरसरस खानी ॥ २ ॥ भजनठुमरो ॥

मनचेतो राम सुज्ञान सपने समजगरे ॥ काम कुटिल दुःखमूल शूल प्रदतेह
 वसि अथम भुलानि विषयारस मगरे ॥ १ ॥ कनक कामिनी केश तोष धरे
 भटकत जन्म सिरान भूटे चितपगरे ॥ चेतनतन मानुष कोषयो सोनहि
 ममुक्त अपान जैसे जडगनरे ॥ २ ॥ विश्वरूप शिरकाल वैठुहटि अक्षयिहते
 गोप्रांन वचिहो केहिलगरे ॥ ३ ॥ भजन टुमरी ॥ मनभजिले राम उदार ॥
 निशि देन छनछनरे ॥ सातुउदर दुःख लहेउ विविधि विधि कीन्है भजनकारार ॥
 भूजे तन धनरे ॥ १ ॥ अजहुं कुमग तजुशुभ मग प्रम सजु जग सुख टरत न
 वार जैसे रजकनरे ॥ २ ॥ करिवहु यतन कहेउ गुहहित मति विधत नाहि
 पहार जैसे सर धनरे ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु एक शरण विनु सुनि है कवन
 पुकार जव गहै यम गनरे ॥ ४ ॥ भवन बिहाग ॥ अब जिन बिछुरो राम
 दृगनते ॥ गुण निधान कल्या के सागर समता हरु विषयनते ॥ १ ॥
 तत्र मुख चन्द्र चकार होउ मन प्रीति पपीहा घनते ॥ तेरो चरित अगाध
 बारि मन मीन पीन निशि दिनते ॥ २ ॥ दृग भरोस आशा दुःख तेरो दु-
 सर आस न मनते ॥ हसनि चलनि बोलनि मन भावनि निरखी प्रभु अनु
 छनते ॥ ३ ॥ काम कुटिल ताभय दुख दाई बेगि टपे यह तनते ॥ विश्व-
 रूप रघुवर सुरत हर ताजि याचे काहि कृपितते ॥ ४ ॥ परज ॥ करि सुर
 बाज अवध प्रभु आये ॥ सहित लषन सिय राम विराजत अगमित इति
 पति छवि सकुचाये ॥ १ ॥ पुर ज्ञान कंज राम रवि निरखत विगसे मोद
 सरम उर छाये ॥ निरखत भरत परे प्रभु चरणन्ह मगन भये तन सुधि
 बिसराये ॥ २ ॥ मिनत मप्रीति भरत से प्रभु जिमि एका शशि जल निधि
 एकठाये ॥ ३ ॥ एकाहि वार मिले सबते प्रभु धरि प्रति रूप न कोउ लखि
 पाये ॥ गुरु वशिष्ठ मुनि वृन्द सबे मिलि रामहि तिलक दिये हरपाये ॥
 वरपत कुसुम देव मुनि हरपत ब्रह्मा नन्द मगन समुदाये ॥ विश्वरूप प्रभु
 राम राजते सकल भुवन के शोक नसाये ॥ १ ॥ परज ॥ राधिका हरि राम
 लोभाये ॥ कुंज लता वन सघन सोहावन तरु फूले दल हरित सोहाये ॥
 १ ॥ राधे केश कुसुम रुक्मिणी निज कर रुचिर हार पहिराये ॥ कुमुद
 बंधु कर रुचि कर सोहै वन प्रकाश चहुं ओरहि छाये ॥ २ ॥ मुरली टेर
 कियो मधुवन हरि सुनत सखी मन मोद बढाये ॥ विश्वरूप मोहन संग
 बिहरति सब सखि छन समर इन बियाये ॥ ३ ॥ बिभास ॥ अवध पुरी
 सरयू तटा बिहरत रघुवाई ॥ सघन वन सोहावन अति सुन्दर सुर पुर
 समान निरखत मन खीच लेत मोद हिय बढाई ॥ १ ॥ भरोहै सुगन्ध ज-

मित लहत नाहि कोउ प्रमित सुमन फल अपार लगे मंहि तरु नरु जा-
 ई ॥ अलिगन गुजार करत विविध विधि प्रमोद बढत पीवत रस मधुर
 खानि रहत नित लीभाई ॥ २ ॥ निर्गत है मोर जाति गान करत करि
 पति कोउ द्विज राम चरण निरखि ध्यान लाई ॥ ३ ॥ पंछी फल रुदिर
 खात हर्ष नाहि उर समात कंचन मय भूमि सकल सोभा निधि छाई ॥
 विश्वरूप राम धीर बिचरत कर धनुष तोर सीता लछिमन समेत अनन्द
 अधिकारी ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ बिनु रघुवीर न जरनि नमाई ॥ यह जग ज्ञान
 कराल सल प्रद छुटे न अवर उपाई ॥ १ ॥ ध्रुव प्रह्लाद अब हृषि ना-
 रद सनकादिक समुदाई ॥ राम नाम रस अमिय पान करि विहरत शोक
 विहाई ॥ २ ॥ वालमीक घट संभव मुनिवर जपेउ नामे मनलाई ॥ ज्ञान
 भवन सुख रूप भयो है चहुं दिशि कीरति छई ॥ ३ ॥ अबहूँ मनु जानु
 हित अपनो छोड़ो अश पराई ॥ विश्वरूप सुख सिंधु टानि हरि केवल
 गहु शरनाई ॥ ४ ॥ भजन तल जलद ॥ जय जय अवधेश सुवन रघुवर
 सुखदाई ॥ जगत जाल तिमिर हरन दीन दानि सकल शरन नटवर सम
 खेलकरन लीला दर्शाई ॥ १ ॥ रावणारि असुर मारि द्विज सुर महिताप
 टारि मुनिजन होय अभय ध्यान चरण मे लगाई ॥ अस्तुति सम देव क-
 रत सुमन वृष्टि सुभग होत बाजत बाजा अनेक दिशि दिशि धुनिछाई ॥
 २ ॥ नाचत सत्र देव वधू मुनिजन मिलि गान करत निरखत हिय मगन
 होत अनन्द अधिकारी ॥ ३ ॥ कपि दल सत्र निकट ठाठे चरण कमल
 प्रीति बाढ लंका पति भूषण पट सब के पहिराई ॥ ४ ॥ विश्वरूप रामदास
 करत नाहि जगत आश रिद्धि सिद्धि बिभव सबे आपुहि चलिआई ॥ ५ ॥
 राग टोड़ी ॥ हरहु राम काम धोर मोर के घटासे ॥ रैनवार चित चकोर विषय
 चन्द प्रेम कीन्ह चरण कमल छाड़ि दीन्ह मोह मंद फासे ॥ १ ॥ तड़ित
 चमक सधन गेह तासो प्रेम अधिक कीन्ह अपनो निहारि लीन्ह सूठमंद
 आसे ॥ २ ॥ जात कुपथ करि कुसंग निगम जोध चित न दीन्ह काटि
 भांति रोध कीन्ह योग युक्ति पासे ॥ ३ ॥ विश्वरूप प्रभु रमेश कमल नयन
 नयन कौर हरि हरो कुमति धोर सकल शोक चासे ॥ ४ ॥ राग टोड़ी ॥
 रवि ललाम श्याम चोर भोर के छटासे ॥ ग्वाल वाल संग बटोरि कुंज भ-
 वन केलि कीन्ह अमित मोद सबे दीन्ह प्रेम पुंज प्यसे ॥ १ ॥ कलकल
 चिर ललित केश कमल कोस भंवर पाति मखि समूह भांति भांति तड़ित
 घन घटासे ॥ २ ॥ वमन कपन कटि मुदेश लजित हर देव छन्द ज्योति

भक्त मूर चन्द मन्द मन्द हासे ॥ ३ ॥ विश्वरूप छवि अपार चकित होत
 मदन हरि सकुचि सकुचि दृग न फेरि सरिस कहां कहांसे ॥ ४ ॥ खेमटा ॥
 नःहकरे वितत सब दिनवां ॥ तहि हरि भजन शरण नहि गुरुके ह्वै हैयम
 गण गांहकरे ॥ ५ ॥ कुमति कुसंग सनेह बढाये मोह भार शिर वाहकरे ॥
 विश्वरूप पुनिपुनि पछितै हो पै होटुख डर दाहकरे ॥ २ ॥ मलार ॥ देखोसी
 मायाघन चहुंघेरे ॥ कपट कुसंग कुभाव कुमतिजल आठयामवसेरे ॥ ज्ञान
 ध्यान छवि चांद सूरवर ज्योति टपैचहुं फेरे ॥ भयो अघियार विचार नसानो
 सुभक्त रूप नसेरे ॥ २ ॥ सूखेव धर्मजवास आश दुख लताललित बहुतेरे ॥
 विश्वरूपगृहगुरुको शरण गहोतन्र यह द्वंदकटेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ देखोरे विगिरि
 गईसबवात ॥ जहां मनोराज साजसुख कैसो झूठो ज्ञानकनात ॥ १ ॥ गहगुरु
 चरण कंज सुखसागर सोभन रितु वसात ॥ सहज सुभाव ज्ञानघन बरषत
 आनंद वारि सोहात ॥ २ ॥ मनोराज दुखद्वन्द फन्द भमतपत धूरि बरि
 जात ॥ विश्वरूप जिनको मुधरो है नो गुरु शरण समात ॥ ३ ॥ छन्दमधु-
 कर ॥ रघुवीर धीर कृपाल गहु मन शरण सुखघन कारण ॥ अवधेश बाल
 दयाल तरहरि गहन अडल बारण ॥ १ ॥ मुनिकंज पटपद सबयारि रमेश
 राजित भूषण ॥ खरदूषणारि मुरारि अजरुचि लेज अगणित पूषण ॥ २ ॥
 श्री रावणारि रमेश माधव पुरारि नरहरि श्रीधरं ॥ सर्वश शेष सुरेश मुनिवर
 सेव्य चरण सुखावहं ॥ ३ ॥ नरकारि ईश व कारि प्रभु गोपाल नन्दन चिद
 घनं ॥ असुदेव नन्दन नन्द सुतगो गोपी जीवन मुनि घनं ॥ ४ ॥ शिरद्वच
 धरमुख मुसलि धर भगवन्त भक्त भयापहं ॥ शरचाप धर रघुवंश बर श्रुति
 गेय मुयश सुखा वहं ॥ ५ ॥ बल विश्वरूप नगारि रिपु सनकादि व्यास
 सनातन ॥ मिथिलेश नंदिनि नंदकर हर नाथ भवभय जातनं ॥ ६ ॥ राग
 कल्याण ॥ चित्रकूटि पावन थल हरण सकल पातक मल निवसत रघुवंश
 वीर भक्तन सुखदाई ॥ मुनिजन समूह धीर राम चरण प्रीति धर प्रभु के
 आगमन सुनत दर्शनके आई ॥ फूलनकी अमित जाति माला गुधि बिबिधि
 भांति प्रभुके पहिरसवत रुद्र आनन्द अधिकाई ॥ २ ॥ निगुण हरि निर्विकार
 अज अनादि जगअधार महिसुर महिभर हरण वपुके प्रगटाई ॥ ३ ॥ ग
 वत गुण सहित प्रेम भक्तिभाव अचल नेम जोरैकर बिनय करत वचन बर
 सुनाई ॥ ५ ॥ वनचर सबजीव जाति पक्षीसब बिबिध भांति निरखत मन
 सुखी होत बिहरत हर्षाई ॥ ६ ॥ सबकर सबहीसो प्रीति काहुसन कछुना
 भीति साधुभाव सरिस सबै बयर के बिहाई ॥ ७ ॥ विश्वरूप प्रभु उदार

त्रिविध तप हरनि हार खजदत्त हति विषम दृन्द अमय मुनि वसावै ॥
 ८ ॥ भैरवराग ॥ याछवि वंशी नजरिया संजनी मोहन दृग सोहेरे ॥ चंपल
 अमन कुंडल कचकारे वदन कंज आलि घरे ॥ १ ॥ श्याम कंज तन मंजु
 मने हर भूषण हचिर वनेरे ॥ कोटि काम छे वं धाम श्याम को निरखि
 संकुचि मुख फेरे ॥ २ ॥ तिरिछि चाल बाल संग विहरे दे मुख सुरली टरे
 ॥ पंद्र पराग अनुराग निरन्तर विश्वरूप मन मेरे ॥ ३ ॥ मलार ॥ मोहन
 रहत निरुन थार ॥ घन समान चंचल सखि मोहन जैसे दीप समीर ॥
 कंवहु भूषण कजे वनिह सिधारत कजे यमुना के तीर ॥ १ ॥ युग सम त
 युवता जेन को दिन दीन लखे यह पीर ॥ विश्वरूप सखि हरि विनु देवे
 हनि नयन फरिनेर ॥ २ ॥ आसवरी ॥ नन्दलाला हो भव दुख मोहन
 नाम ॥ शरद सरेहिह दृग युगल शोभा सब सुन्दानि ॥ दशन प्राति दाडिम
 घनो अरु अरु छविखनि ॥ निरखत चितविशराम ॥ १ ॥ भूकुटि मलक
 खेह कनो निज कर रवे मुजान ॥ कुसुम चाप पर चाप के छवि धन मवे
 होरान ॥ मुमिरत पुरण काम ॥ २ ॥ कुंडल छवि कवि को कहै चहुदिशि
 ज्योति निसान ॥ मरुत मणि गिरि पर उडित प्रात युगल विमि भान ॥
 जनत महारुत धाम ॥ ३ ॥ कुटिल केश मनको हरि मुजवारज कुहुपास ॥
 जैसे मयूर प्रेम सो करत सरम रसधाम ॥ मुनिजनचित अशिराम ॥ ४ ॥
 कंठहचिर वनमाल छवि मणि माला छविदेत ॥ नामि हचिर गभीरतर
 चितेनो चित हरिलेत ॥ हेरत पज छनयाम ॥ ५ ॥ भुज विशलि निर्गजलि
 हर अगद कटक अनूप ॥ अंगुलीय अंगुरिलसेजडित नगोना रूप ॥ निज
 जन वांछित दम ॥ ६ ॥ जानु मने हर चित वसे संकन अा छविने ॥
 चरण युगल की चन्द्रिका युगल नयन सुवदयन ॥ भव भवे टारत वास ॥
 ७ ॥ वसन पीत मोहेभली ताडित चमक चहुठाम ॥ विश्वरूप वशी हचिर
 वसि कीन्हो ब्रज वाम ॥ लज धन जीवन श्याम ॥ ८ ॥ आसवरी ॥ श्री
 महाराज हो भव भय भजन राम ॥ कंज वदन छवि चित है चितवान
 चित हरिलेत ॥ वनसुधारस छवि भरे सुनत अरण सुखदेत ॥ कलि दुख
 मोचन साम ॥ १ ॥ भूकुटी छवि सब छवि सिमिटि कीन्हो अपने पास ॥
 उतपति लय जगत को छनमह करत विनास ॥ सबघट कीन्हो विशराम ॥
 भाग तिजेश रवि बाल छवि कुंडल तरुण दिनेश ॥ सज मंद मुमुक्षात प्रभु
 सहित कुटिल मुकेश ॥ हेरत मोहन काम ॥ ३ ॥ दाहिने छवि घन लपन
 प्रभु कर धनु परम मुजन ॥ करजोर आगे धई मारत मुत बलवान ॥ सीता

सोहतिवामा ॥ ४१ ॥ सोहता कंठ विशाल छविमाल सुभूषण अंग ॥ जगमग
जगमग ज्योति अति चहुंदिशि उदित पतंग ॥ कलितम ट रत भान ॥ १ ॥
भुजा विशाल वर चाप धरा श्रीपतिकृपा निधान ॥ कहना निधि त्रिवली
निरखि टरत तोनि गुण मान प्रा पीते बसन छवि धाम ॥ ६ ॥ धरणा युगल
नख ज्योति अति मणि सुज्योति की प्राति ॥ मोह मोन अज्ञान हर मोचल
कांठ रुचि कांति ॥ हेरत आठो व्याम ॥ ७ ॥ रतन सिंहासन ज्योति घन
सोहत राम सुजान ॥ लपना सहिते श्री ज्ञानकी विश्व रूप को ध्यान ॥
भंगल मूरति श्याम ॥ ८ ॥ खेता ॥ बिना सुधुकीर छवि देखे कठिन सखि
शेचि ठरे छाये ॥ कहां ओह तैत दिन सजनी अंधधरुं सकल सुर प्राये ॥
कहां विशाख दिन पहिलो ॥ निरखि सुर राज सकुचये ॥ ९ ॥ कहां ओह
जेठ दिन ॥ सजनी तपत दुख नेरु नहि पाये ॥ कहां आसाठ चतु सजनी
प्रीपमानि ज धाम बिसराये ॥ १० ॥ कहां ओह मास भ दो की उमडि जल
धार महि छाये ॥ कियो चहुंओर धुनि टाटुर गयो सावन न सुख पाये ॥ ११ ॥
कहां आसोज वह सखि रे धवल सरयू अमिये छये ॥ कहां सो मास
कलिक कौ बसन मुनि जतीर तपलाये ॥ १२ ॥ कहां अंग हेनु सो हावन सो
सकल महि पाल पुर प्राये ॥ गयो सो मूष जे ह दिन के लवन सिय राम
वन पाये ॥ १३ ॥ कुसुम चतु भाघ नहि भावे निरखि जिय मोह क्रिदिक ये
॥ चढो फगुन कठिन सखि रे भवन रघु नाथ नहि प्राये ॥ १४ ॥ सकल
पुर प्राय रघु नन्दन विधाता वाम बिकुराये ॥ कवनो विधि विश्व जीवनेरे
जलज जिमि भोन विलगाये ॥ १५ ॥ वारह मासा ॥ बिहरी रघुवीर अगि सुत
दशरथ केरो ॥ चैत चतुर सखि मंगल गाड ॥ परम मोद सब के उर छौड ॥
रास श्याम छवि अति रुचिकारि ॥ निरखत सकल अवध नर नारि ॥ नयन
नहि फेरो ॥ १६ ॥ विशाख मास खिलत वरबन ॥ परम मनोहर अति सुख
देन ॥ सुतत हेरत अति सकल समाज ॥ जैसे पोक रुचि रघु राज ॥ वचन
वर टेरो ॥ १७ ॥ जेठ जननि प्रभु छवि सुख दाय ॥ निरखत प्रीत न हृदय
समाये ॥ दुलभ सुख अनु छन अधिकाये ॥ रईनि नाथ जिमि सागर पाये ॥
बढत बहु तेरो ॥ १८ ॥ असाठ आस होय सब की पुर ॥ जे याचक होय
जाति हंजुर ॥ अचले राज संपति समुदाय ॥ पाई सुखी सब दुख बिन
साय ॥ शोक नहि नेरो ॥ १९ ॥ सावन अति कुंडन मलेकार ॥ पीत बसन
दामिनि उजारे ॥ अंग अंग भूषण बहु भाति ॥ जेथे चांद मूरवकी पाति ॥
कियो हे वसरो ॥ २० ॥ भादो भक्त हेतु धरि रूप ॥ लोला करत सकल जग

भूपः ॥ वेदाः वेस्तिः गावतः निशिवाः ॥ सुनत लहतः सुखः सिंधुः अपारः ॥ परै
 न भव घोरो ॥ ६ ॥ कुवारः कुमति छेडोः जगो जाल ॥ प्रीतिः करो मन द-
 शरथ लाली ॥ अग्रसे नरतनः उतम पाई ॥ ननाहकः धरणी ध्यामः लो भाई ॥
 करत है अबरो ॥ ७ ॥ कातिकः कामिनिः करके शिंगार ॥ मैजनः करि सरयू
 सुचि धारनः ॥ दिनः मणि प्ते मांगति करे जौरि ॥ असम रूपः वैसे मान-
 स मोरि ॥ नयनः हित हेरो ॥ ८ ॥ अग्रहनः अग्रयितः जन की भैरो ॥ आये
 जनकः पुरः श्री रघुवीर ॥ हरः धनु तेरि जनकः दुखटारि ॥ सीता व्याहि
 अवयः पुंगु धारि ॥ मोदः बहु तेरो ॥ ९ ॥ पूषः परसः पर प्रीतिः अपार ॥
 करति सखी सब सीयः शिंगर ॥ सेवा करति बहुतः मनलाय ॥ छवि निर-
 खति नहि नयनः अघाय ॥ पुलक उठेरो ॥ १० ॥ माघः मुनीशः शेषसुर राज
 ॥ विद्युः हूरबाणी वीणा साज ॥ गवतः रुचिरः सहितः वरतानः ॥ मंगल ति-
 रण दीपः वितानः ॥ लगे चहुंफेरो ॥ ११ ॥ कागुर्नः फलः देखे मियराम ॥ प्री-
 तः अवयः पुरः जन विश्रामः ॥ विश्वरूपः सुख धरे चहुं ओरि ॥ उडतः अवीर
 रंगः भरेखारि ॥ देवजयः टेरो ॥ १२ ॥ रागभैरो ॥ यशोदा नन्दनः जगवदत
 मनः मोहन मुरली वाला ॥ बंशी वजावतः चितहरि लीन्हौ अचवि मोहती
 सबको कीन्हौ ॥ प्रभु नन्द लाला कमली वाला ॥ यंचरंगु सोहै वनमाला ॥
 १ ॥ वारिज कर वारिज छवि छ वतः वारिज नयन शूयन दर शांवतः हं-
 सतः हंसावत खेल मजावत विहरै संगः अजवाला ॥ २ ॥ विश्वरूप गिरधर
 छविनीको दिन अणितिन शशि सुख चरफाको अजब कना जे हकाल को
 काला दृग हेरत प्रोवाला ॥ ३ ॥ राग परज ॥ प्रभुविनी अवन करैमेरो भाव
 ॥ विन प्रभु शरन मिटै नहि कवहुं यह दास्ये जगके दुखः दाव ॥ १ ॥ जा-
 सुकृपाते लहत सकल सुख छनमें करत रंजते रात्र ॥ २ ॥ जे कछु करों सो
 प्रभुहि समपौ छीडिदेहु मन अव अपनाव ॥ ३ ॥ विश्वरूप सक आशराम के
 दूजे नहि अघार नित आव ॥ ४ ॥ विहाग ॥ शरणा गति राम कृपालकी ॥
 मिटे सकल जग जालकी ॥ आनन्द धन प्रभु जनहित करकजन उरवसत
 मराल की ॥ १ ॥ श्याम स्वरूप अनूप सोहवन शोभा घटत तमाल की ॥ २
 छनछन की सबवत लेखत प्रभु जानत सब उर हालकी ॥ ३ ॥ ज्ञानध्यान
 करि कोउ जन पावत छूटत सब उर सालकी ॥ ४ ॥ विश्वरूप प्रभु दवत
 चाहि पर सोन परत सुय कालकी ॥ ५ ॥ राग भैरो ॥ अवध पुरी मद्युमास
 सोहावन श्री नवमा कहभौर भयोरी ॥ अज अनादि मन बुद्धि अग्ने चर श्रुति
 जेहि नेति कहोरी ॥ महाराज दशरथ तप बलते मुरहित जन्म लियोरी

॥ १ ॥ बाजु बधाव मोद जिमि बाढो चन्द सिधु निखोरी ॥ मणितोरनः
घरघर कंचन घट मनिमय ज्योति जगोरी ॥ २ ॥ गज बाजी गोधरणी धाम
बहु पट भूषण बहु जोरी ॥ महा राज दियेदानः सवने कहं भुवन अयाच
किजोरी ॥ ३ ॥ गिरा अमर तिय उंमो सहित बिधि सुरहरानन्द किशोरी ॥
आय रिद्धिसिद्धि जुत गणपति रविरथ नभ बिलमोरी ॥ ४ ॥ नारद सनक स-
नन्दन मुनिगण श्रुति गणरूप धरोरी ॥ करि उतशःह साज सुर नायक सही
सहित पहुंचोरी ॥ ५ ॥ देवसरी यमुना विधि तियमिलि सर सागर सगोरी ॥
सरयु सोहावनि शोक नसाषनि सब तीरथ बटुरोरी ॥ ६ ॥ परम मनेह-
र शोभा पुरकी रचना अलख बनेरी ॥ शारद की मति भूलि गईहै बरनि
सकै कवि कोरी ॥ ब्रह्मा नन्द मगन सबकोई भये देहदशा विसरोरी ॥
रुक्ल भुवन के पाप तापगये सुखघन पुण्य भरोरी ॥ ८ ॥ सबजन सबजन
रत सुकर्म मह कुपथ बिचार टरोरी ॥ तछि चपलाई रमा सोहावनि तोह
पुर आई वसोरी ॥ ९ ॥ कौशल्या मुख कंजरांम को निरखि नपलक परोरी ॥
विश्वरूप सर्वेश दयानिधि उर पुर बास करोरी ॥ १० ॥ भैरवी ॥ सजरे ग-
हिले नाम निसानी ॥ झूठे जाल कालके फन्दा अचहुंनही पहिचानी ॥ १
॥ इन्द्रिय गण सब दुखके सागर निज निज विषय सयानी ॥ धोखा अंत
कारगे तोसो जिमि ठग झूठी बानी ॥ २ ॥ लहि बर साज भजन को आय
अरुभेड सुत पुरानी ॥ लाभ अधिक कछु नजरि न आवै मूलहुकी भइहानी
॥ ३ ॥ चेतो निशि वासर गुरु मगुको जो सब सुखकी खानी ॥ विश्वरूप
अब ज्ञान बनेहो पछतैहो अभि मानी ॥ ४ ॥ भैरो ॥ राम भजनकी सुधि
विसराये ताहक तू सठ जनम गंवाये ॥ विषय विवस परि लपट गयो है
स्वानः सरीके घरघर थाये ॥ १ ॥ कामे क्रोध मटे लोभ महाबल रैन दि-
वस तोहमाहि विताये ॥ जो सुख अगम टिये बिसराई जोस चाटि जिमि
चाह अघाये ॥ २ ॥ ज्ञान नयन ते अंधे भयो है केहिबिधि साहेब रखाहिं
लखाये ॥ विश्वरूप अविगत अविनाशी विनुहरि कृपा शरण नाह पाये ॥
३ ॥ परज ॥ लाजकरो हरि ॥ अपने जलको ॥ राम कृपानिधि करुणासागर
अंतर गति जानत सब मन को ॥ १ ॥ गज जल मगन नगन भइ द्रोपदि
लीन्हउबारि विदितहै भुवनको ॥ वेद पुराण संत संमत मत पालन करत
सटा जन प्रनको ॥ २ ॥ कमल नयन चित्त चयन दयन प्रभु तुमसमनाहिं
भत्रे तापस मनको ॥ अन्न बारिधि नासन सब समरथ दायक परमारथ सु-
ख घन को ॥ ३ ॥ जन मन कामदेव तरुमुन्दर जनक प्रबल अति मोह टहनको

विश्वरूप शरणा गति दायक अभय देहु जन जानि शरणको ॥ ४ ॥ भैरवी ॥
 रघुवर तुमबिनु कवन उधारे ॥ पंकते पंक छुटल नहि कवहुं दुखिया दुख
 किमि टारे ॥ विनुअरि रनि नसे कैसे जो उदय अमित शशि तारे ॥ ५ ॥
 संबंजगदोन दानि प्रभु तुमहो वेद विदित मतसारे ॥ पाहि करत अब
 लम्ब देत हरि ऐसे विरद तुम्हारे ॥ ६ ॥ बालक बनिता बंधु सहोदर
 स्वरेष विवस विचारे ॥ तसनव हत निज कुशलाइ छारभरी दुगदारे ॥
 ७ ॥ तुम सर्वज्ञ चराचर नायक अगनित पतित सुधारे ॥ विश्वरूप प्रभु
 वेगिदरो अब करुणा सिंधु उदारे ॥ ४ ॥ विहाग ॥ मन अब कारिले विगि
 संभार ॥ जोसुखके धावत निशिबासर सोनहि पैवे विनुअर्तार ॥ १ ॥ गृह
 धनदेष टेंहधुय मानत येह विनमत नहि लगिहै वार ॥ करिअधर्म जे
 हितू पालतहो सोनहि संगीहो इहै तुम्हार ॥ २ ॥ यमकर दूतवांधि तोह
 लेइहै तबिनाही कोउ रोक निहार ॥ कहूं अनल कहूं तपत बालुहै कांठ
 विपमो अति राह कुरार ॥ ३ ॥ शिरपर मुदगर बहुत परतहै मूर्च्छित जाय
 गिरे यमद्वार ॥ तपत नरकमहं सहत बहुत दुख समुक्त अपनो कर्म
 अपार ॥ विश्वरूप अत्रइन्द्र जल तनु राम चरण हिय करो आधार ॥ ४ ॥
 विहाग ॥ गुनोहि रूपदियो दरशई ॥ जहां वाणीशी गति अपरतुहै मन
 गतिनहि ठहराई ॥ १ ॥ जोजन लखत चखत अमृतरस विविध दायदुरि
 जई ॥ हम हमार यहभेद गया सद्यपूरण सुख उरछाई ॥ २ ॥ अचल अमल
 जंगथल सचरोचर पूरा अरु समाई ॥ कारण कारण भेद उभय जहं सीप
 रूप समतीई ॥ ३ ॥ अगह अगोचर अज अजि कारी चितसुख रूप सदाई ॥
 सतगुरु परम दयाके सागर सोधत सांहलखाई ॥ ४ ॥ यह चौरसी चख
 कठिनहै बचन अति कठिनाई ॥ विश्वरूप गुरु कृपा करत जेहि दिनमें
 देत छीड़ाई ॥ ५ ॥ ठुमरी ॥ श्याम अवहम तोसन राते ॥ नहि सोहात
 घरवासु नेकु मोहि न ह सोहात हितनाते ॥ १ ॥ जाहु भवन फिरि जाय
 कहत मेहि सुनि येह बचन दहत स्वगाते ॥ २ ॥ जीवन धनप्रिय प्राण
 हमारे तुमबिनु पंक कल्प समजाते ॥ ३ ॥ विश्वरूप ब्रज ॥ जोवन सुख
 निधि भई मंगन सुनि कनि असवाते ॥ ४ ॥ ठुमरी ॥ शेरि कुबरीने जादु
 लाई ॥ जाके बस परिश्याम मनेहर हम संवकह बिसराई ॥ ५ ॥ माला
 गुंथि प्रेहि पहिरावति बहुविधि गंध लगई ॥ चारु बचन कहि हरिहि
 सुनवति किगिनजबस वरिअई ॥ ६ ॥ कहैं बहुत पैकामन अवत नहि
 कछु लहत उपाई ॥ विश्वरूप मन मोहन यदुवर मुन्दर देखि लोभायगई ॥ ७ ॥

टुमरी ॥ कुवरी पटरानी भईरे ॥ कुवर देखि हंसत सब जाकी अब सेंतो दिन
 गईरे ॥ १ ॥ जोनहि सुनेदेखेउ नहि नैनन सोबिधि प्रगट कइरे ॥ केहरि नारि
 अहार छीनिके गोदरि बदन दईरे ॥ २ ॥ जोदासी नित नीच कारमरतसोपद ऊंच
 पईरे ॥ विश्वरूप ब्रज राजराज महं अब सब होतनईरे ॥ ३ ॥ टुमरी ॥ रघुवर
 जाइहोकेहि पाहीं ॥ जनममरण दुखफन्द हरखको अभयकरखको आही ॥ १ ॥
 कमल नयन छवि भवन तुमहि बिनु कौन दीनकों चाही ॥ विश्वरूप चहुं
 हेरि थकित भये प्रभु तुमसम कोउ नाही ॥ २ ॥ टुमरी ॥ देखी सब यहयक
 समानी ॥ करि मतिभेद खेद जनपावत लखतनहीं अभिपानी ॥ १ ॥ विप्रय
 मांह करै चाह घनेरो सुख मेधा ठर आनी ॥ बाहर बाहर धाइ मरतनित
 नहि अंतर हरि जानी ॥ २ ॥ जियि गिरिवर सागरमहं मणिगण रतनखानि
 सुख दानी ॥ बिनु उपाइ ते नजरि न आवत दीखत पाहन पानी ॥ ३ ॥
 जब गुरु ज्ञान उदय रवि होवै खोवै भरम निसानी ॥ विश्वरूप तब अज
 अविकारी प्रभुपरण पहिचानी ॥ ४ ॥ रागविभारा ॥ नेरो महाराज रामप्रीति
 भवन सोई ॥ जासों निज हेतु कहों ऐसो जन जोई ॥ हारे हम खोबिस-
 कल भुवन नाहिं कोई ॥ १ ॥ करिवर कर गाहनहे बारि नाकलेई ॥ हारेप-
 रिवार खींचि एक एक होई ॥ २ ॥ जय जय हरि अरत हरटेर कीन्हयोई ॥
 तुरिताहि प्रभु मनके बेगिशुचु बदन खेई ॥ ३ ॥ दोपादि पनपलि दियोपाल-
 न जन तोई ॥ जाके पद बारि गंग अगत पाप धोई ॥ ४ ॥ गावत यश स-
 हस बदन शारद मति गोई ॥ ब्रह्मा सनकादि ईश शीस दरख मोई ॥ ५ ॥
 जानत सब वाल हाल पिता मातु दोई ॥ विश्वरूप कर्ता प्रभु करिहै सोइ
 होई ॥ ६ ॥ राग विभास ॥ सुरसरि तब विमल नीर सेवत मुनि वृन्दधीर
 मेटत भव दुसह पीर मोनस टुरिताई ॥ राजित तिहुं पुर तरंग निरखत
 चित होतरंग होवै तिहुं ताप भंग कलिमल दुखदाई ॥ घातकतरुअति प्र-
 चंड होवै शत खंड खंड अतुलित ब्रह्मांड भूति सिमिटि धारआई ॥ २ ॥
 शंकरके जटवस अतुलित छवि राशि भासो जैसे रवि अमित बीच अमित
 चन्द्र छई ॥ ३ ॥ शम दम संतोषदानि निर्मल सुख ज्ञान खानि अर्थ धर्म
 काम मुक्ति करतल जनु पाई ॥ ४ ॥ बिधि कामंडलू विचिच धरेतामहं प्र-
 विच तपोराशि निखिल सिद्धि सिमिटि जनु भराई ॥ ५ ॥ विष्णु चरण लंज
 मंजु दुति अनूप भूति गंज तेहते प्रगटानी सही वेद सुयश गाई ॥ ६ ॥
 ब्रह्मद्रव बहत नीर निरखत मन होत धीर मज्जन अनुराग बलत छन
 छन अधिकाई ॥ ७ ॥ विश्वरूप अर्ज ज्ञानु मातु परण लाज मानु हंसनंस

कंज हंस रामउर सोहाई ॥ ८ ॥ दिहाग ॥ अगम वग ज्योति वरै निशिबार
 ॥ होत प्रकाश अपार ॥ होत नहीं ठहरसव नयनकी कोटिन दिनकर सम
 आकार ॥ ५ ॥ आनंद नदिया बहत सोहावन पियत है कोउ कोउ संत
 पियार ॥ २ ॥ पियत मगन जग खवरि भुलानी जैसे रहत सदा मतवार ॥ ३ ॥
 चिगुण कर्म सब दुरित पराजे निर्मन हृदय भयेउ उजियार ॥ ४ ॥ विश्व-
 रूप सतगुरु शरणागति अलख पुरुष जन गहो निरदार ॥ ५ ॥ ठुमरी ॥ मन
 कवहुं आसरा रगहोगे ॥ रघुवर पठ में प्रीति निरंतर जग के मुख कहु
 नाहि चहोगे ॥ १ ॥ पर अंकार धरो हिय नाहीं पर निन्दानहि पतवन
 लहोगे ॥ २ ॥ काम क्रोध मट विषय वास तजि राम शरण नहं मगन-
 डहोगे ॥ ३ ॥ पुण्य समूह वसै हिय माहीं फप अनलते नाहि दहोगे ॥ ४ ॥
 गुरु सेवामें प्रीति निरंतर सम अस्तुति निन्दाहि सहेगे ॥ ५ ॥ विश्वरूप
 हरि कृपा करै जब तब भवजालते पारपरोगे ॥ ६ ॥ राग विभस ॥ परब्रह्म
 रामचन्द्र श्रुति समूह गावै ॥ अलख पुरुष निर्विकार सकल विश्वके आधार
 सगुण रूप भक्तन हित जगमें प्रगटावै ॥ १ ॥ धाता होय सृष्टि करत वि-
 ष्णु रूप भवै भरत शंकर होय सकल हरत उदर निज समावै ॥ २ ॥ साहेव
 प्रभु एक रूप पूर्ण अजब भवै भूप नाम रूप विविधि भेद माया दरशावै
 ॥ ३ ॥ काम क्रोध दूर करै प्रेम भक्ति हृदय धरे विषय चस तजे आश
 आनन्द उर छावै ॥ ४ ॥ मगन रहत अट याम भेटेउ मति विषम वास
 चारि खानि जीवसक अतम ठहरावै ॥ ५ ॥ विश्वरूप मेह धार त्यमिबे
 मि होहु न्यार कीट भृंग सदृश रम निग स्वरूप पावै ॥ ६ ॥ रागविभस
 ॥ हरि हर प्रभु एकरूप गावत श्रुति चारी ॥ भेटभव कर तुराव आनन्द
 तब हृदय छाव दिव्य दृष्टि उदय भई मिटि गई अंधियारी ॥ १ ॥ जन्म
 मरण शोक गये ब्रह्मरूप मगनभये इन्दीगन जोर नसेउ बाल कर्मटारी ॥
 २ ॥ आनट रस पियत नित दूधर न गहत चित्त श्चु मिच बिपस भाव
 सबते भये न्यारी ॥ ३ ॥ जीवन सन मुक्त भये देह दशा दूरिगये विदरत
 निर्लेप होइ विधि निषेध चारी ॥ ४ ॥ धन्य पुंजके समूह जहिके असदशा
 जूह सुखी जग मांहि मेइ अवर सब दुखारी ॥ ५ ॥ विश्वरूप गुरु प्रसाद
 भेटत मनके विषाड अपर न उपाइ कहु खोजि सकल हारी ॥ ६ ॥ ठुमरी ॥
 भजन विनु काहेको देह धरी ॥ बिना भजन भव नाहि तरी शठे कोटि
 उपाइ करी ॥ १ ॥ आवत जात भ्रमत निशि वासर जगहुं न समुक्ति परी
 ॥ २ ॥ सुत बित हित मानत शठ अपना सोते से दूरि टरी ॥ ३ ॥ विग्व-

रूप रघुवीर शरण विनु कबहुं न भवतें तगी ॥ ४ ॥ टुमरी ॥ चेतु सवेरो
 अपना देश ॥ छन छन घरि घरि समय टरतुहै भूलि परेसि का विषय ह-
 मेश ॥ १ ॥ इहां कोई तेरो संगी न होइहै दिना चारिके सकल सुबेश ॥
 काल कठिन को फन्द परोहै लखत नहीं कोइ रंक नरेश ॥ विश्वरूप एक
 राम शरण गहुं छोड़ सकल जग नाना शेष ॥ ३ ॥ टुमरी ॥ ममता मन-
 तोहि नाच नचावत ॥ बाल कुमार युवा पन बोतेउ चौथे पन शिर शेत
 जनावत ॥ १ ॥ विषय बिबम होइ भूलि गये शठ मोहि निशा सब दिवश
 बितवत ॥ २ ॥ अजहुंन चागु हेतु कर हरिसों मानुप तनका बिफल गं-
 वावत ॥ विश्वरूप रघुवीर शरण विनु यमपुरतो कहं कवन बचावत ॥ ३ ॥
 राग भैरो ॥ माया पुरी अघ ओघ नसावनि जन पावनि सुखराशी ॥ परम
 तपो थन मुनिजन निशि दिनते हं दथलकेर निशाशी ॥ अचल समाधि मुक्ति
 अन पायनि दायनि अति सुख मासी ॥ १ ॥ अप कीरति कुवृत्त करिणी
 सब प्रबलसिंह जायासी ॥ मोह सघन तम बिपुल चंड दुंति रवि शशि अनल
 प्रभाशी ॥ मेख मास याची जन आवत जो जन यश आभिलासी ॥ ता कहं
 दानि खानि सब गुण की काम धेनु विदितासी ॥ ३ ॥ अखिमादिक दासी
 निशि वासर महिमा वेद प्रगासी ॥ विश्वरूप जग जननि कृपा करि राम
 रूप बरदासी ॥ ४ ॥ राग विहाय ॥ सब सुख साहेब के घरे जहां गये जन
 मे न मरे ॥ ब्रह्मादिक जहां सेइ रहे हैं कर जोरे निशि बरखरे ॥ १ ॥ अद्भि-
 सिद्धि सब विपुल बंडोई लक्ष्मी जाके चरण तरे ॥ ध्रुव प्रह्लाठ बिभीषन
 जेते अस्तुति करत शरणमें परे ॥ २ ॥ सनकादिक जोहि रटत निरंतर शरट
 नारद शेष बरे ॥ ४ ॥ हय प्रभु सकल अनीह निरंजन निज जन हेतु स्वरूप
 धरे ॥ विश्वरूप अवि गति करुणा मय शरण गये सब ताप हरे ॥ ५ ॥
 भैरवी ॥ प्रभु तजि याचि हीं अब काहि ॥ अब ठर ठरन दीन को दानी
 अशरण शरण को आहि ॥ १ ॥ अति कृपल भव जाल हरण हर तेरो
 यश कहुं कहां नाहि ॥ करुणा करहुं हरहु भय संकट जानि शरण गहुं बाहि ॥
 विश्वरूप बर देहु टया करि चरण शरण गुरुमांहि ॥ ३ ॥ भैरवी ॥ समैया
 गेली बीति रे हरि से करत ना प्रीतिरे ॥ बालापन खीय अजान महं स-
 हत दुबह दुख शीतिरे ॥ १ ॥ भये कुमार खेलत बालक संग मीति पिता
 महरीतिरे ॥ २ ॥ भये युवा युवती संगराते करत है बहुत अनीतिरे ॥ ३ ॥
 विरघ भये इन्द्रा गय थाके चलने की भई मीतिरे ॥ ४ ॥ यम गण आर
 मुद्गर मारे विकल परोहै बीतिरे ॥ ५ ॥ सहता नरक महंताय विविध

द्विधि कवन मिटावै भीतिरे ॥ ६ ॥ विश्वरूप का भूलि अयम पथ रामनाम
 कर चीतिरे ॥ ७ ॥ राग भैरो ॥ अचल मुतापति अविचल गति मति दा-
 यक हर त्रिपुरारी ॥ सेत कंज शशि वरख दिशद लसि गंग तरंग जटारी ॥
 शेष माल बिधु बाल भाल पर शोभा अमित बनारी ॥ ९ ॥ नमत सुरासुर
 परत चरण महं कहत चरण भयहारी ॥ होत अशोक रोक सब छूटत जैसे
 कोकतमारी ॥ २ ॥ अग जग भवन दवन सब दुख के टोनबंधु हितकारी ॥
 अति उदार सुख शारदानि प्रभु केतिक अधम ठधारी ॥ ३ ॥ निकटहि
 वसत लखत नहि कोऊ माया तिमिर पसारी ॥ विश्वरूप गुरु बचन तरणि
 विनु होय न उर उजियारी ॥ ४ ॥ भैरो ॥ विश्वेश्वर नगरी सुख सगरी भू-
 लि जाहु जिनि अवर घरे ॥ अणिमादिक जहारहै कर जोरे भुक्तिमुक्ति जह-
 सकल भरे ॥ १ ॥ ब्रह्मादिक सेवत कर जोरे यको छन पै लखत न परे
 सुर सरि पावनि परम सोहावनि काशीते कबहूँ न टरे ॥ २ ॥ चार खानि
 के जीव चराचर होय मुक्त काशी जो मरे ॥ पातक पुंज प्रचंड तूलहै का-
 शी निरखत तुरत जरे ॥ ३ ॥ विश्वरूप गहु घन शिवा शिव नाम क्रोध
 मल सकल हरे ॥ ४ ॥ राग बिभास ॥ काशी कैलाश भवन बरनि नहीजाई ॥
 निरदत अति आनन्द होय प्रीति हृदय छाई ॥ १ ॥ शंकर नित करत
 वास गिरिजा युत हिय हुलास सेवत ब्रह्मादि चरण पंकज चित लाई ॥
 अस्तुति सनकादि करत आनन्द उर माइ भरत टारत नहि नेकु दृष्टि
 निरखत चितलाई ॥ २ ॥ गावत यश श्रेय जासु पावत नहि पार तासु
 कवि जन सभ हारे कछु उपमानहि पाई ॥ विश्वरूप भाग्य राश शंभुपुरी
 करत वास मेटत यम चास मुक्ति करतल में आई ॥ ३ ॥ राग बिभास ॥
 जय जय शंकर कृपाल टोन बंधु प्रणत दाल बेगि हरी जगत जाल दीजे
 शरनाई ॥ सच्चिद घन निर्विकार सुख स्वरूप अति उदार अलख प्रभु अ-
 खंड एक व्यापेव समुदाई ॥ १ ॥ नारदादि गावत यश पावत हिय आनन्द
 रस लगे है समाधि अचल मेटेव दुचिताई ॥ २ ॥ उमा रवन ज्ञान भवन
 मोहि मारताप टवन देवन हित त्रिपुर हनेत्र भूतल यश छाई ॥ ३ ॥ जर
 जर विषयान क्रियो अभैदान सभे दियो पर के उपकार हेतु निज सुधि
 विसराई ॥ ४ ॥ ब्रह्मा जो लिखेव भाल नरक भोग अति कराल फेरि अक
 देइ डंक स्वर्ग तेहि पठाई ॥ ५ ॥ निरखि महा तेज सघन चक्रित भये
 चतुर वदन शंभु के प्रतप सकल सभा जाकि गाई ॥ ६ ॥ दात्म शिरताज
 माज भुवन ख्यात महाराज बचन मन अगोचर गति पारकोउन पाई ॥ ७ ॥

विश्वरूप शिव कृपाल तुरितः हरो मन कुचाल शरणा लाज करीनाथहृदय
 वसेआई ॥ ८ ॥ राग परज ॥ जयमहेश जन आरत मोचन ॥ उमालाराजित
 अति सुन्दर कुंद इन्दु दर वपुख विरोचन ॥ १ ॥ रहत अखंड समाधि सदा
 जेहि राम चरण वारिज चित दोचन ॥ २ ॥ हय निर्लेप अमाननिरंजनजेहि
 मदमोहकामभय मोचन ॥ ३ ॥ सदांमगनसुखअजअविनाशोहर्षविपाद लाभदुख
 सोचन ॥ ४ ॥ हरिपद कमल जपै उरमोही भवजल काम गहेतेहि बोचन
 ॥ ५ ॥ विश्वरूप प्रभु दानि शिरोमणि राम भक्ति वरदेहु तिलोचन ॥ ६ ॥
 रागपरज ॥ जयमहेश जयजय चिपुरारी ॥ दीनबंधु प्रभुजन हित कारी ॥
 करत सदा उपदेश शिवाके तत्वज्ञान वरभव भयहारी ॥ १ ॥ पर उपकार
 निरत निशिवासर करि विप पान विबुध भयटारी ॥ कर डमरू शिरजटा
 बिराजे भसमअंग रतिपति सतकारी ॥ २ ॥ अहिमाला उरमांह बिराजे तेज
 पुंज रविसत ठजियारी ॥ गौरवरण सुख भवन दयानिधि गावत सुयश सदा
 श्रुति चारी ॥ ३ ॥ जासुनाम सभताप नसावन द्रवो बैगि प्रभुशिर शशिधारी ॥
 विश्वरूप प्रभु हर दयालहो देहु रामपद प्रीति अपारी ॥ ८ ॥ भैरो राग ॥
 जयसोमेश्वर प्रभु निर्दिलेश्वर उमा रवनभय हारी ॥ तीरथ प्रतिके अक्षय
 कोशको हमाराज अधि कारी १ ॥ जाको जो फल अमल सोहावन तपसा
 ताहि विचारी ॥ देत दयानिधि देरि करतनहि दरदवं हितकारी ॥ २ ॥
 दर्शनते मति विमल करत अतिज्ञान रूपवपु धारी ॥ याची जनमन शोक
 हरण हरअमित भानु उजियारी ॥ ३ ॥ इहभव अगम अपार सिंधुको तरणि
 चरण तुमारी ॥ विश्वरूप प्रभु अधम उधारण काहि शरण नाहितारी ॥ ४ ॥
 रागभैरो ॥ कर्दमैस सर्वेस चिपुरहर शोकहरण जनचाता ॥ कलि मल देख
 रोख हरशंकर अभय मुक्ति पददाता ॥ तेरो चरित अगाध पारनाहि पावत
 अहिपति धाता ॥ १ ॥ शंकट तरुउन्मूलन करहर गहत नजन अद्यबाता ॥
 अति उदार सुनि चरित अवण पुटहोत पुलक सबगाता ॥ २ ॥ याची जन
 अधिसिंधु अगमतर सोखक जिमि घटजाता ॥ ज्योति सरूप अनूप महाद्वि
 अमित दिवाकर भाता ॥ ३ ॥ अरजसुनो करुणाके सागर सबघट के तुम
 जाता ॥ विश्वरूप प्रभुचरण शरणदेह हरहु सवाल जग नाता ॥ ४ ॥ राग
 भैरो ॥ जयजग जननी शंकट हरणी भवजल तरणी नन्दसुते ॥ छविअतु-
 लाई वरणि न जाईवल प्रताप गुणसिंधु जुते ॥ हर कमलासन प्रभु गरुडासन
 सिद्धासन सुरशक्त नुते ॥ १ ॥ आरतहरणी आनद करणी भ्रमतम तरणी अध
 धूते ॥ गतिअन पायिनी शुभ मति दायिनी अभय विधायिनि श्रुति ब्रूते ॥

२ ॥ जगधिति हरखी उदभव करखी सुयश वितरखी विदितहुते ॥ जनमन
 रंजनि कलिदुख गंजनि शोक विभंजनि बहुधुते ॥ ३ ॥ याची तरखी सुर
 गौ शरखी भीम चंडिके अश्रुते ॥ अंज अदिनाशिनि शोक विनाशिनि
 विश्वरूप पदकलनुते ॥ ४ ॥ रागकल्याण ॥ जयजय कलिपाप समनिरोख
 रागदोष दमनि तोष मोष टायिनि जग अभय कारिका ॥ वंदत इत्यादि
 देव यावत नाहे जामुमेव चरितमिष्टु गावति श्रुतिप्रेति चारिका ॥ १ ॥ मोह
 मानमद क्रुधार वहेजात जीवभार कर टौर पापत नाहे तुर्ही तारिका ॥
 नन्द भवन जन्म लिये अभय दानसवाहे टिये भूसुर भूभार हरखि भूसुर
 मारिका ॥ २ ॥ उदभव धिति नाशकरखि जगके जगबंध हरखि बुद्धि सुद्धि
 टायिनि सबशोक हारिका ॥ कालकर्म दुटिल चंड जनके भ्रम विषम सुंड
 खंड डंड करखि निखिल शक्ति धारिका ॥ ३ ॥ रज निषेति विमल बदनि
 सेहति अतिमंद करुनि धारेपट भूषण वरतंडित सारिका ॥ तरखी तरखि
 तेजरासि लला तनुदेवि भासि दिव्यदृष्टि दांयिनि मनभेद वारिका ॥ ४ ॥
 विश्वरूप जगत अनि अरज मनुमान अधनि रागधरख शण्य देहु भीम
 चंडिका ॥ ५ ॥ रागभैरो ॥ जय मारुत मुत जयहनुमान दीनबंधु प्रभुशुपा
 निधान ॥ रामनम रटरहत निरंतर प्रेम सुध नित करत है पान ॥ १ ॥
 अंजनि तनय तेजबल सागर ज्ञान भवन सभरुन मनखान ॥ कीन्हैउ भक्ति
 परम सुखसागर निजवासि राखेव रामसुजान ॥ २ ॥ अके यश रघुवर निजमुख
 ते कपिल महं क्रियो बहुत वखान ॥ छन महं लांचि पयेधि गयेहै जामु
 प्रताप जगत प्रगटान ॥ ३ ॥ खल टल तूनताहि पावक सम बालापने मुख
 मेलेउ भान ॥ विश्वरूप प्राणु रानुत बरदेहु केनि हरिपद निर्वान ॥ ४ ॥
 रागभैरो ॥ महावीर रनयीर शिरीमखि रामदूत गुरुखानी ॥ यशप्रताप माहमा
 अतुलित बल कहिनमकत श्रुति वानी ॥ गौपद सम लांचेव सागर बंहालने
 वननेकु थकानी ॥ कीन्है परिजा देव विविध विधि लाखिप्रभुता सुप्रमानी ॥
 १ ॥ सीताशोक हरखी करुणाकर वन्सागर वरदानी ॥ टनुज दितिज कुल
 अगम गहन वनटहन विदित जग जानी ॥ २ ॥ जरेउलक शंकरनाहि मन
 मह तोरेउ वाग दितानी ॥ हाहाकार क्रियो सब पुरजन टेरत पानी पानी
 ॥ ३ ॥ मुनि जन मुख काक भय हारक द्रवी मुजन पहिचानी ॥ विश्व-
 रूपप्रभुदया कीजिये हरिये मोह निशानी ॥ ४ ॥ विहाग ॥ जयगणेश जय
 जय जगबंधन ॥ अणरग शरण भक्त उर वन्दन ॥ नाम प्रताप भले विधि
 जानत मुमिरत तुम्है नसे भ्रमफन्दन ॥ करिवर वदन हरखदुख सागर राम

भक्तउर जेहि चितनन्दन ॥ १ ॥ चरण कमल जेहि पूजिसटा नर कबहुन
 लहत मोहमद मंदन ॥ कोटि सूरसम कांति बिराजे निरखत टरैताप जग
 तुन्दन ॥ २ ॥ विश्वरूप प्रभुशरण पुकारत रामभक्ति देहु शंकर नन्दन ॥ ३ ॥ राग
 भैरो ॥ अघखण्डन घन मंडन शंकर काशी नाथ दयाला ॥ अति दाता उ-
 दार हर केवल हारक काम कराला ॥ जो सुरतए सुरधेनु सरिस कहांतौ
 नहि वनत कृपाला ॥ १ ॥ यह सब अत्य फलन को दायक प्रासकिये जि-
 हिकाला ॥ तुमप्रभु निज सरूप सुख प्रापक चिटघन रूप विशाला ॥ २ ॥
 महिमा अगम पार नहि पावत पट दरशन श्रुति माला ॥ वरुणा तीर वसे
 याची हित अघ हरि करत निहाला ॥ ३ ॥ करुणा सिंधु दयाकरि खोलो
 अजर मोहकी ताला ॥ विश्वरूप रामेश्वर दरवी जानि नाथ निज बाला
 ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥ जय-रामेश्वर प्रभु सर्वेश्वर दीनबंधु चविनासी ॥ अलख
 अल विवेद जेहि गावत ब्रह्मा करत खवासी ॥ इन्द्र वरुण चरणन्ह पर
 लोटत शरणागत अभिलाशी ॥ १ ॥ अनल भानु शशि नदन बिराजते तेजपुंज
 सुजेरसी ॥ जापर दया करत चितवत प्रभु हरत मोह मद फांसी ॥ २ ॥
 रामचन्द्र निज करति थापे चलनिधि तीर-रुभसी ॥ देवान कर मुनिचर-
 युत पूजे जयजय धुनि नभ वासी ॥ ३ ॥ करुणा चलधि चन्द्र शेखर हर
 आसु तेषना माशी ॥ विश्वरूप प्रभु याची तारण वसे वरुणा तटकाशी ॥
 ४ ॥ भैरवी ॥ धर्म राज महाराज छम निधि तेज पुंज तप धारी ॥ जाको
 रिपु बाहुं नजरिन आवत सबकरि सबे निहारी ॥ गर्व मोह मदता मद माय
 निज स्वभावेतें टारी ॥ १ ॥ जाको बंधुमहा बल सागर विदित जगत मह
 चारी ॥ सुरपति देत जाहि अष्टरसन डरपत खल भयकारी ॥ २ ॥ पापसिंधु
 अति लख दुयोधन कीन्ह उपद्रव भरी ॥ लको टपे हरण समरथ यशु-
 हांके कृष्ण सुरारी ॥ ३ ॥ शिवपुर बांस शिवरूप भयेहै याची जन अघहा-
 री ॥ विश्वरूप जेहिनाम जपेतें होत धर्म मति प्यारी ॥ ४ ॥ राग भैरो ॥
 पंडु तनय अति बुद्धि उजागर बलसागर गुण खानी ॥ धर्म राज
 महाराज सजसजि दिशिदिशि तें घन ज्ञानी ॥ रुव नृपजीति रोति श्रुति
 मतके यज्ञहेत व्रत ठानी ॥ १ ॥ सजल दिशतें मुनिवर आये वेद विज्ञा
 बरजनी ॥ कृष्ण सदलबल सुख निधि आये सभा हर्ष अष्टिकनी ॥ २ ॥ प्र-
 थम पूजिसब मह निरणय करि पूज्यकृष्ण कहजानी ॥ पूजवेद घाखद्विज व-
 रसब क्रिये यथोचित वानी ॥ ३ ॥ रुधुन रस हर्ष उरवाढो मुखेनृप आभ-
 सानी ॥ विश्वरूप यदुभूप जाहि बलतको भुवन निहारी ॥ ४ ॥ रागभैरो ॥

जय भगवान् अनन्दि सनःतन कपिल जगत हितकारी ॥ देव हूति कर्दम
 के जाये जग तरण वपु धारी ॥ करि उपदेश विवेक अनेकन्ह जननीभवते
 तारी ॥ १ ॥ तन्त्रविबे चन मग सत्रडू जेनिज बल ताहिउवारी ॥ भयोहै पुनीत
 चरित मन भवन विदित भुवन दशवारी ॥ ३ ॥ मातुहि करि उपदेश ज्ञान
 वरमेह जाल सत्र टारी ॥ चैनन असल सोहावन निजमुख कोटभंग सम
 डारी ॥ ४ ॥ अति कृपाल निजपाल बालजिमि जननी प्रीति संभारी ॥ वि-
 श्वरूप कौशोश संभु जन यात्री को रखवारी ॥ ४ ॥ यह मोलह भजन पंच
 कौशाके ॥ गौरी ताल जल्द ॥ अरति श्री मोहन जीकी कीन्ही कनक थार
 यशोमति कर लीनी ॥ १ ॥ चांद मूर देठ ज्योति सोहाय जगमम ज्योति
 तरुण तमहीनी ॥ माल पटल रोरी छविसेहै नवल सुरंग लसत पटफोनी
 ॥ २ ॥ शोष मुकुट मणि जडित बिराजे विभुवन छवि सिंहासन छीनी ॥
 वरपत देव कुसुम चहुं हरपे वनमाला छवि लसत नवीनी ॥ ३ ॥ गावत
 राग सकल व्रज नारी सकल लोक छवि व्रज आधीनी ॥ विश्वरूप व्रजलाल
 कन्हैया भूपन ज्योति हरत गुनतनी ॥ ४ ॥ गौरी तालजल्द ॥ आरति श्री
 रघुवर जीकी कीन्ही सकल भुवन छविचित महदीन्ही ॥ भक्ति सुदीप मु-
 हावन लागे वाती तत्व विचार नवीनी ॥ प्रेम सोहावन घृत छविछाजे वर-
 त ज्ञान मय ज्योति अलीनी ॥ १ ॥ अट्टा सचिव सकल इन्द्रिय गण शुक्र
 सनकादिक सुरदि जौ वीनी ॥ शय दम योग विराग यतन सब डोलक म-
 थुर सृदंग नफोनी ॥ २ ॥ आरति कलख लखत जनसेहै श्री गुरुप्रण बा-
 रि वर वीनी ॥ विश्वरूप प्रभु अचल निरंजन कलकत ज्योति होत भ्रमछीनी
 ॥ ३ ॥ भैरवी तालजल्द ॥ मंगल आरति श्री यदुवरकी ज्योति सोहावन राजे
 ॥ मकरा कृत कुण्डल छविसेहै मुकुट भानु छविछाजे ॥ १ ॥ माल विशाल
 लसत मणि गणको पदिक कंठमह भाजे ॥ कटक बलय भूषण छवि द्वावंत
 चहला धन मह गाजे ॥ २ ॥ बटन सरोरुह लसत मनोहर कुटिल केश
 अलितजे ॥ हास मनोहर ध्यान करत सुचि सिद्धि होत सबकाजे ॥ ३ ॥
 व्रज वनता बालक परिजन सब सांजि सुमंगल भाजे ॥ विश्वरूप प्रभु आरति
 गावत भांकि विपंची वाजे ॥ ४ ॥ भैरवी तालजल्द ॥ मंगल आरति श्री हरि-
 हरकी ब्रह्मदिक सुरसाजे ॥ कनक थार कर्पूर कि वाती जगमग ज्योति
 विराजे ॥ १ ॥ श्याम शैत धनकुंद सोहावन कोटिन्ह रविछवि छीजे ॥ म-
 णिगण हार माल अहिगण को वाम शिवा श्री भाजे ॥ २ ॥ गान करत सब
 देव मनोहर बहु विधि वाजन वाजे ॥ रतन सिंहासन कलकत प्रभुके देखि

मनो भव लाजे ॥ ३ ॥ शारद शेष सिद्धि गुण गावत छोड़ि सकल भ्रमका-
 जे ॥ विश्वरूप महिमा हरि हर को गावत श्रुति शिर ताजे ॥ ४ ॥ राग
 भैरो ॥ आरति करत तुमारी रघुवर ॥ दंपक बुद्धि प्रीति घृत ता मह
 वाती सुरत सवारी ॥ वरत है ज्योति अखंडनिरंतर दशोदर उजियारी ॥
 १ ॥ धार विचार धरो ता जपर तत्व कुसुम चहुंतारी ॥ इदुभुत छबिरबि
 तरुण तेज सम शोकरैनि तम टारी ॥ २ ॥ शमदम ते प वमन भूषण वर
 इन्द्रिय गण रुचियारी ॥ गावत ताल टेन बहु भांतिन्ह नितत मन रुचि
 कारी ॥ ३ ॥ यह गुरुगम आरति धारत उर मेटत ममता भरी ॥ विश्व-
 रूप लहे अचल अमल पद ओहि गावत श्रुतिचारी ॥ ४ ॥ जय जयश्रीगुरु
 प्रभु जग तारक तरक ब्रह्मानन्द हंगे ॥ अति उदार सुख सर सिंधु प्रभु
 नमत चराचर चरण तरै ॥ सकल महीश अहीश नमत नित कर जेरेनि-
 शि वार खरे ॥ १ ॥ आज्ञा करत देवगण जाको ऋद्धि सिद्धि दासी-सगरे ॥
 सब गुण वपु धरि शरण शरण करि चरणपलोटत प्रीति भरे ॥ २ ॥ शारद
 सुरसरि सर नाना विध जो तप पुंज भुवन निसरे ॥ तजि निज निज घल
 चरण कमल दल बसत पलटि नहि जात रे ॥ ३ ॥ जन मन कुमुट निशा
 कर सचिकर सुर तरु इच्छित दानि वरे ॥ शम दम ज्ञान दया तप संयम
 चारो फल अति सरस फरे ॥ ४ ॥ दरशनते अतिहर्ष वढतउर कलिपातक
 दल सकल हरे ॥ जैसे पंचानन कह निरखत भाजत करि गण बहुतडरे ॥
 ५ ॥ भानु निकर कर जासु वचन वर सुनत अविद्या रैन टरे ॥ कामक्रोध
 मद लोभ नखत मन छीन भये नहि नेजरि परे ॥ ६ ॥ ईश विष्णु विधि
 नाम भेदचय केवल आपुहिं रूप धरे ॥ मस्करेश परमेश पुरातन सतचित
 व्यापक अचर चरे ॥ ७ ॥ दिशि दिशि भ्रमेठ लहेठ नहि अस प्रभु जोटुखसुन-
 तहिं तुरित डरे ॥ विश्वरूप मनमथुप मनोहर चरण सरोरुहवास करे ॥ ८ ॥

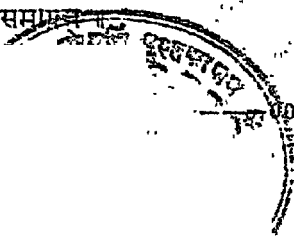
॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शरच्चवसुन्द्रप्रतिमवदनां कोटिरिभिर्भा शुभांगगाम्वांछा जलकान्कशा भीति
 करिकास ॥ शिरोरत्नैर्गुणान्धवनामकरासीन जननीम् पट्टेर्देवच्छन्दैर्लपित सु-
 तनुम्यामिशरणम् ॥ १ ॥ बलेद्योचाव्याज त्रिपटभुवनांशान्तजयिनो दुतो
 देकाङ्घ्रि प्रवरनखविद्धांडसुखिरात् ॥ श्रवद्वारापारा दुहियनिलये प्रावि-
 शदजां कपदे गच्छन्तीनकुलतपसामेहशिधरे ॥ २ ॥ चतुर्द्वारस्व कृत्वाऽवनित
 लंबिशन्तीभगवती परिवर्हाल्लीलप्रवरसुरधै मादमतिदां ॥ अक्षुपरविष्णु शु-
 गंक्षत्रजिनानांरुहकपा वहित्यादिव्याधि प्रचुरदरणी दीनजननी ॥ ३ ॥ जग-

न्यातसीर म्यस्महाचरन्ते चिपथगे वरसेव्यंसारं सकलतपसां शुद्धमतिभिः ॥
 विहस्तास्याकारं निरपदानिकारौघशमनम् मनोवाग्धीजौघ प्रशमविदधद्विदुश
 रणी ॥ ४ ॥ मुनीन्द्रःस्वतारिऽपिचक्षुमतये ब्राह्मनिचया मनोजित्त्रोपित्वा
 पुरचलपदम्बिदविदितम् ॥ समारुह्यत्प्रु दुरयंवटना खिन्नमनसा कृतादिव्य
 ज्ञानंजननिनिययुनाकभवनम् ॥ ५ ॥ वियदंगेऽनंगारि शिरसिचरद्वारि वि-
 मलेनुदापुण्येऽजस्रं सुरसुरवधूसेव्यसलिले ॥ चलद्वीचिभ्रेणि श्रमपदजगताप
 हरणिहराशान्तुःपाशं म्यरमकृपयाविष्णुयदिमे ॥ ६ ॥ त्वमीशस्त्व धातात्वम-
 सिहरिस्वाऽखिलनृणामिरात्वं रुद्राणी चलजभवनात्यम्भगवती ॥ जगद्रक्षा
 सृष्टिप्रलयमनिशं संविदधतीत्वदन्यात्किंल्लोके यदसिनहितद्वृहिनितरास ॥
 ७ ॥ अहोमन्दैलूक्यप्रभृतिनिकरैर्भेदकुशलै रविद्ये येद्ये येश्रुति सुगुरुतोद्वन्द्व
 विद्युतैः ॥ सुवेस्वच्छेऽथ्यस्ताऽप्रमितजगदोके भुजगवत्गुणैसच्चिदू पेत्यायिबि-
 शतुभेस्वान्तमनिशम् ॥ ८ ॥ पविचंस्तोचंते पठतिनियतोयस् सुमनसा लभे-
 दिष्टसौख्यं सुवृषमचलम्बाद विधुरम् ॥ दहेदंघोरंहे वचनतनुधी जातम-
 खितं ब्रजेदन्तेऽनन्तान्निरवधिमुखं ब्रह्मविरजम् ॥ ९ ॥ इतिश्रीम त्परमहंस
 परिस्रःजक्षस्वान्त मधुव्रतास्यादितांश्लकमल श्रीगौड स्वामि शिष्य श्रीविश्व-
 रूपाणन्द स्वामि कृतं गंगाष्टकम् ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ द्विदेशमीश तनयं
 वरदंगणेशं विद्यापहम् विषमशोक निवृत्तिहेतुम् ॥ दुष्टिप्रदं निखिलःदेव
 मुनीन्द्र वन्द्यावन्देऽर्कं कैटिसदृशं गजराजवज्रचर्म ॥ १ ॥ वेदार्थसारमखिलं
 रचितम्मुनीन्द्रै स्तूचंतदर्थं सुगमःयचकारभाष्यम् ॥ यशंकरो निखिललोका
 हितायर्थादृष्टिस्तः नौमितत्व मतिदंभगवन्तमीशम् ॥ २ ॥ सन्यासिद्विजव्य्य
 मगडलवृतः श्रीस्वामिभक्तारकब्रह्मानन्द सरस्वतीतिविदितो मायातमोभानु-
 मान् ॥ साद्येद्व्रह्मसुखप्रकाशकृदसौ वर्धन्निष्ठैः परिश्रितत्यादसरोज मेवसततं
 भृंगे भजेऽहंमुदा ॥ ३ ॥ विद्वद्वृन्दवरालि सेवितपदाद्बृन्दसत्तारक ब्रह्मा
 नन्द सरस्वतीयतिवर श्रीमदगुत् स्वामिनाम् ॥ मायाभ्रान्ति तमिभ्रभानु-
 निकरो सद्भक्त निघोषदो वन्देऽहंचरणी सुभेदधिपणो न्मत्तेभक्तारवै
 ॥ ४ ॥ श्रीकाण्यां जगदीश्वरं गिरिसुता नाथं जगद्वल्लभम् पंचक्रीशुपरक्तया
 चिन्नता सवार्थं देवदुमम् ॥ वागीस्वान्त शरीरजाघतमसे चंडांसु कोटि-
 पभं सच्चिद्व्रह्मसुखनिरोहमचलं श्रीकृदभेद्यभजे ॥ ५ ॥ श्रीमद्वन्द्व मुखादिने-
 य सद्गुणीभूषाम्बगलंकृतां सङ्गाद्यष्टकरेपुसत् मुदघतीं निर्वाणधर्मादिदम्
 ॥ कागक्रोधमदादि नागभरणीं स्माहेचरीं मस्विकां धात्रीशाङ्गनुवन्दितांश्चि-
 जगतां श्रीमीमचण्डीम्भजे ॥ ६ ॥ मायाबन्धहरं जनेपसितकरं वन्द्य विधा-

चादिभिः श्रीरामप्रियमोखरंजनकृजा चिन्ताऽधिचिन्तामणिसु ॥ मित्रंसाधु-
 मतममिष मसतांसत्रेश्वरंसादिगां सन्नित्कंगुचि सिधुसागर गृहंश्रीबायुपुत्रम्
 जे ॥ ७ ॥ सुख्यंश्रीन्दुदृशं गिरीन्द्रतनयानाथंमहेशं विभुवंशं धात्रिमुखैस्वकु-
 न्दवचलं भोगीन्द्रहारंहरम् ॥ वाञ्छादेवतरं सतांचवरुणा रोधसस्थितं शंकरं
 सच्चिद्रं ह्यनिरंजनं सुवचनं श्रीरामनाथंभजे ॥ ८ ॥ येवैभवाव्यतरणाय चरित्र-
 सेतुंमध्यवकार भगवान्स्वजनाऽनुकम्पी ॥ धात्रऽर्थितो रघुकुलेपुत्रतावता-
 रस्तंजानकीशमखिलार्थदामश्रेऽहम् ॥ ९ ॥ श्रीपण्डोस्तनयान्युधिष्ठिरमुखांसद-
 र्भचिन्तपरान्या खण्डादिक्रुतर्क शार्करतमेभानूनमुयात्यर्थदान् ॥ त्यक्ताराज्य-
 मदंसदाशिव पुरस्य नृवैदुरात्तपदं श्रीकृशांप्रसरोज भृङ्गद्वयान्श्राद्धीपद्मी-
 शान्भजे ॥ १० ॥ श्रीमत्सर्वगुणाकरंभव भयच्छेत्तारमीड्य सुरैः कर्तारंजगता-
 मगम्यम् सताज्ञानैकगम्यम्विभुम् ॥ कण्ठज्ञेदमजंभुंच कापिलाधारस्यमोशं
 शिवं सर्वेशं वृषभेश्वरेश्वरमहं श्रीपार्वतीशंभजे ॥ ११ ॥ श्रीमत्खर्ब विना-
 यकं गजमुखं श्रीकेशवसिद्धिदं श्रीमत्संगमराडं त्रिलोचन विभु श्री विन्दु-
 लक्ष्मीध्वान् ॥ सत्सर्वमणि कार्थीशेश्वर हरं श्रीतारकेशं प्रभुं श्री संपावरणं
 गलेन्द्रवदनं श्री सिद्धिराजंभजे ॥ १२ ॥ श्री मन्मथव दंडपाणिगिरिजा श्री
 ज्ञानवापीः शुभः श्री मत्सालिविनायकं खलुमनः कामेश्वरंशंकरं ॥ स्वान्त-
 र्छावरदं जगद्भग्रहरं श्री कोटिलिंगेश्वरं भक्तिज्ञान विरागशांन्तिसुखदं श्री
 दुंदिराजंभजे ॥ १३ ॥ पिंडाऽण्डोष्मज वृज्जोवनिकरांसंशोध्यतेभ्यः प्रभो
 ज्ञानं च्युत्तरंजंडांसिगुरुणा श्रुत्यामतंत्वंविभो ॥ सर्वशंकरुणाकारशरणदं
 मार्त्तण्डचंडप्रभंवाचो भूषणभूपितांगमनिशंश्रीभैव संभजे ॥ १४ ॥ श्रीकाश्यां
 प्रियमाणजीवनिकरेभ्याऽजाटि सेव्यंविभुंतत्वं ब्रह्मचराचरेश्वरमजंसवो धयन्तं
 प्रभुम् ॥ संसाराख्यत्रपाठपोतमजरं देव्यन्नपूर्यापतिंसंबिद्वे दामनंत भानुसदृशं
 श्रीविश्वनाथंभजे ॥ १५ ॥ भूचन्द्रांगनिशेशवत्सरगतेमसेतथाकार्तिकेशुकुलेऽनंग
 तियैभृगोश्वटिबसे श्रीविश्वरूपैःकृतः । मुक्तित्रिचक्रतालयेश गिरिजाश्रमैरवा-
 देस्तत्रश्योश्रेयः पठतांतनेतुनितरांसंशृण्वतांश्रुद्वया ॥ १६ ॥ पंचक्रीशस्यदेवा-
 नांबन्दनंस्तोत्रमुत्तमम् । यःपठेच्छृणुयाद्वाऽपिप्रदक्षिणफलंलभेत् ॥ १७ ॥ इति
 श्रीविश्वरूपानन्द स्वामिविरचितपंचक्रीशप्रधानदेवस्तवम् । चतुर्वेदेवंद्याभुव
 नविदितांतं वक्रवृतांध्रवांस्वारांसेव्यपदयुगलाहंसकरंभासम् ॥ तुलाकोटिदेवी
 स्वपदिदधतीञ्चन्द्रवदनामुरोदेवृक्कडा सुतनुमनिशंनौसिवरंदां ॥ १ ॥ सह-
 स्रास्यादीस्त्वभनिखिन जयिनोदैत्यनिकरान् रसाभूदेवादिचिदशमुतपोरऽण्य
 दहनान् ॥ स्फुरद्वोपापांगैःप्रलयजनुदानन्त पटलैः प्रशय्यार्थं तूर्णं ह्यभयमकृ-

याः पाहिवरदे ॥ २ ॥ अयेसेव्येभव्य भविक्रमतिभिर्भावुकवरै स्तपोमूर्तेस्फूते
 विधिहरिहरैर्गीतचरिते ॥ जगद्गाढीन्मायेप्रगतमृगवट्टे विरूपयाविहस्तान्ना
 बद्धांजननिललितेमेचयनिजान् ॥ ३ ॥ विराड्मुखात्कृत्स्निकगिरिशःकारभूदजे
 रमेरोमारूपेसमयगुणते ऽनन्तमहिमे ॥ ध्रुवेऽम्बुज्जिहातोऽस्त्यवसिंरुजसोवख
 मखिलम्भन्नाम्नीधौन्यांस्तरागचरणेचोदुरशिवे ॥ ४ ॥ विपञ्चीनः क्वाणैर्न खल
 सुखदैश्यान्तमुधियेकलेर्मन्दैस्तारैः सरसललितैः कर्भरतये ॥ स्वतत्वंकर्मार्थं
 प्रथितकृपय बोधयसिमौ हरन्तांतीनांतिप्रवितरचमेजानममलम् ॥ ५ ॥ तस
 स्तामिन्द्रादिप्रथितविलसत्यर्बुमुदधन्महासायाराचौ निखिलभयदातामिजनि-
 कास् ॥ अजादिस्तम्बान्ताऽऽवरण करिकांशान्तिहरिकांकृपादृग्भ स्वदुभिहर
 शरणादेपाहगिरिजे ॥ ६ ॥ अयोध्यः न्याः पुर्यः सुगतिमुखालोकपतये फणी-
 न्द्राद्यानागाहिमगिरिमुखः शैलनिकराः ॥ विरट्गंगा मुख्यानिखिलसर्गिता
 ऽमोधिनिचयाः विराट्मुखात्मेगास्त्वतसिनिखिले पाहिवरदे ॥ ७ ॥ निजान-
 न्दानऽन्तोऽसृतसदजचिद ब्रह्मखिपरे जगत्त्रय्यध्यस्ता अजिभुजगवद्विन्य
 भवने ॥ नमोऽरूपेवेद्ये सुगुरुकृपदालव्यधिपशेवरंज्ञानंमह्यं निगमगदितं देहिंसु
 भगे ॥ ८ ॥ वरदिव्यन्तत्वं पठतिथदि देव्यष्टकमिदं मनोवाणीकायाजैतवृजि
 नतोयाव्यघटजम् ॥ परासिद्धिलज्यासद्वहतरसानन्दकरिकां ध्रुवगच्छेदन्ते
 स्वमुखमचलं ब्रह्मपरमम् ॥ ९ ॥ इति श्री विश्वरूपस्वामिकृतं दुर्गाष्टकम् ॥
 कुंडलिया ॥ ताकरब्रह्मानन्दजी स्वामीगौडः सुजान- । तःकोशिष्य सुजान है
 विश्वरूप जग यान ॥ कौन्डो हरि गुण गान सगुणः निगुण सुखदाई । वासु-
 देव द्विज राज ताह महं कौन्ड सहाई ॥ गूथिचरित वरमान उमानार्थाह
 सुख कारक । विश्वनाथ उर माहि समर्पे उ सबजग तारक ॥ १ ॥ उनइस
 शत ऐकतीस वरस हरि गुणरास ॥ २ ॥ सप्रपुरामो विदित चहुं काशेजेच
 प्रधान । स्वामि गौड महाराजके दशाश्वमेधस्थान ॥ ३ ॥ गंगालीर पुनीत
 अति रुचिर घाट सेपान । पांडित वृन्दयतीन्द्र जन वसन मनोहरजान ॥ ४ ॥
 विश्वरूप स्वामी क्रियो रचना ललित ललास । वासुदेव तोहिको क्रमहिवांथि
 रागमहंनम ॥ ५ ॥ इति श्री विश्वरूप स्वामिकृतं हरि हर मगुण निगुण
 पदावली समाप्तम् ॥



नामकितान्त	नामकितान्त	नामकितान्त	नामकितान्त
ब्रजविलास	अमरुतसागर	अमरुतचली	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
ब्रजविलासछोट	वैद्यमनोन्मत्त	स्वयम्भोप	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
राग	ज्योतिष	ज्ञानचालीसी	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
रागप्रवाश	जानकाचन्द्रिका	देहावली	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
लावती	ज्ञानकालिका	वालाबोध	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
भृंगारधनीसी	हेपुत्राभरता	प्रियाधीनीप्रथमपुत्रक	ज्ञानकामरिसारिणी
किस्साबोरह	ज्ञानरत्नेश्वर	कितान्तजन्म	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
नानाधनीसुहृत्तिलकामरिसारिणी	रमलनार	गणितकामरिसारिणी	संस्कृतउर्दूदीयास-
जह्यसार	दुन्दुजान	लीलावती	मनुस्मृति
शिवसिंहसरोज	सुतफरकात	पदचार्यकीपुत्रकामरिसारिणी	विष्णुहासित
भक्तमाल	शानिश्चरकीकथा	संस्कृतकीपुत्रकामरिसारिणी	महिसस्त्र
समाभिषेकनाटक	ज्ञानमाला	लघुकौमुदी	संस्कृतभाषाटी-स-
दुन्दुसभा	गोपीचंद्रभरती	सिद्धान्तचन्द्रिका	अमरकोश
विक्रमविलास	कथाश्रीगंगाजी	अमरकोशकीकौमुदी	पञ्चमहायज्ञ
बैतालपञ्चीसी	अध्यायत्रा	पंचमहायज्ञ	निर्णयसिन्धु
सिंहासनवतीसी	भरतीगीत	निर्णयसिन्धु	संस्कृतशिवगीत
पद्यावतीखण्ड	दानलीलावनामाली	संग्रहशिवगीत	संस्कृतशिवगीत
शुकबहचरी	दोहावलीरत्नावली	भगवद्गीतातटीक	सुयोग्याहसटीक
बकावलीसुमन	गोकर्णसहात्म	विष्णुसामन्त	भविष्योत्तरपुराण
चहारदरवेश	श्रीगोपालसहस्रनाम	भविष्योत्तरपुराण	अपराधभंजनस्तोत्र
किस्सहहातमतादु	कथासत्यनारायणस	अपराधभंजनस्तोत्र	दुर्गास्तोत्र
अपूर्वकथा	हनुमानवाहुक	दुर्गास्तोत्र	कायस्थकुलभास्कर
किस्सागुलसनेवर	जनकपञ्चीसी	कायस्थकुलभास्कर	नद्याहोद
सहस्ररजनीचरित्र	आनन्दाभृतवर्षिणी	नद्याहोद	सद्युगलभा
राविन्सनकावृतिहास	वनयात्रा	ज्योतिष	सुहृत्तिलकामरिसारिणी
वैद्यक	कायस्थवर्णनिराण	सुहृत्तिलकामरिसारिणी	संस्कृत
निघण्टभाषा	विहारविन्द्रावन	सुहृत्तिलकामरिसारिणी	संस्कृत
अमरविनोद	समरविहारविन्द्रावन	सुहृत्तिलकामरिसारिणी	संस्कृत
वैद्यजीवन	कल्पभाष्य	सुहृत्तिलकामरिसारिणी	संस्कृत
श्रीकृष्णसंग्रहकल्पवली	दरशी	सुहृत्तिलकामरिसारिणी	संस्कृत

नामकितान्त	नामकितान्त	नामकितान्त	नामकितान्त
अनुवाद १ भाग	शूलतन्त्र	अष्टाध्याकाण्ड	मज्झिमाज्जाकितान्त
२ भाग	शूलतन्त्र	आरण्यकाण्ड	जजरीकेक २५ भाग
३ भाग	द्विहाततिरिना	निष्कारधीकाण्ड	१० ई ई ई
धात्वार्थ	एक १ भाग	सुन्दरकाण्ड	एक स्ताम्य १ सन्
नारारीकेकी	२ भाग तथा ३ भा	लकायागुड	१० ई ई ई
वर्णमालाकेकी १ भा	सातवधीयद्विहातउत्तरकाण्ड		एक रजिस्टरी २० सन्
तथा २ भाग	अवधदेशीयशूल गुडका		१० ई ई ई
ध्याकेकी प्रारम्भ	हंगिलस्तानका इतिहास १ भाग		एक स्ताम्य कन्याला
नारारीकेकी	द्विहातपत्रिका	२ भाग	त २ ई सन् १० ई ई ई
अध्यास	वाका सृष्ट्या	३ भाग	मज्झिमाज्जाकेक २५
ध्याकेकी शिक्षा १ भा	पद्यसंग्रह	द्विहातगाम्यासुदर्	वध लगान २० सन्
तथा २ भाग	भाषाकाव्यसंग्रह	साव	१० ई ई ई इतहा
रज्ज पुरकी कहानी	कवित्तारत्नाकर १ भा	पशुचिकित्सा	२ ई सन् १० ई ई ई
धर्मासंहका श्रौत	तथा २ भाग	पद्म वस्त्रकेकी	डोरा
शिक्षा चली	संगलकोश	तथा कृषालिपत	एक स्ताम्य दस्ता
पद्यद्विहाती	अंक प्रकाश	रजिस्टर दारिलखा	विज्ञान १० सन्
पद्यदीपिका	गरिगत प्रकाश १ भा	रिज गुलबामदसी	१० ई ई ई सदी
विद्याचक्र	तथा २ भाग	रजिस्टर दारिणीपाठ	एक ताग्रा लखवार
विद्याकर	तथा ३ भाग	ला	न मगलक अवध २४
पदार्थविद्यासार	तथा ४ भाग	कानून	सन् १०३ ई ई
पदार्थ ज्ञान विदप	गरिगत क्रिया	परवारियोंके कायदे	एक चौपायोंका मदा
भोज प्रबंधसार	क्षेत्र प्रकाश	उईकेकी महाजनी	खिलतवेजा १ सन् १०३
रत्न भीति	क्षेत्र चन्द्रिका २ भा	दिकारके लादुसन्त	एक मज्झिमाज्जाकितान्त
शिशु चरेष	सकील दायरा	का एक २ सन् १०३	शौजदारी १० सन् १०३
भावाल्लघुव्याकरण	रेखा गरिगत १ भा	हैलवी	एक माल गुजारी
१ भाग	तथा २ भाग	जागरी	मगर लीव। प्रामाली
तथा २ भाग	जीज गरिगत १ भा	एक लगान मगर ली	१० सन् १०३ ई
भाषा तन्त्र दीपिका	तथा २ भाग	वशिमास्ती १० सन्	तरमीस मज्झिमाज्जावि
भाषा चन्द्रोदय	रामायण तलसी	१० ई ई ई	ता शौजदारी १० सन् १०३
	याल काण्ड	इंडियन पिनल कोर्	

